अषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष 20 वर्ष, अंक 240 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 25 अगस्त 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

स्थायी सुख, शान्ति व निर्भय वातावरण के लिए "क्रियायोग अभ्यास करें" सत्य की अनुभूति में सभी प्रकार के क्लेश हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि क्रियायोग के द्वारा हम सत्य से जुड़ जाते हैं। ज्ञान, शक्ति, शान्ति, आनन्द, नाम-यश, धन आदि के लिए मनुष्य को दर-दर भटकना पड़ता है, और प्राप्त न होने पर मनुष्य में हिंसक प्रवृत्ति प्रकट होती है। क्रियायोग में भक्ति दृढ़ होने पर ज्ञान, शक्ति, शान्ति,आनन्द, धन आदि सब कुछ स्वयं मनुष्य के पास आ जाते हैं।

क्रियायोग प्राचीनतम् एवं नित्य नवीन पूर्ण विज्ञान है। ईश्वरीय नियमों के अनुसार कलिकाल में क्रियायोग का ज्ञान विलुप्त हो गया। आरोही द्वापर युग के आते ही मृत्युंजय अमर गुरु श्री महावतार बाबा जी द्वारा क्रियायोग को पुनर्जीवित कर पुनः परिष्कृत किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में महावतार बाबाजी ने क्रियायोग को लाहिड़ी महाशय जी के माध्यम से मानवजाति को दिया। क्रियायोग ही सनातन धर्म में वर्णित यज्ञ है। क्रियायोग ही वेदपाठ है। क्रियायोग अभ्यास से मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप "अहंब्रह्मास्मि" की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान

प्रयागराज

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

यूपी डिफेंस कॉरिडोर : लखनऊ में बनेगी ब्रह्मोस मिसाइल

15 हजार लोग पाएंगे रोजगार

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी डिफेंस कॉरिडोर के लखनऊ नोड में ब्रह्मोस एरोस्पेस नेक्स्ट जनरेशन ब्रह्मोस मिसाइल बनाएगी। इस परियोजना से लगभग 500 अभियन्ताओं एवं तकनीशियनों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा। इसके अलावा 5,000 लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त होगा। इस रक्षा उद्योग से जुड़ी सहायक इकाइयां भी लगने से लगभग 10,000 लोगों को रोजगार मिलेगा। ब्रह्मोस एरोस्पेस के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं प्रबन्ध निदेशक डॉ. सुधीर कुमार मिश्रा ने मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। उन्होंने मुख्यमंत्री को बताया कि उत्तर प्रदेश डिफेंस इण्डस्ट्रियल कॉरिडोर के तहत लखनऊ में अगले तीन साल में ब्रह्मोस की नेक्स्ट जेनरेशन सौ मिसाइलों के उत्पादन की योजना है। अभी देश में नागपुर और हैदराबाद में इन मिसाइलों का निर्माण हो रहा है। मुख्यमंत्री ने डीआरडीओ रक्षा मंत्रालय की इस पहल का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार इस परियोजना के लिए लखनऊ में आवश्यक भूमि सहित अन्य सभी सुविधाएं उपलब्ध कराएगी। यूपीडा के सीईओ अवनीश अवस्थी ने कहा कि इस महत्वपूर्ण परियोजना के आने से यूपी डिफेंस कॉरिडोर को और बढ़ावा मिलेगा। ब्रह्मोस की नेक्स्ट जेनरेशन मिसाइल के उत्पादन के लिए लगभग 200 एकड़ भूमि की जरूरत होगी। इस परियोजना को पूरा करने में लगभग 300 करोड़ रुपये का निवेश होगा। जमीन उपलब्ध होने के तीन माह के अन्दर सिविल निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा। लखनऊ में ब्रह्मोस मिसाइल का निर्माण होने से उत्तर प्रदेश देश का एरोस्पेस और डिफेंस हब बनने की ओर तेजी से अग्रसर होगा। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में लखनऊ वैश्विक मानचित्र पर स्थापित होगा। ब्रह्मोस मिसाइल के विभिन्न सिस्टम तथा सब-सिस्टम के निर्माण से जुड़ी 200 से अधिक औद्योगिक इकाइयां भी परियोजना के निकट अपनी उत्पादन इकाइयां लगाएंगी।

तो क्या कांग्रेस सरकार महाराष्ट्र बेच रही है? एनएमपी के विरोध पर राहुल का स्मृति पर पलटवार

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार की नेशनल मोनेटाइजेशन प्लान पर राहुल गांधी के बयान के बाद केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने उन पर तंज कसा है। ईरानी ने कहा कि लगता है राहुल गांधी ने वित्तमंत्री की बातों को गौर से नहीं सुना। अगर उन्होंने ध्यान दिया होता तो उन्हें पता होता कि वित्तमंत्री ने स्पष्ट किया है कि देश की एक भी संपत्ति बेची नहीं जाएगी। उन्हें सिर्फ मोनेटाइज किया जाएगा और उनसे देश के खजाने में 6 लाख करोड़ रुपए जुटेंगे। गौरतलब है कि राहुल गांधी ने बयान दिया था कि प्रधानमंत्री देश को बेच रहे हैं। स्मृति ईरानी ने राहुल गांधी को याद दिलाया कि महाराष्ट्र में कांग्रेस सरकार ने मुंबई पुणे एक्सप्रेसवे को मोनेटाइज करके 8000 करोड़ रुपए की रकम जुटाई है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि क्या राहुल गांधी कहेंगे कि महाराष्ट्र सरकार ने एक्सप्रेसवे को बेच दिया है? वह सिर्फ इतने पर ही नहीं रुकीं।

हवा में टकराने से बाल-बाल बचे थे एयर एशिया और इंडिगो के विमान, बस 300 फुट की रह गई थी दूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। एयर एशिया इंडिया की अहमदाबाद-चेन्नई उड़ान और इंडिगो की बेंगलुरु-वडोदरा उड़ान 29 जनवरी को एक दूसरे से टकराने से बाल-बाल बच गए थे। दोनों विमान आठ किलोमीटर के दायरे में आ गए थे। मुंबई हवाई क्षेत्र वे ऊपर उनकी ऊर्ध्वाधार (वर्टिकल) दूरी 300 फुट रह गई थी। विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआईबी) की एक रिपोर्ट में यह जानकारी सामने आई है। इसी महीने जारी जांच रिपोर्ट के अनुसार, इस 'गंभीर चूक' का संभावित कारण हवाई यातायात नियंत्रक का स्थिति से अवगत नहीं होना था। इसमें कहा गया है कि एक अन्य संभावित कारण यह था कि मुंबई हवाई अड्डे पर नियंत्रक द्वारा स्थिति का मूल्यांकन पहले से मन में कोई विचार बनाकर किया गया था।

घटना का जिक्र करते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि अहमदाबाद से दक्षिण भारत जाने वाली ज्यादातर उड़ानें भावनगर के ऊपर से जाती हैं। हालांकि, 29 जनवरी को, एयर एशिया इंडिया की उड़ान उस मार्ग पर थी जिसका उपयोग आमतौर से मुंबई हवाई अड्डे पर उतरने वाले विमानों द्वारा किया जाता है। एयर एशिया इंडिया के विमान द्वारा मार्ग में बदलाव किए जाने और विपरीत दिशा से आने वाली इंडिगो उड़ान के सीधे मार्ग पर होने के कारण यह स्थिति बनी। रिपोर्ट में कहा गया है कि जब पर्याप्त दूरी बनी हुई थी, हवाई यातायात नियंत्रक की स्वचालित प्रणाली ने पूर्वानुमानित चेतावनी जारी की। हालांकि, नियंत्रक ने विजुअल अनुमानित चेतावनी पर गौर नहीं किया। इसमें कहा गया है कि नियंत्रक अपने पिछले अनुभव के कारण यह मान रहा था कि एयर एशिया इंडिया की उड़ान भावनगर के ऊपर अपने सामान्य मार्ग पर है। इसलिए नियंत्रक ने सोचा कि एयर एशिया इंडिया की उड़ान इंडिगो की उड़ान के बहुत करीब नहीं है। जब तक नियंत्रक को स्थिति का एहसास हुआ, तब तक एयर एशिया इंडिया की उड़ान 38,008 फुट की ऊंचाई तक पहुंच गई थी, जबकि इंडिगो की उड़ान 38,000 फुट की ऊंचाई पर उड़ रही थी। एयर एशिया इंडिया की उड़ान और ऊंची होती गई, क्योंकि उसकी ट्रैफिक टकराव बचाव प्रणाली (टीसीएएस) ने पायलटों को चेतावनी जारी की थी। वहीं, इंडिगो की उड़ान 38,000 फुट की ऊंचाई पर ही बनी रही।

जम्मू-कश्मीरः बारामूला में लश्कर के दो आतंकी ढेर, 24 घंटे में पांच को मार गिराया

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में सुरक्षा बलों ने एक मुठभेड़ में मंगलवार को लश्कर-ए-तैयबा के तीन आतंकवादियों को ढेर कर दिया। इसके साथ ही घाटी में बीते 24 घंटे में मारे गए आतंकवादियों की संख्या बढ़कर पांच हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि आतंकवादियों की मौजूदगी की जानकारी मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने सोमवार देर रात सोपोर के पेठसीर में घेराबंदी कर तलाश अभियान शुरू किया था। उन्होंने बताया कि मंगलवार तड़के आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों पर गोलीबारी की जिससे मुठभेड़ शुरू हो गई। अधिकारी ने बताया कि सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में तीन आतंकवादी मारे गए हैं। उन्होंने कहा, मारे गए आतंकवादियों की पहचान फैसल फैयाज, रमीज अहमद गनी (दोनों शोपियां के निवासी) और गुलाम मुस्तफा शेख के रूप में हुई है, जो कुपवाड़ा जिले के टेकीपुरा का निवासी था।

जातीय जनगणना पर बढ़ रही हैं भाजपा की उलझनें

बिहार में बीजेपी नेताओं की ही अलग-अलग राय

नई दिल्ली (एजेंसी)। जातीय जनगणना के मुद्दे पर भाजपा की उलझनें कम होने का नाम नहीं ले रही है। बिहार में उसकी सहयोगी जनता दल (यू) के नेता मुख्यमंत्री नीतीश कुमार इसकी मांग को लेकर कमान संभाले हुए हैं, वहीं राज्य में भाजपा दो फाड़ नजर आ रही है। पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व भी इस पूरे मामले पर चुप है और राजनीतिक लाभ-हानि का अंदाजा लगाया जा रहा है। हालांकि अभी इस मुद्दे पर कांग्रेस समेत कई प्रमुख दल भी चुप्पी साधे हुए हैं। जातिवार जनगणना पर सबसे मुखर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हैं और इस नाते बिहार की राजनीति सबसे ज्यादा गरमाई हुई है। वहां के लगभग सभी दल मन या बेमन से इस मुद्दे के साथ हैं। राजद व जद (यू) समेत कुछ दल खुलकर मांग कर रहे हैं, जबकि भाजपा ने इसे मोदी सरकार पर छोड़ रखा है। भाजपा में भी नेता बंटे हुए हैं। सांसद व पूर्व उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी व मौजूदा उप मुख्यमंत्री तार किशोर सिन्हा इसके समर्थन में हैं, जबकि विधान पार्षद संजय पासवान व हरिभूषण ठाकुर इसके विरोध में नजर आ रहे हैं।

दरअसल अभी कांग्रेस समेत कई अन्य दलों ने भी इस पर चुप्पी साध रखी हैं और वह केंद्र सरकार के रुख का इंतजार कर रहे हैं। तृणमूल कांग्रेस ने भी कहा कि अगर सभी दल इस पर सहमति जताते हैं तो वह भी इसका समर्थन करेगी। हालांकि जातिवार जनगणना से नया पिटारा खुलने की भी आंशका जताई जा रही है। कई राज्यों में अभी विभिन्न जातियों की संख्या को लेकर जो अनुमान है वह गड़बड़ा सकता है। कर्नाटक में वोक्कालिगा को लेकर भी असमंजस है। अभी अनुमान है कि उनकी संख्या 12 से 15 फीसदी होगी, लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि यह आठ से दस फीसदी ही है। सूत्रों के अनुसार भाजपा नेतृत्व मोटे तौर पर इसके खिलाफ नहीं है, लेकिन इसके भावी परिणामों को लेकर वह सतर्क जरूर है। इस मुद्दे को गरमाने के पीछे के राजनीतिक उद्देश्य भी पहचाने जा रहे हैं। सभी दलों से मांग उठने के बाद सरकार भी इस बारे में आगे बढ़ सकती है। केवल कुछ दलों की राजनीति को लेकर फैसला होने की उम्मीद नहीं है।

यूपी में सरकारी कर्मचारियों और पेंशनरों के लिए खुशखबरी

योगी सरकार ने बढ़ाया डीए-डीआर

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी के सरकारी कर्मचारियों और पेंशनरों के लिए खुशखबरी आ गई। बढ़ी दर से महंगाई भत्ता व महंगाई राहत पाने का इंतजार मंगलवार की शाम समाप्त हो गया। राज्य सरकार ने महंगाई भत्ता व महंगाई राहत 11 फीसदी बढ़ी दर से देने का शासनादेश योगी सरकार ने जारी कर दिया है। इस आदेश के साथ ही महंगाई भत्ता अब 28 फीसदी मिलना तय हो गया है। करीब 16 लाख राज्य कर्मचारियों व शिक्षकों को बढ़ी दर से महंगाई भत्ते का लाभ मिलेगा। वहीं 12 लाख पेंशनर्स को भी बढ़ी दर से महंगाई राहत मिलेगी। वित्त विभाग की अपर मुख्य सचिव एस. राधा चौहान ने महंगाई भत्ता व महंगाई राहत बढ़े दर से एक जुलाई 2021 से दिए जाने का शासनादेश जारी किया है। शासनादेश के मुताबिक कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में 11 फीसदी की वृद्धि की गई है। अभी तक कर्मचारी 17 फीसदी महंगाई भत्ता पाते थे इस वृद्धि के बाद उन्हें 28 फीसदी की दर से महंगाई भत्ता मिलेगा। राज्य कर्मचारी, सहायता प्राप्त शिक्षण एवं प्राविधिक शिक्षण संस्थाओं, शहरी स्थानीय निकायों के नियमित व पूर्णकालिक कर्मचारी, कार्य प्रभारित कर्मचारी, यूजीसी वेतनमानों में कार्यरत पदधारक को इसका लाभ मिलेगा। जुलाई माह का एरियर कर्मचारियों को नहीं मिलेगा। यह धनराशि कर्मचारियों के भविष्य निधि खाते में जमा की जाएगी। कर्मचारी 31 जुलाई 2022 से पूर्व इस धनराशि को खाते से नहीं निकाल सकेंगे। महंगाई भत्ते की वृद्धि का नगद लाभ एक अगस्त से कर्मचारियों को मिलेगा। सितंबर माह में मिलने वाले वेतन में महंगाई भत्ते की दर 28 फीसदी हो जाएगी। राष्ट्रीय पेंशन स्कीम से आच्छादित कर्मचारियों को देय महंगाई भत्ते की एक जुलाई से 31 जुलाई 2021 तक की अवशेष राशि की 10 फीसदी रकम टियर-एक पेंशन खाते में जमा की जाएगी।

अफगानिस्तान में तालिबान का असर, सड़कों से गायब होती जा रही महिलाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीवी स्क्रीन, विश्वविद्यालयों से लेकर राष्ट्रीय संसद तक अफगान महिलाओं ने अपनी आवाज सुनाने और अपने चेहरे को दिखाने के लिए संघर्ष करते हुए दो दशक बिताए। लेकिन कुछ ही दिनों में वे जनता की नजरों से ओझल होती नजर आ रही हैं। 15 अगस्त को अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद अधिकार संगठन और सहायता संगठन अपनी वेबसाइट से महिला लाभार्थियों, कर्मचारियों और अन्य स्थानीय महिलाओं की तस्वीरें हटा रहे हैं। एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र महिला निदेशक मोहम्मद नसीरी कहते हैं, ठहमारी सर्वोच्च प्राथमिकता सुरक्षा सुनिश्चित करनी है और उसमें हमारी टीमों की सुरक्षा भी शामिल है। उन महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा जिनके साथ हम काम कर रहे हैं।

नारायण राणे को बड़ी राहतः पहले न्यायिक हिरासत, फिर मिली जमानत, उद्धव ठाकरे पर किया था कमेंट

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे पर टिप्पणी को लेकर केंद्रीय मंत्री नारायण राणे को देर रात जमानत मिल गई। उन्हें गिरफ्तार करने के बाद रायगढ़ के महाड में मजिस्ट्रेट कोर्ट में पेश किया गया था। जज ने उन्हें न्यायिक हिरासत में भेजे जाने का आदेश दिया था। इसके बाद राणे के वकीलों ने तुरंत जमानत अर्जी दाखिल कर दी। नारायण राणे के वकीलों ने उनके स्वास्थ्य का हवाला देते हुए जमानत की अपील की थी, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया। कोर्ट ने उन्हें 15000 रुपए के निजी मुचलके पर रिहा कर दिया। दिन में गिरफ्तारी के बाद नारायण राणे को रिमांड के लिए महाड मजिस्ट्रेट कोर्ट में ले जाया गया था। यहां पर मजिस्ट्रेट बाबासाहेब शेख पाटिल की बेंच में राणे की पेशी हुई। इस दौरान एडवोकेट अनिकेत उज्जवल निकम और एडवोकेट भाऊ सालुंके नारायण राणे ने मजिस्ट्रेट के सामने नारायण राणे का पक्ष रखा। मामले की सुनवाई के दौरान नारायण राणे के बेटे विधायक नितेश राणे और नारायण राणे की पत्नी नीलिमा भी कोर्ट में मौजूद थीं। कोर्ट ने पहले उन्हें न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश दिया था। लेकिन नारायण राणे के वकील ने तुरंत जमानत की अर्जी दाखिल कर दी। इसके बाद कोर्ट की ओर से उन्हें जमानत दे दी गई। इससे पूर्व प्रोटोकॉल के अनुसार राज्यसभा सभापति कार्यालय को नारायण राणे की गिरफ्तारी की आधिकारिक सूचना दे दी गई थी।केंद्रीय मंत्री राणे ने रायगढ़ जिले में सोमवार को जन आशीर्वाद यात्रा के दौरान कथित तौर पर कहा, 'यह शर्मनाक है कि मुख्यमंत्री को यह नहीं पता कि आजादी को कितने साल हो गए हैं। भाषण के दौरान वह पीछे मुड़ कर इस बारे में पूछते नजर आए थे। अगर मैं वहां होता तो उन्हें एक जोरदार थप्पड़ मारता।' राणे ने दावा किया कि 15 अगस्त को जनता को संबोधित करते समय ठाकरे यह भूल गए थे कि आजादी को कितने साल पूरे हो गए हैं। उन्होंने कहा कि भाषण के बीच में वह अपने सहयोगियों से पूछ रहे थे कि स्वतंत्रता दिवस को कितने साल हुए हैं। गौरतलब है कि उनके खिलाफ अलग-अलग थानों में चार एफआईआर हुई है।

खबर संक्षेप

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ की बैठक आज

करछना। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ (वित्तविहीन गुट) प्रयागराज की आकस्मिक बैठक बुधवार 25 अगस्त को चंद्रशेखर आजाद पार्क में समय 11 बजे पूर्वाह्न आहूत की गई है। उक्त आशय की जानकारी संघ के जिलाध्यक्ष ननकेश बाबू ने देते हुए बताया कि प्रदेश अध्यक्ष/ शिक्षक विधायक मा. लाल बिहारी यादव के निर्देश पर बुलाई गई महत्वपूर्ण बैठक में मानदेय, सेवा नियमावली, मान्यता की धारा में परिवर्तन, कोरोना काल में वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के साथ क्रूर मजाक तथा बोर्ड परीक्षा 2021 में परीक्षार्थियों के जीवन के साथ खुला अन्याय जैसे ज्वलंत मुद्दों पर गहन चर्चा होगी। संघ के पदाधिकारियों अभयराज सिंह मण्डल अध्यक्ष, नवीन शुक्ला, गुलाब सिंह, फूलचंद कन्नौजिया, सीताशरण सिंह, बुधराम यादव, गोविन्द प्रसाद भूर्तिया, मान सिंह पटेल, अमर बहादुर सिंह, जे. पी. यादव आदि ने बैठक में समय पर उपस्थित होकर सफल बनाने की जनपद के समस्त शिक्षकों से अपील की है।

ट्रक की चपेट में आने से एक युवक की मौत दूसरा गंभीर

अखंड भारत संदेश

उतरांव। फूलपुर थाना क्षेत्र के गुलचपा गांव में ट्रक की चपेट में आने से एक प्रतियोगी छात्र की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं एक गंभीर रूप से घायल हो गया। ट्रक चालक टक्कर मारने के बाद ट्रक लेकर फरार हो गया। स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी जिस पर पुलिस ने घायल को निजी अस्पताल में भर्ती कराया हैं। उसकी हालत नाजुक बनी हैं। छबिलहा का निवासी गणेश 25 पुत्र रूरी और भवानीपुर निवासी अपने साथी चन्द सेखर यादव पुत्र राम सिंह के साथ सुबह पेट की परीक्षा देने के लिए प्रतापगढ़ जा रहा था। जैसे ही वह लगभग सवा पांच बजे सुबह फूलपुर थाना क्षेत्र के गुलचपा गांव स्थित एक इंटर कालेज के पास पहुंचा था कि तेज रफ्तार अनियंत्रित ट्रक जो फूलपुर की तरफ से आ रही थी ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे दोनों युवक सड़क पर गिर गए जिनको ट्रक रौंदती हुई चली गई जिससे चंद शेखर की मौके पर ही मौत हो गई वही

ट्रक की चपेट में आया युवक

उसका साथी गणेश गंभीर रूप से घायल हो गया । तेज आवाज सुन स्थानीय लोगों ने मौके पर पहुंचे वहीं तो पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने घायल गणेश को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस शव को कब्जे में लेकर जानकारी लेकर चंद्र शेखर के घर सूचना दी। सूचना सुनते ही घर में कोहराम मच गया ।नात रिश्तेदार भी घटना को सुन मौके पर पहुंच गए। घायल गणेश के घर भी सूचना मिली तो उसके घर भी कोहराम मच गया। मृतक चल शेखर दो भाई और एक बहन हैं। घटना के बाद बहन और भाई तथा माता-पिता का रो रो कर बुरा हाल हो गया है।

प्रयागराज-मिर्जापुर रोड पचदेवरा के समीप डिवाइडर से टकराई कार, हफ्तेभर में हुई कई घटनाएं

करछना। थाना क्षेत्र के प्रयागराज मिजार्पुर मार्ग पर पचदेवरा के समीप डिवाइडर पर लगातार दुर्घटना ग्रस्त हो रही चार पहिया वाहन और ट्रक हफ्तेभर में लगातार आधा दर्जन चार पहिया रात के अंधेरे में डिवाइडर टकरा जाते है। जिसके चलते लोग गम्भीर रूप से घायल हो रहे हैं लगातार एक्सीडेंट से डिवाइडर के आस पास रहने वाले लोगो में दहशत का माहौल बना हुआ है। सोमवार रात दुर्घटना के बाद जानकारी थाना प्रभारी राकेश सिंह को दी गई मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलो को अस्पताल और छतिग्रस्त वाहन को किनारे लगवाया। दुसरे दिन शाम होते ही फिर एक एक्सीडेंट लगातार कई दिनों से दुर्घटना से लोग परेशान होकर शिकायत थाना प्रभारी राकेश सिंह से की जिसके बाद थाना प्रभारी ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए विभाग के अधिकारियों से बातचीत की और कहा कि डिवाइडर के समीप रिफ्लेक्टर लगाए नहीं तो जानबूझ कर की जा लापरवाही के चलते जनहित में सड़क विभाग के कर्मचारियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने पर बाध्य होंगे। जिसके बाद हाईवे के कर्मचारियों ने डिवाइडर पर रिफ्लेक्टर लगा दिया गया है जिससे अब लोग राहत की सांस ली।

पंचायत कर भारतीय किसान यूनियन ने की नारेबाजी

जंघई। भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय सचिव सुरेश यादव व मंडल अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष राजनाथ यादव किसान भाइयों के साथ पंचायत कर पांच सितंबर को मुजफ्फरनगर महा आंदोलन में शामिल होने के लिए चर्चा की और सभी किसान भाइयों को इस महा आंदोलन में शामिल होने की अपील की और अपनी मांगों को लेकर सरकार के खिलाफ की नारेबाजी ।मंगलवार को भारतीय किसान यूनियन के जिलाध्यक्ष राजनाथ यादव अपने सैकड़ों किसान भाइयों के साथ जंघई रेलवे फाटक पर पंचायत कर पांच सितंबर को मुजफ्फरनगर महा आंदोलन में शामिल होने की चर्चा करते हुए सरकार के खिलाफ की नारेबाजी भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय सचिव ने कहा कि तीनों कृषि विल वापस लिए जाएं न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानून के दायरे में लाया जाए डॉक्टर स्वामीनाथन की रिपोर्ट को शीघ्र लागू की जा उत्पाद लागत में 50 परसेंट छोड़कर किसानों को फसलों का लाभकारी दूना मूल्य दिया जाए और डीजल का बढ़ता हुआ मूल्य दर घटाकर महंगाई पर रोक लगाई जाए अगर ऐसा नहीं हुआ तो भारतीय किसान यूनियन आने वाले समय में महाआंदोलन करेगी ।इस मौके पर भारतीय किसान यूनियन के मंडल अध्यक्ष जितेंद्र कुमार, किरन तिवारी खलील, सविता पटेल, भारतीय किसान यूनियन के जिला महासचिव धर्मराज पटेल, गंग जली निशा, मीरा नूतन, निर्मला, राजेंद कुमार सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

गौवंश स्थल करेहा का एडीओ ने किया निरीक्षण, जल जमाव को कराया दूर

मशीन से निकलवाया पानी, चिकित्सकों ने मवेशियों का किया स्वास्थ्य परीक्षण

गौवंश स्थल में जल जमाव को सुविधा बहाल करते ब्लाक कर्मी

करछना। विकास खंड करछना के अंतर्गत करेहा में गौवंश स्थल पर बरसात व नहर का पानी भर जाने से बड़ी संख्या में गौवंशो को पानी मुसीबत बन गया था, जिसकी सूचना पाकर विकास खंड करछना के एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा ने ब्लाक कर्मियों को लेकर मंगल वार को करेहा गांव में बनें गौशाला का निरीक्षण किया जहां पर गौवंश स्थल के चारों तरफ पानी भर जाने से वहाँ मवेशियों को रखरखाव में दिक्कतें पैदा हो गयी थी, यहा तक कि बारिश और नहर के पानी से घिर चुके गौशाला के चारों तरफ मेड बंदी करा कर, एकत्रित पानी के जमाव को मशीन लगवा कर पानी को बाहर निकाला गया, तब जाकर लोग गौशाला तक पहुचने का रास्ता साफ हो सका ।इस कार्य में बड़ी संख्या में गांव के लोगों ने मदद् किया, तब जाकर पानी के जमाव से चारों तरफ घिर चुके मवेशियों को रखरखाव में सुविधा बहाल हो सकी।

चलाये जा रहे अभियान में दो वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

पुलिस की गिरफ्त में वांछित

नारीबारी। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी पुलिस अधीक्षक यमुनापार सौरभ दीक्षित के निर्देश में क्षेत्राधिकारी बारा की देखरेख में थानाध्यक्ष कौंधियारा प्रिंस दीक्षित व उनके हमराहियों के कुशल नेतृत्व में अपराध और अपराधियों पर लगाम लगाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत दो वांछित अभियुक्त अरुण कुमार यादव पुत्र लाल जी यादव उम्र करीब 35 वर्ष, विजय कुमार यादव पुत्र विजय शंकर यादव उम्र करीब 40 वर्ष निवासीगण ग्राम टिकरी थाना कौंधियारा को गिरफ्तार कर लिया गया जिसके खिलाफ धारा 151/107/116 के तहत विधिक कार्यवाही करते हुए जेल भेज दिया गया गिरफ्तारी टीम में उपनिरीक्षक अंकुश कुमार, हेड कॉन्स्टेबल फकरुद्दीन, कॉन्स्टेबल सनोज कुमार सम्मिलित रहें।

बारा विद्यालय एसोसिएशन की बैठक सम्पन्न

शंकरगढ़, प्रयागराज। मंगलवार को पत्ती देवी इंटर कॉलेज शंकरगढ़ में कई विद्यालयों के प्रधानाचार्य और प्रबंधकों की बैठक हुई ।जिसमें कोरोना काल में बंद विद्यालयों की फीस अभिभावकों द्वारा ना देना, कुछ विद्यालयों द्वारा फर्जी तरीके से टी सी बना कर देना आदि विषयों पर चर्चा हुई ।जिसमें निर्णय हुआ विद्यालय बिना टी सी के किसी का भी प्रवेश नहीं लेंगे और जो फर्जी टी सी देगा उसके खिलाफ कठोर कदम उठाएंगे। सभी हिंदी और इंग्लिश मीडियम के विद्यालय एक दूसरे से शुल्क की तुलना करके शुल्क में एकरूपता रखेंगे। बैठक में एक स्वर से विद्यालय की अन्य समस्याओं के विषय बिंदुवार चर्चा हुई ।बैठक में नवोदित शिक्षा केंद्र इंटर व कैंब्रिज इंटर कॉलेज के प्रबंधक व एसोसिएशन के अध्यक्ष संतोष त्रिपाठी , पत्ती देवी इंटर कालेज के प्रबंधक तेजबली सिंह, केदारनाथ विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य देवराज यादव ,आरसी त्रिपाठी विद्यालयके प्रबंधक त्रिवेणी प्रसाद,चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल के अनुज मिश्रा, नरेश इंटर स्कूल के प्रधानाचार्य सरोज त्रिपाठी, जगतबहादुर इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य सुरेंद्र सिंह ,राधाकृष्णन विद्यालय के प्रबंधक रामगोपाल पाल आदि मौजूद रहे।

करछना तहसील पर कांग्रेसिओ ने किया प्रदर्शन, सौपा ज्ञापन

करछना। पांच सूत्रीय मांगों को लेकर करछना तहसील पर कांग्रेसियो ने प्रदर्शन करते हुए ज्ञापन सौपा कांग्रेस के प्रदेश महासचिव जितेंद्र तिवारी के नेतृत्व में करछना तहसील पर जमकर प्रदर्शन किया गया और 5 बड़ी जन समस्याओं को लेकर ज्ञापन सौंपा गया। जिसमें बाढ़ पीड़ित गांवों के किसानों का जल्द से जल्द फसल मुआवजा मिले बाढ़ में आपदा में जो घर गिर गए हैं उनको आवास मिले, हर न्याय पंचायत पर पशुबाड़ा बनाए जाएं बिजली की अघोषित कटौती बंद हो जर्जर तार बदले जाएं वह ट्रांसफार्मर दुरुस्त किए जाएं उक्त मांगों को लेकर एसडीएम को ज्ञापन दिया सौपते हुए कार्यकर्ताओ ने कहा कि सप्ताहभर के अदर समस्याओ का समाधान नही किया गया तो कार्यकर्ता अनशन को बाध्य होंगे। इस मौके पर दिनेश सोनी,आरपीपांडे, जीशान अहमद, प्रांजल केसरवानी धीरेंद्र पांडे, आयुष मिश्रा, शहजाद उल हक, अभिषेक शुक्ला देवा आलोक शुक्ला इंद्रकांत शुक्ला, बंटू यादव, सलमान नरेंद्र आदिवासी नरेंद्र यादव, सरफराज, राजू यादव समेत दर्जनो लोग मौजूद रहे।

बंद मकान का ताला तोड़कर हजारों की चोरी

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़,प्रयागराज। बेखौफ चोरों ने दरवाजे में लगा ताला तोड़कर नकदी के साथ हजारों रुपये के जेवरात पर हाथ साफ कर दिया। इस वारदात की जानकारी लोगों को सुबह हुई। इसके बाद पुलिस को घटना से अवगत कराया गया। यह घटना शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के रानीगंज मोहल्ले की है।

मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य विभाग में नौकरी कर रहे रीवां जिले के चौखड़ा गांव निवासी राकेश सिंह रानीगंज (शंकरगढ़) में किराए के मकान में रहते हैं और बगल में जमीन लेकर अपना मकान बनवा रहे हैं। इस समय उनका मकान बनकर काफी हद तक तैयार हो गया है। जिससे घर के ज्यादातर लोग अपने निजी घर में रहने लगे थे। जबकि काफी सामान किराए वाले बगल के मकान में ही रखा था।

बताया जाता है कि बीती रात चोरों ने किराए वाले मकान के दरवाजे में लगे ताले को तोड़कर घर के अंदर प्रवेश किया और जेवरात व नकदी

चोरी की बढ़ती घटनाओं से कस्बा वासियों में दहशत

चोरी के बाद घर में बिखरा पड़ा सामान

उठा ले गए। सुबह राकेश सिंह को जानकारी हुई, जब वह अंदर गये तो कमरों में सारा सामान बिखरा हुआ पड़ा था। राकेश ने अपनी पत्नी और बच्चों को बुलाकर जब छानबीन शुरू की तो पता चला पत्नी की बैग में रखा 7000 नगद, सोने की चेन, अंगूठी, झुमका तथा चांदी की पायल व बिछिया चोर उठा ले गए। राकेश सिंह ने इसकी सूचना शंकरगढ़ थाने में दी तो वहां से पुलिस ने मौके पर आकर छानबीन की।क्षेत्र में लगातार हो रही चोरी की घटना से लोगों में दहशत का माहौल है। लोगों का आरोप है की शंकरगढ़ पुलिस हमेशा धन वसूली में लगी रहती है। आज तक जितनी भी चोरियां हुई हैं, एक का भी शंकरगढ़ पुलिस खुलासा नहीं कर पाई है।

करछना के चनैनी प्राथमिक विद्यालय में चोरों ने पंखा व स्टेशनरी समान उड़ाया

अखंड भारत संदेस

करछना। थाना क्षेत्र के कुछ दूरी पर स्थित प्राथमिक विद्यालय चनैनी में बीती रात अज्ञात चोरों ने स्कूल के गेट का ताला तोड़ कर कमरे में घूम गयें और बड़े इत्मीनान से दो कमरे में लगा सीलिंग फैन और स्कूल के कमरे में रख्खी अलमारी का ।लॉक काट कर उसमें रक्खा जरूरी कागजात तथा स्टेशनरी उठा ले गये, सुबह जानकारी होने पर गांव के प्रधान धीतेश तिवारी ने स्कूल की प्राचार्य को सूचना दी , चोरी की घटना की अज्ञात चोरी के खिलाफ करछना थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई गई है।

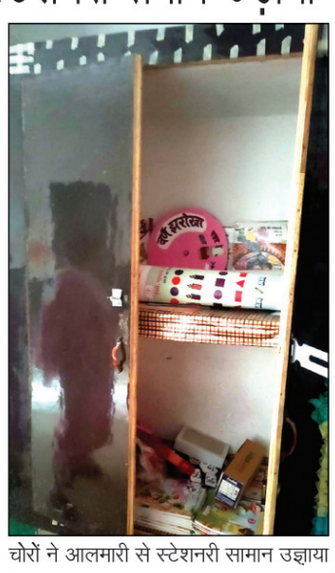

चोरों ने आलमारी से स्टेशनरी सामान उड़ाया

शिक्षा से ही व्यक्ति महान बन सकता है: अभिषेक सिंह पटेल

छात्रों को निःशुल्क कापी किताब वितरण करते अभिषेक सिंह पटेल

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। शिक्षा मानव के लिए ऐसा अस्त्र हैं जिसके बल पर व्यक्ति बड़ी से बड़ी उपलब्धि हासिल करके समाज, परिवार एवम राष्ट्र को गौरवान्वित कर सकता हैं। इसलिए एक जून की रोटी भले ही कम खाये लेकिन हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य हैं कि बच्चों की शिक्षित अवश्य करें। उक्त बातें युवा समाजसेवीं एवम इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शोधार्थी छात्र अभिषेक सिंह पटेल नें मंगलवार को गौहनिया क्षेत्र के दसई बंधवा गाँव मे बच्चों को निःशुल्क कापी, किताब एवम कलम भेंट करने के दौरान व्यक्त किये। इस अवसर पर उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा ही अनेकों कुरुतियों का खात्मा कर सकती हैं। इसलिए अधिक से अधिक मात्रा मे बच्चे शिक्षित हों इसके लिए समाज के प्रतिष्ठित लोगों सहित स्वयंसेवी संस्थाओं को आगे आना होगा। साथ ही पटेल नें दहेज प्रथा, नशा इत्यादि सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने हेतु अपने अनुभवो को साझा करते हुए यह भी स्वीकार किये कि शिक्षा के अभाव मे ही इन सामाजिक कुरुतियों को बल मिल रहा हैं। इसलिए इनको खत्म करने के लिए शिक्षा सबसे अहम हथियार हैं। पटेल नें अपने सम्बोधन के अंत मे वृक्षारोपण एवम जल संरक्षण इत्यादि सामाजिक विषयों पर भी बच्चों को जागरूक किये।उक्त अवसर पर शिवम मौर्या, करम चंद्र, गुरुदयाल, अविरल, अंकिता, संध्या, जानवी, प्रिया, श्वेता समेत 51छात्र -छात्राओं को पुस्तक, पेन, कापी इत्यादि भेंट किया गया।

छह माह बाद विद्यालय खुलने से बच्चों में रहा उत्साह

विद्यालय में पठन-पाठन करते विद्यार्थी।

सहसों। कोरोना संक्रमण काल में सभी विद्यालय बंद कर दिए गए थे। गत 20 मार्च को संक्रमण से बचाव के लिए विद्यालय बंद कर दिए गए थे। लगभग 6 माह बाद 24 अगस्त को पुनः विद्यालय खुलने से बच्चों में उत्साह रहा। वहीं पर कोरोनावायरस के बचाव के विभिन्न आयामों को शिक्षक शिक्षिकाओं ने बताते हुए अभिभावकों तथा बच्चों को जागरूक किया। उच्च प्राथमिक विद्यालय सहसों के संविलियन इंचार्ज प्रधानाध्यापक विनोद कुमार पांडे ने बताया कि महीनों बाद विद्यालय खुलने से बच्चों में उत्साह रहा। इस दौरान बच्चों के साथ आए अभिभावकों को भी कोरोना संक्रमण एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। उन्होंने बताया कि मंगलवार को सभी शिक्षक शिक्षिकाएं समय से विद्यालय में उपस्थित हुई। तत्पश्चात बच्चों का अभिभावक के साथ आना प्रारंभ हो गया। यदि पंजीकरण के विद्यालयों में उपस्थिति फिर भी उपस्थित छात्र छात्राओं को विद्यालय में प्रवेश के साथ उन्हें कोरोनावायरस बचाव के लिए विभिन्न प्रकार के सरकार द्वारा जारी की गई गाइडलाइन से अवगत कराते हुए जागरूक किया गया। तथा शिक्षण कार्य भी हुआ।

निःशुल्क कापी बैग एवम सोलर वितरण 3 सितंबर को

घूरपुर। कल्याणी फाउंडेशन के नेतृत्व मे करछना क्षेत्र के भस्मा अरई मे 51छात्र एवम छात्राओ को निःशुल्क कापी, किताब एवम बैग का वितरण किया जाएगा इस आशय की जानकारी देते हुए संस्थान की सदस्या एवम कार्यकारिणी अधिकारी डा अनु वर्मा नें यह भी जानकारी प्रदान करते हुए यह भी बोली की उसी दिन ग्रामीणों मे सोलर के साथ निःशुल्क मेडिकल कैम्प लगाकर लोगों मे दवाईया भी वितरित की जायेगी साथ ही श्रीमती वर्मा नें यह भी जानकारी प्रदान की कि विश्व अध्यापक दिवस के शुभअवसर पर 11मेधावी विद्यार्थियों को खेक्सा स्थित जूनियर हाई स्कूल मे लैपटाप भी वितरित किया जाएगा। डा नेहा वर्मा, डा अनु वर्मा, डा मोना त्रिपाठी इत्यादि महिला चिकित्सको के माध्यम से अब तक यमुनापार मे लगभग 150से अधिक लोगों को सोलर वितरित किया जा चुका हैं।

बेटे को रेलवे में नौकरी दिलवाने के नाम पर ठगी

अस्पताल संचालक से चार लाख वसूला, केस दर्ज

मांडाखास, प्रयागराज। बेटे को रेलवे में नौकरी दिलवाने के नाम पर एक प्राइवेट अस्पताल संचालक से चार लाख रुपए धोखाधड़ी करके एक व्यक्ति ने ले लिया। नौकरी न मिलने पर जब अस्पताल संचालक ने रुपए की मांग की, तो गाली देते हुये जान से मारने की धमकी दी। तहरीर पर आरोपी के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्जकर पुलिस मामले की जांच कर रही है। मांडा क्षेत्र के प्रयागराज-मिजार्पुर राजमार्ग पर धरांवनारा गांव में स्थित अंजनी अस्पताल के संचालक गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव से उनके बेटे को रेलवे में नौकरी देने के नाम पर संतरबिदास नगर जनपद के ज्ञानपुर कोतवाली अन्तर्गत छोटाडीह जिला परिसद के पास रहने वाले विवेक रंजन श्रीवास्तव ने पांच लाख रुपए की मांग की। अस्पताल संचालक गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव ने चार लाख रुपए सालभर पहले दे दिया और एक लाख रुपए नियुक्ति के बाद देने की बात तय हुई। सालभर नौकरी न मिलने पर जब अस्पताल संचालक ने अपने चार लाख रुपए वापस मांगे, तो आरोपी विवेक रंजन ने गालियां देते हुये जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित के तहरीर पर आरोपी के खिलाफ धोखाधड़ी, अमानत में खयानत, गाली-गलौच व जान से मारने की धमकी का मुकदमा दर्जकर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

माण्डारोड उपकेंद्र में पहुँचे कामर्शियल डारेक्टर जेई व एसडीओ को लगाई फटकार

अखण्ड भारत सन्देश

मांडाखास। प्रयागराज रविवार भोर से ही मांडा क्षेत्र में रक्षाबंधन के दिन गायब बिजली की कुछ लोगों ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर भी शिकायत की। सीएम पोर्टल पर शिकायत का असर यह रहा कि बिजली विभाग के कामर्शियल डायरेक्टर ओपी दीक्षित, एक्सीएन संजय गुप्ता, एसडीओ विनय सिंह, ईई मीटर बृजराज यादव, एई मीटर विमल यादव आदि रविवार देर सायं मांडारोड पावर हाउस पर पहुंचे। कामर्शियल डायरेक्टर ओपी दीक्षित ने एक्सीएन, एसडीओ तथा मांडारोड विद्युत उपकेन्द्र के जेई धीरज बंसल को लापरवाही के लिये कड़ी फटकार

लगायी। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि कुछ दिन पूर्व कनेवरा गांव में लटकते विद्युत तार से हुई युवक की मौत बड़ी लापरवाही है। शीघ्र ही पूरे कनेवरा गांव के विद्युत तार नये किये जायें। साथ ही नहवाई बाजार के 100 केवीए के ट्रांसफॉर्मर का क्षमता बढ़ाकर 250 केवीए कराया जाय। कामर्शियल डायरेक्टर ने स्थानीय जेई व एसडीओ सहित सभी कर्मचारियों को कड़ी फटकार लगायी। फटकार के बाद रात आठ बजे से उपकेन्द्र के आठ फीडर में पांच फीडर की बिजली बहाल हो पायी। उमापुरकला, महेवाकला व बामपुर फीडर की बिजली रविवार रात भी गायब रही। मांडारोड उपकेन्द्र में आठ व पांच एमबीए के दो बड़े ट्रांसफॉर्मर से बिजली की आपूर्ति होती है। 5 एमबीए का ट्रांसफॉर्मर रविवार भोर से ही खराब हो गया है। तीन दिन में कामर्शियल डायरेक्टर ने पांच एमबीए का ट्रांसफॉर्मर भी बदलवाने का आश्वासन दिया है।

बारिश मे कच्चा मकान गिरा गृहस्थी का सामान नष्ट

जंघई। प्रतापपुर क्षेत्र के चनेथू डीह गाँव निवासी मालिक पांडेय जो कि किसानी करके अपने परिवार का जीवकोपार्जन करते है।बारिश के कारण उनका कच्चा खपरैल में गिर गया है उसमें रखा गृहस्थी का सामान भी नष्ट हो गया।मालिक पांडेय ने बताया कि अनाज, चारपाई, गृहस्थी का सामान, भूंसा आदि रखा था सब नष्ट हो गया है प्रशासन से मदद की गुहार लगाई है।

आपात्रों को दिया जा रहा पीएम आवास योजना का लाभ, पात्र वंचित

आदेशों को दर किनार करते सरकारी कर्मचारी व प्रधान प्रतिनिधि मांग रहे गरीबों से कमीशन

अखेंड भारत संदेश

सिरसा/मेजा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र विकास खंड उरूवा सरकार भले ही गांव के विकास के लिए पानी की तरह पैसा बहा रही हो लेकिन कहीं न कहीं अधिकारी और कर्मचारी एवं अन्य जिम्मेदार लोग की मनमानी के कारण सरकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंद लोगों को नहीं मिल पा रहा है। गरीबी रेखा के अंतर्गत आने वाले परिवार को पीएम आवास योजना का लाभ नहीं मिल रहा है।जानकारी के अनुसार ग्राम वासियों ने बताया कि बरसों से जो गरीब परिवार निवास कर रहे हैं जो कच्चे मकान में रहा रह रहे हैं। कुछ गरीब परिवार ऐसे भी हैं जिनके सर पर छत नहीं है बारिश का दर्द अलग से झेल रहे हैं। पात्र होने के बावजूद भी इन गरीब परिवारों को पीएम आवास योजना का लाभ नहीं मिल रहा है। कहि किसी तरह पत्र गरीब को सरकारी आवास मिल भी गया तो उस गरीब से 15 हजार से 20 हजार मांगा जाता हैं।उस गरीब

प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत बना मकान

व्यक्ति से कही आवास को गलत मापन के नाम से तो कही कोई कमी दिखाकर डरा के वसूली किया जाता हैं। ब्लाक उरुवा हो या ब्लाक मेजा हो यही विकट समस्या बनती जा रही हैं।किए बड़े अधिकारी से जांच कराया जाय तो सच सामने आएगा और भ्रष्टाचार सामने आ जायेगा। पत्र लोग पंचायत और खंड विकास अधिकारी कार्यालय का चक्कर काट-काट कर परेशान हो गए हैं। लेकिन उ है न्याय आज तक नही मिल पाया।बताते चले कि ब्लॉक उरूवा प्रमुख प्रतिनिधि पप्पू गौतम को ग्रामवासियो ने लिखित शिकायत दिये। ग्राम वासियों में हो रहे प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों से कुछ प्रधानों और दलालों द्वारा धन उगाई की लिखित सूचना दिया गया। जिस पर प्रमुख प्रतिनिधि पप्पू गौतम ने तत्काल रूप से कार्रवाई करते हुए। उन्होंने आरोपी प्रधानों एवं सेक्रेटरी को लताड़ लगाई एवं कई लाभार्थियों का पैसा वापस कराया उन्होंने ने कहा कि उरूवा विकासखंड से संबंधित यदि कोई कर्मचारी अथवा प्रतिनिधि योजना के एवज में धन की मांग करते तो मुझे सूचित करें मैं जरूर कार्रवाई करूंगा मेरे रहने उरूवा ब्लॉक में भ्रष्टाचार बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा आपका हक आपको मिलेगा मैं आपके साथ हूँ।

खबर संक्षेप

अज्ञात कारणों से विवाहिता ने लगाई फांसी, मौत

हंडिया। सोमवार को देर शाम हंडिया थाना क्षेत्र के ग्राम सभा मवैया में एक विवाहिता पंखे में फांसी के फंदे पर झूलती हुई मिली । फांसी के फंदे पर झूलने के चलते उसकी मौत हो गई। घटना की सूचना पर पहुंची हंडिया पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया। जानकारी के अनुसार ग्रामसभा थरपरसिया थाना लालगंज जनपद मिर्जापुर निवासी दिनेश कुमार दुबे की पुत्री प्रियंका उम्र 23 वर्ष की शादी एक वर्ष पहले हंडिया थाना क्षेत्र के ग्राम सभा मवईया जनपद प्रयागराज निवासी अनिल तिवारी के पुत्र अभय तिवारी के साथ धूमधाम से हुई थी। मायके वालों द्वारा दान दहेज भी दिया गया था। सोमवार को देर शाम परिजन प्रियंका को अपने कमरे में फांसी के फंदे पर झूलते हुए देखा तो हड़कंप मच गया घटना की सूचना तत्काल ही हंडिया पुलिस को दी गई। घटना की सूचना पाकर थाना प्रभारी बृजेश सिंह , चालक रमेश मिश्रा मय फोर्स घटनास्थल पर पहुंचे जहां पर उन्होंने मृतका की लाश को उतरवाकर अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया। सूचना पाकर मायके वाले भी मौके पर पहुंच गए जहां पर मृतका प्रियंका तिवारी के पिता द्वारा दहेज के चलते ससुराली जनों द्वारा प्रताड़ित करने को लेकर हंडिया थाने में तहरीर दी गई जिसके आधार पर हंडिया पुलिस द्वारा 6 लोगों के खिलाफ दहेज प्रताड़ना को लेकर मुकदमा पंजीकृत कर लिया गया। आरोपियों में पति सास ससुर जेठ जेठानी एवं देवर शामिल है। वहीं दूसरी ओर पुलिस मायके वालों द्वारा दी गई तहरीर के आधार पर जांच में जुट गई है।

जनपद में बनाये गये परीक्षा केन्द्रों का डीएम व डीआईजी ने किया निरीक्षण

प्रारंभिक अर्हता परीक्षा

भारत स्काउट एंड गाइड , डीपीएस व अन्य केन्द्रों पर जाकर व्यवस्थाओं का जिलया जायजा

अखंड भारत संदेश

प्रारंभिक अर्हता परीक्षा के लिए बनाये गये केन्द्रों का निरीक्षण करते जिलाधिकारी व डीआईजी

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री एवं डीआईजी/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी ने प्रारंभिक अर्हता परीक्षा के दृष्टिगत जनपद में बनाये गये परीक्षा केन्द्रो भारत स्काउट एंड गाइड एवं डीपीएस कालेज सहित अन्य परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने परीक्षा केन्द्रों पर व्यवस्थाओं का जायजा लिया एवं परीक्षा हॉल का भी निरीक्षण किया। उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग मंगलवार को पहली प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा (पी0ई0टी0) 2021 का आयोजन राज्यभर में निर्धारित विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर किया गया है। राज्य के सभी जिलों में निर्धारित केन्द्रो पर परीक्षा दो शिफ्टों में आयोजित की गयी है। पहले शिफ्ट की परीक्षा प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक तथा दूसरे शिफ्ट की परीक्षा दोपहर 03:00 बजे से शाम 05:00 बजे तक आयोजित की गयी।

बसपा संगठन में उलटफेर

जिलाध्यक्ष अभिषेक गौतम हटाये गए

संदीप बने मुख्य सेक्टर प्रभारी

प्रयागराज। विधान सभा चुनाव 2022 को मद्देनजर बहुजन समाज पार्टी प्रयागराज मण्डल संगठन के पदाधिकारियों में बड़े पैमाने पर उलटफेर कर दिया गया है जिससे कार्यकताओं में गुटबाजी दिखने लगी है। कुछ बसपाई कार्यकताओं में संगठन में हुए परिवर्तन को लेकर प्रसन्नता है तो कुछ बसपा समर्थकों में आक्रोश भी है। समय रहते इसपर ध्यान नही दिया गया तो आगामी विधानसभा के चुनाव पर भी इसका कुप्रभाव पड़ सकता है। बसपा प्रदेश मुख्यालय से जारी संगठन के पदाधिकारियों की लिस्ट में जिलाध्यक्ष प्रयागराज अभिषेक गौतम, मण्डल सेक्टर प्रभारी एडवोकेट रामवृज गौतम, एडवोकेट रामचन्द्र, एडवोकेट अनुज गौतम, शंकर भारती एवं तिलकराज बौद्ध को तत्काल प्रभाव से इन सभी पदाधिकारियों को पद से छुट्टी कर दी गई है जबकि पूर्व जिलाध्यक्ष संदीप कुशवाहा को प्रयागराज मण्डल का मुख्य सेक्टर प्रभारी तथा पूर्व मुख्य मण्डल सेक्टर प्रभारी चिंतामणि वर्मा को पुनः जिलाध्यक्ष साथ ही साथ भोला नाथ चौधरी, रामरक्षा चमार, अनिल गौतम, अवधेश गौतम, आंनद जैसल एवं नीरज गौतम को को मण्डल सेक्टर प्रभारी बनाया गया है।

पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को श्रदधांजलि अर्पित करते भाजपाई

पवरी में पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को अर्पित की गई श्रद्धांजलि

घूरपुर। क्षेत्र के पवंरी गांव में कौंधियारा मंडल के महामंत्री दिनेश प्रजापति के नेतृत्व में पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल स्व.कल्याण सिंह का श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं एवं मंडल अध्यक्ष शिव प्रसाद केसरवानी, महामंत्री लालचंद शुक्ला, तथा जिला प्रतिनिधि राजमणि पासवान, एवं मंडल उपाध्यक्ष बृजेंद्र मिश्रा ,भानु प्रताप मिश्रा, बूथ अध्यक्ष विरेन्द्र विश्वकर्मा ,दिनेश पांडेय, मंगला प्रजापति एवं अन्य उपस्थित कार्यकताओं में विजय शंकर पांडेय ,नरेंद्र कुमार यादव ,सुभाष सिंह, पवन यादव, रामजी यादव, ब्रह्मानंद यादव तथा विजय शंकर कुशवाहा ने पूर्व मुख्यमंत्री स्व. कल्याण सिंह के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि समर्पित किये ?? । उनके जीवन गाथाओं का वर्णन मंडल उपाध्यक्ष विजेंद्र मिश्र एवं जिला प्रतिनिधि राजमणि पासवान तथा महामंत्री दिनेश प्रजापति ने किया तथा उपस्थित सभी लोगों ने 2 मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति तथा परिवार वालों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना किए।

कोरांव में छात्र की हत्या कर शव फांसी के फंदे पर लटकाया गया

परिजनों ने एक महिला सहित 5 लोगों के विरुद्ध दी नामजद प्राथमिकी, पुलिस ने पीएम के लिए भेजा शव

अखंड भारत संदेश

कोरांव, प्रयागराज। कोरांव बाजार में 12 वीं के छात्र की निर्मम हत्या से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। छात्र का शव फांसी के फंदे पर लटका दिया गया था। घटना की जानकारी परिजनों को होते ही परिवार में कोहराम मच गया। आनन-फानन में परिजन रोते बिलखते कोरांव थाने पहुंचे जहां से पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के अनुसार पोमां रिपोर्ट के बाद ही केस दर्ज करेंगें।

जानकारी के मुताबिक कोरांव थाना क्षेत्र के भोगन गांव का रहने वाला छात्र सूरज पुत्र जय सिंह (17) क्षेत्र के सरदार पटेल इंटर कॉलेज में कक्षा 12 वीं का छात्र था जो कोरांव बाजार के शास्त्रीनगर मोहल्ले के भवानी आवास गली में किराए के कमरे में रहकर पढ़ाई करता था। सूरज सोमवार को शाम 4 बजे के आसपास घर से अपने कोरांव कमरे पर आया था जहां सोमवार को सायं उसके साथ मारपीट की गई और उसे अगवा कर लिया गया। आरोप है कि रात भर उसे एक बंद कमरे में कैद रखा गया और उसे प्रताड़ित किया गया। सुबह सूरज को अगवा करने वाले लोग 6 बजे के आसपास उसके कमरे पर पहुंचा दिया। बाहर से ताला बंद कर दिया।

अगवा करने वाले लोग बाहर से ताला बंद होने के बाद भी कमरे पर आवाजाही करते रहे सुबह 9 बजे के आसपास उसका शव उसके कमरे में ही पंखे के चुल्ले से लटकता मिला। जहां से परिजन उसे उपचार के लिए अस्पताल ले गए किंतु चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

सूरज की मौत से बुझ गया घर का इकलौता चिराग

सूरज अपने माता-पिता का इकलौता संतान था उसके मौत से परिवार पर पहाड़ टूट पड़ा। सूरज व उसके परिजनों को क्या पता था कि कोरांव बाजार में उसके रिश्तेदारों के द्वारा ही उसकी निर्मम हत्या कर दी जाएगी। सूरत की हत्या को लेकर लोग आपस में तरह-तरह की चचाएँ कर रहे थे। मृतक सूरज भगत गांव के पूर्व प्रधान ज्वाला प्रसाद सिंह का नाती था।

मृतक के बाबा ने 5 लोगों के विरुद्ध दी नामजद प्राथमिकी

गीता को हुए छात्र सूरज के बाबा ज्वाला प्रसाद सिंह ने नाती की हत्या मामले में 5 लोगों के विरुद्ध नामजद तहरीर कोरांव पुलिस को देते हुए आरोप लगाया है कि मेरे नाती सूरज की हत्या कर कर शव पंखे के चुल्ले से लटका दिया गया था। जिन लोगों के विरुद्ध नामजद तहरीर दी गई है उनमें सुधांशु पुत्र कल्लू व ममता पत्नी कृष्ण कुमार उर्फ कल्लू निवासी पचवह थाना कोरांव शुभम पुत्र राजेश निवासी बदौर थाना कोरांव प्रियांशु पुत्र रमेश निवासी कपासी थाना कोरांव शामिल है।

इंदिरा भवन में आग लगने से, लाखों के इलेक्ट्रिक सामान जलकर खाक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज के सिविल लाइंस में स्थित बहुमंजिले व्यावसायिक भवन इंदिरा भवन में सोमवार की रात करीब डेढ़ बजे विद्युत शार्ट सर्किट से आग लगने से लाखों के इलेक्ट्रिक सामान एलईडी टीवी, मोबाइल, पावर बैंक, चार्जर आदि जल गए, घटना से हड़कंप मचा है। सुभाष चौराहे पर स्थित व्यवसायिक भवन इंदिरा भवन के भूतल में स्थित जी 43 नंबर शाप में महताब की डिजिटल मोबाइल नाम से दुकान है। सोमवार की रात करीब डेढ़ बजे दुकान में अचानक शार्ट सर्किट से आग लग गई। आग ने जब विकराल रूप धारण किया तो आससपास के लोगों को घटना की जानकारी हुई। लोगों ने शटर को तोड़कर किसी तरह आग पर काबू पाया। सूचना पाकर फायर ब्रिगेड की टीम भी मौक पर पहुंच गई। भीषण आग में पूरा दुकान खाक में तब्दील हो गया। करीब 60 रुपये के मोबाइल, एईडीडी टीवी, चार्जर, पॉवर बैंक, ब्लूटूथ, स्पीकर सहित तमाम उपकरण राख में तब्दील हो गए। घटना से अफरातफरी की स्थिति बनी रही। सूचना पर दुकान के मालिक भी मौके पर पहुंच गए। संभावना जताई जा रही है कि आग विद्युत शार्ट सर्किट से लगी है। इंदिरा भवन के भूतल और प्रथम और द्वितीय तल पर मोबाइल, टीवी और इलेक्ट्रानिक सामानों से जुड़ी दुकानें हैं। इसके ऊपर वाले तल पर तमाम सरकारी और गैर सरकारी कंपनियों के कार्यालय हैं।

आग लगने से दुकान में रखा सामान जला

कार्यालय ग्राम पंचायत नौढ़िया तरहार वि0खं0 शंकरगढ़, प्रयागराज

निविदा सूचना

ग्राम पंचायत नौढ़िया तरहार में मनरेगा, राज्य वित्त योजना के अंतर्गत कैटल शेड, मुर्गी शेड, वर्मी कंपोस्ट,सोख्ता गड्ढा, कंपोस्ट गड्ढा, वाटर हार्वेस्टिंग ,विद्यालय में कायाकल्प, बोर रिबोर वृक्षारोपण नाली निर्माण/ मरम्मत, तालाब सुंदरीकरण, गौशाला निर्माण, भूसा घर का निर्माण, गौशाला फर्श मरम्मत व इंटरलॉकिंग निर्माण कार्य, सरकारी भवनों की मरम्मत, बाउंड्री वॉल निर्माण एवं मरम्मत कार्य, विद्यालय में सुंदरीकरण, प्लास्टिग संग्रहण केंद्र, खेल मैदान, अंत्येष्टि निर्माण, व मरम्मत, हैंडपंप चहरी निर्माण, कूप जगत निर्माण, वह मरम्मत, जी0एस0बी0 निर्माण कार्य, पंचायत भवन निर्माण/ मरम्मत कार्य, हैंडपंप मरम्मत आदि कार्यों के लिए सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मों से निविदा आर्मत्रित की जाती है ' फर्म का रजिस्ट्रेशन टीन नंबर एवं जी0एस0टी0होना अनिवार्य है ' सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक -पृथक होगी '

निविदा दिनांक 23/8/2021 से 24/8/2021 तक ग्राम पंचायत कार्यालय पर प्राप्त की जा सकती है ' निविदा दिनांक 25/8/2021 को उपस्थित सभी फर्मों, ग्राम प्रधान व सचिव के उपस्थिति में 4:00 बजे खोली जाएगी ' निविदा को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने का पूर्ण अधिकार समिति के पास सुरक्षित होगा। निविदा वर्ष 2021- 22 में कराए जाने वाले विकास कार्यो के लिए प्रभावी होगी।

जान्हवी देवी
(प्रधान)
ग्राम पंचायत नौढ़िया तरहार
वि0 खं0 शंकरगढ़ जनपद प्रयागराज

गौरी शंकर
(ग्राम विकास अधिकारी)
ग्राम पंचायत नौढ़िया तरहार
वि0 खं0 शंकरगढ़ जनपद प्रयागराज

कर्मचारी हितों के लिए हमेशा रहूंगा संघर्षरत : दयाशंकर यादव

नव निर्वाचित पदाधिकारियों का फूलपुर में हुआ जोरदार स्वागत

अखंड भारत संदेश

नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का फूलपुर में स्वागत करते कर्मचारी

फूलपुर। उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का स्वागत समारोह मंगलवार को फूलपुर विकास खण्ड के सभागार कक्ष में सम्पन्न हुआ। नव निर्वाचित जिलाध्यक्ष दयाशंकर यादव ने अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी देने पर सभी सहकर्मियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा की कर्मचारी हितों की रक्षा करना ही मेरा मुख्य उद्देश्य है। कर्मचारी हितों के लिए सदैव संघर्षरत रहूंगा। वहीं नव निर्वाचित जिला महामंत्री तेज बहादुर भारतीया ने संगठन की मजबूती पर बल देते हुए कहा की संगठित रहने पर हर कार्य आसान हो जाता है इसलिए हम सभी को संगठित रहकर अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए। सम्मान समारोह में उपस्थित सहायक विकास अधिकारी गुलाब चन्द पाण्डेय ने सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई दी। इस दौरान कर्मचारियों द्वारा नव निर्वाचित पदाधिकारियों के साथ ही जिला कोषाध्यक्ष आनंद कुमार सोनकर,मंडल अध्यक्ष शिव प्रकाश यादव को माला पहनाकर उनका जोरदार स्वागत किया गया। संगठन के पदाधिकारियों ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कदम से कदम मिलाकर चलने की अपील की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मशहूर शायर व रोजगार सेवक संघ के ब्लाक अध्यक्ष नूरुद्दीन हाशमी ने किया। मौके पर संतोष कुमार गौतम, धनंजय कुमार,अजय वर्मा, सुरेन्द्र गौड़, आनंद यादव, मिथिलेश कुमार, शोभनाथ भारतीय, संजय कुमार,श्याम कुमार, कमलेश यादव,लालजी पटेल,मनीष सिंह, चिंता पाल, अवधेश, रमेश गौतम,प्रदीप गौतम सहित दर्जनों की संख्या में पंचायत कर्मी मौजूद रहे।

छात्रा के साथ दुष्कर्म कर मेडिकल स्टोर संचालक ने वीडियो किया वायरल, दर्ज हुआ मुकदमा

प्रयागराज। मऊआइमा इलाके के एक गांव में मेडिकल स्टोर संचालक ने छात्रा के साथ दुष्कर्म कर उसका वीडियो वायरल कर दिया। छात्रा की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव में मेडिकल स्टोर चलाने वाले एक युवक ने गांव की ही एक छात्रा को बहलाफुसलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। किसी को कुछ बताने पर जान से मारने की धमकी दी। जिसके चलते छात्रा ने परिजनों को उसकी करतूत नहीं बताई। परिजनों में हड़कंप तब मच गया जब मेडिकल स्टोर संचालक ने दुष्कर्म का वीडियो सोशल मीडिया में वायरल कर दिया। इसके बाद छात्रा ने घर वालों को पूरी बात बताई तो लोग सन्न रह गए। छात्रा की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया। आरोपी फरार बताया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि आरोपी की खोजबीन की जा रही है। घटना के बाद से ही आरोपी दुकान बंद कर फरार हो गया है।

सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज के घर बमबाजी पुलिस को मिले अहम सुराग, बदमाश हुए चिन्हित

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज ' सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज जस्टिस अशोक भूषण के घर बमबाजी के मामले में 24 घंटे बीत जाने के बाद भी पुलिस अभी किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकी है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर बदमाशों की तलाश में जुटी है, लेकिन अब तक उन्हें पकड़ पाने में सफलता नहीं मिली है। सूत्रों का यह भी कहना है कि बदमाशों को चिन्हित कर लिया गया है लेकिन इस बारे में अभी अफसर कुछ बोलने को तैयार नहीं है। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट के रिटायर जज अशोक भूषण के पैतृक मकान कर्नलगंज के हाशिमपुर पर सोमवार की रात बमबाजी की गई थी। एक के बाद एक दो बम फोड़ने के बाद बदमाश भाग निकले थे। जज के घर पर बमबाजी से पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया है। आला अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर छानबीन शुरू कर दी थी। अभी तक पुलिस इस मामले में किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकी है।जज के मकान पर बमबाजी की खबर से शहर में सनसनी फैल गई थी। कई थानों की फोर्स लेकर डीआईजी समेत तमाम अफसर मौके पर पहुंच गए थे। देर रात तक पुलिस जांच पड़ताल में जुटी रही। अफसरों का कहना है कि बदमाशों की तलाश में कई टीमें लगाई गई हैं। न्यायमूर्ति अशोक भूषण सुप्रीम कोर्ट के रिटायर जज हैं। वह परिवार समेत कैंट क्षेत्र के अशोक नगर में रहते हैं। उनका पैतृक मकान कर्नलगंज के हाशिमपुर मोहल्ले में है। जहां उनके भाई और इलाहाबाद हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अनिल भूषण परिवार समेत रहते हैं। मौके पर जांच पड़ताल की गई। फोरेंसिक टीम की जांच में छर्रा या अन्य विस्फोटक पदार्थ के अवशेष नहीं मिले हैं। स्थानीय पुलिस के साथ ही एसओजी व सर्विलांस टीमों को बदमाशों की तलाश में लगाया गया है।

कार्यालय ग्राम पंचायत पकरी, विकास खंड-सैदाबाद, जनपद -प्रयागराज

अल्पकालिक निविदा

ग्राम पंचायत पकरी विकास खंड सैदाबाद, जनपद प्रयागराज, मे पंद्रहवा वित्त/चतुर्थ राज्य वित्त आयोग ग्राम निधि के केंद्रीय वित्त कोविड-19 मनरेगा, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अंतर्गत शौचालय निर्माण, नाली निर्माण एवं मरम्मत, खड़ंजा निर्माण, खड़ंजा मरम्मत, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, स्कूल बाउंड्री की मरम्मत, स्कूल फर्श की मरम्मत, स्कूल शौचालय की मरम्मत,-कार्य, पाइप, कूड़ा गाड़ी, हैंडपंप मरम्मत एवं रिबोर, इंटरलॉकिंग कार्य, सामुदायिक शौचालय, लोकपिट निर्माण एवं एम ०डी० एम० रोड निर्माण मे प्रयुक्त होने वाली सामग्री हेतु पंजीकृत फर्म के द्वारा दिनांक 24 -08- 2021 से दिनांक 27-08-2021 तक सील बंद निविदा अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 27-08-2021 को 12:00 बजे उपस्थित फर्मों के समक्ष खोली जाएगी। निविदा स्वीकृत या अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा। सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार प्रथक-पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2021-22 मे कराये जाने वाले सभी कार्यों हेतु प्रभावी होगी।

सुगन्धा शुक्ला
सचिव
ग्राम पंचायत-पकरी
विकासखंड- सैदाबाद, प्रयागराज

शोभनाथ कुशवाहा
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत -पकरी
विकासखंड-सैदाबाद, प्रयागराज

पत्रांक-मेमो निविदा ,2021-22 दिनांक-24-08-2021

गार्ड की ड्यूटी के दौरान मौत, कोहराम

सुबह 9 बजे परिजनों को मृत होने की मिली सूचना

अखंड भारत संदेश

मृतक गार्ड के रोते बिलखते परिजन

लेडियारी। अम्बिका भारत गैस ग्रामिण वितरण नारीबारी के गार्ड एवं डिलेवरी मैन के आकस्मिक एजेंसी मे मृत्यु होने से तरह-तरह की चचाएं व्याप्त। भारत गैस एजेंसी ग्रामीण वितरक पर गार्ड के पद पर तैनात बाल्मीकि तिवारी 65 वर्ष पुत्र जयनारायण तिवारी निवासी झंझरा चौबे थाना शंकरगढ प्रत्येक दिन की भांति एजेंसी पर रात मे डियूटी पर तैनात थे। कुछ दिन पहले तक एजेंसी पर परिवार सहित रहते थे लेकिन कुछ दिनों से पत्नी और बच्चे झंझरा चौबे मे आ गए थे। एजेंसी पर अकेले ही रहते थे। प्रतिदिन सुबह उठने की आदत थी, मंगलवार को सुबह देर तक ना उठने पर सामने मौजूद लोगों ने चर्चा किया कि तिवारी जी अभी नही उठे कुछ लोगों ने फोन लगाया तो जबाब नही मिला। नजदीक जाकर देखा तो बाल्मीकि तिवारी मृत पाए गए। मौजूद लोगों ने एजेंसी संचालक को फोन पर सूचना दी। मौके पर पहुंचे एजेंसी संचालक ने परिजनों के घर सूचना दी। घर वाले मौके पर पहुंचे तो कोहराम मच गया। पुत्र ने मृत्यु का कारण हार्ट अटैक और वीपी लो होना बताया तो ग्रामीणों मे कोरोना की वैक्सीन लगवाने के बाद से कुछ व्याकुलता होने की अफवाहें रही। मृतक ने अपने पीछे पत्नी कमलेश कुमारी, पुत्र विमलेश तिवारी, आशीष तिवारी, धीरेन्द्र तिवारी अविवाहित को छोड़ गए। बाल्मीकि तिवारी के ऊपर पूरे घरू के भरण-पोषण की जिम्मेदारी थी। एजेंसी मे 2014 से कार्यरत थे।परिजनों ने शव झंझरा चौबे अपने गृह गांव लाकर विधि-विधान से अन्त्येष्टी की। मुखाग्नि बड़े पुत्र विमलेश तिवारी ने दी। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुवेर्दी,ग्राम प्रधान पृथ्वीराज साहू,पूर्व ज्येष्ठ ब्लाक प्रमुख महेंद्र सिंह, इन्द्रलाल चतुवेर्दी,छेदीलाल तिवारी आदि ने परिजनों को ढांढस बंधाते हुए श्रष्दाजलिं अर्पित करते हुए हर संभव मदद का आश्वासन दिया।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने शोकसभा कर पूर्व सीएम को दी श्रद्धांजलि

अखंड भारत संदेश

सहसों। पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व राज्यपाल कल्याण सिंह को उनके निधन पर शोक सभा कर भाजपा कार्यकताओं ने दिया भावभीनी श्रद्धांजलि। भारतीय जनता पार्टी गंगापार के कार्यालय अंदावां बाईपास पर सोमवार को सायंकाल दिवंगत कल्याण सिंह के छायाचित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए भाजपा के कार्यकताओं, पदाधिकारियों ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर भाजपा गंगापार के जिला अध्यक्ष अश्विनी कुमार द्विवेदी ने उनके निधन पर शोक संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि राम जन्म भूमि मंदिर के नायक कल्याण सिंह के निधन से पूरा प्रदेश शोकमय है। उन्होंने कहा कल्याण सिंह जी बहुत ही साधारण परिवार से पूरा जीवन सादगी के बीच गुजारा वह अपने प्रत्येक कार्यकताओं व मित्रों को नाम से जानते और पहचानते थे सभी से करीबी रिश्ता रखते थे। कल्याण सिंह जी अलीगढ़ के मठौली गांव से थे। वह बहुत ही सादगी के साथ अलीगढ़ से ही परास्नातक की पढ़ाई करके सर्वप्रथम आर यस यस के स्वयंसेवक बने उसके बाद उन्होंने 30 साल की अपनी आयु में अतरौली विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़े परंतु हार का सामना करना पड़ा। तत्पश्चात 1967 में पुनः अतरौली विधानसभा से चुनाव मैदान में आए और बड़ी जीत हासिल कर अपना राजनीतिक सफर शुरू किया फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। कल्याण सिंह जी 1967 से 2004 तक लगातार 10 बार सदस्य विधान सभा उत्तर प्रदेश रहे। वह उत्तर प्रदेश सरकार की बागडोर संभालते हुए 6 दिसंबर 1992 में बतौर मुख्यमंत्री रहते राम मंदिर निर्माण में लगे कारसेवकों की हिम्मत को हौसला अफजाई करते हुए अपने आप में गौरवान्वित महसूस किया। उन्होंने अपने लम्बी राजनीतिक सफर में 2004 से लेकर 2014 तक लोकसभा सदस्य भी रहे तथा उन्होंने लोकसभा सदस्य रहते हुए उन्होंने स्वेच्छा से 1 मार्च 2014 को सदस्यता से त्यागपत्र देकर अपने राजनीतिक सफर को स्थिर कर लिए। तत्पश्चात 4 सितंबर 2014 से 2019 तक राज्यपाल के पद पर रह कर अपने कर्तव्यों का बखूबी निर्वहन किए। मौके पर उपस्थित पूर्व जिला अध्यक्ष अमरनाथ त्रिपाठी ने कहा आत्मविश्वास से भरे कल्याण सिंह जी को रार ठानने में कोई हिचक कभी नहीं रही न हार मानने कि उनके स्वभाव का प्रमाण अयोध्या में भव्य आकार लेता श्री राम मंदिर है। जाति धर्म की महीन जालो से गुथी उत्तर प्रदेश सियासत को ढूंढ कर भगवा दुर्ग की नीव कल्याण सिंह जी ने रखी। वह निडर, निष्पक्षवादी एवं उनके अंदर हिंदुत्व कूट-कूट कर भरी थी। ऐसे महान नेता को हम सब शत-शत नमन करते हैं तथा उनको सच्ची श्रद्धांजलि देते हैं। उन्होंने कहा कि राम मंदिर के शिलान्यास से आनन्दित पूर्व मुख्यमंत्री भव्य राम मंदिर बनता देखना चाहते थे जो कि अब आकार साकार की ले रहा है लेकिन वक्त से पहले नींव का यह पत्थर दरक गया। शोक सभा का संचालन जिला मंत्री जीत लाल त्रिपाठी ने किया। शोक सभा में श्रद्धांजलि देते हुए विचार व्यक्त करने वालों में प्रमुख रूप से जिला उपाध्यक्ष अनिरुद्ध सिंह पटेल, कोषाध्यक्ष आशीष केसरवानी, जिला मीडिया प्रभारी बृजेश कुमार त्रिपाठी, व कन्हैया लाल पांडे, हरी भूषण सिंह, मनोज निषाद, राम पलट पटेल, श्याम बिहारी पांडे, अमरनाथ दुबे, तुलसीराम सरोज, अमरजीत कुशवाहा, संतोष शुक्ला, राजधर द्विवेदी, जय प्रकाश द्विवेदी, महेश चंद पांडे, अनिल सरोज, पवन कुमार शुक्ला, संजय मिश्र बनकटा, संजय सिंह, तथा गंगापार के समस्त मंडल अध्यक्ष एवं महामंत्री सहित सैकड़ों कार्यकताओं ने दिवंगत कल्याण सिंह जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

कार्यालय ग्राम पंचायत टिकरी, विकास खंड-सैदाबाद, जनपद-प्रयागराज

अल्पकालिक निविदा

ग्राम पंचायत टिकरी विकास खंड सैदाबाद, जनपद प्रयागराज, मे पंद्रहवा वित्त/चतुर्थ राज्य वित्त आयोग ग्राम निधि के केंद्रीय वित्त कोविड-19 मनरेगा, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अंतर्गत शौचालय निर्माण, नाली निर्माण एवं मरम्मत, खड़ंजा निर्माण, खड़ंजा मरम्मत, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, स्कूल बाउंड्री की मरम्मत, स्कूल फर्श की मरम्मत, स्कूल शौचालय की मरम्मत,-कार्य, पाइप, कूड़ा गाड़ी, हैंडपंप मरम्मत एवं रिबोर, इंटरलॉकिंग कार्य, सामुदायिक शौचालय, लोकपिट निर्माण एवं एम ०डी० एम० रोड निर्माण मे प्रयुक्त होने वाली सामग्री हेतु पंजीकृत फर्म के द्वारा दिनांक 24 -08- 2021 से दिनांक 27-08-2021 तक सील बंद निविदा अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 27-08-2021 को 12:00 बजे उपस्थित फर्मों के समक्ष खोली जाएगी। निविदा स्वीकृत या अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा। सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार प्रथक-पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2021-22 मे कराये जाने वाले सभी कार्यों हेतु प्रभावी होगी।

इन्द्र विजय यादव
सचिव
ग्राम पंचायत-टिकरी
विकासखंड- सैदाबाद, प्रयागराज

अनिल कुमार सिंह
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत -टिकरी
विकासखंड-सैदाबाद, प्रयागराज

पत्रांक-मेमो निविदा ,2021-22 दिनांक-24-08-2021

पीईटी परीक्षा में दूसरे के स्थान पर परीक्षा दे रहे तीन धराए

जिले के 32 परीक्षा केन्द्रों पर सकुशल सम्पन्न हुई परीक्षा

प्रतापगढ़। जिले के 32 परीक्षा केन्द्रों पर मंगलवार को दो पालियों में प्रारंभिक पात्रता परीक्षा (पीईटी) सकुशल सम्पन्न हुई। पहली बेला की परीक्षा प्रातः दस बजे से बारह बजे तक तथा द्वितीय बेला की परीक्षा तीन बजे से पांच बजे तक सम्पन्न हुई। इस दौरान दूसरे के स्थान पर परीक्षा दे रहे तीन परीक्षार्थियों को दबोचकर पुलिस के हवाले कर दिया गया। इनमें से एक न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल में तथा दो रानीगंज इंटर कालेज में पकड़े गये हैं। पुलिस इन पर धोखाधड़ी करने का मुकदमा दर्ज किया है। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने परीक्षा को सुचारु रुप से चलाने के लिये एडीएम शत्रोहन वैश्य को नोडल अधिकारी बनाया था। एडीएम, सभी तहसीलों के एसडीएम व जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानंद परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण करते रहे। परीक्षा केन्द्रों पर सेक्टर मजिस्ट्रेट व स्टेटिक मजिस्ट्रेट भी तैनात किये गये थे। प्रश्न पत्रों को लाने की जिम्मेदारी स्टेटिक मजिस्ट्रेटों ने निभाई। प्रातः छह बजे टेझ्जरी पहुंचकर वहां प्रश्न पत्र लेकर परीक्षा केन्द्रों पर पहुंचे। परीक्षा केन्द्रों पर सीसीटीवी कैमरा व वाइस रिकार्डर से एक-एक कक्ष की निगरानी की जा रही थी। इस परीक्षा में कुल 32176 परीक्षार्थी पंजीकृत थे जिसमें पहली पाली में 18538 तथा दूसरी पाली में ही इतने ही परीक्षार्थी पंजीकृत थे। हर परीक्षा केन्द्रों पर दो दरोगा, चार सिपाही तथा तीन महिला सिपाही तैनात थी। परीक्षा केन्द्रों पर परीक्षार्थी आधे घंटे पहले ही पहुंच गये थे। बहुत पूछताछ के बाद परीक्षार्थियों को प्रवेश मिला है। इस तरह कुल 32 परीक्षा केन्द्रों पर 4 इंस्पेक्टर, 64 सब इंस्पेक्टर, 154 सिपाही व 117 महिला सिपाही तैनात थे। इसके अलावा थानाध्यक्ष व सीओ भी परीक्षा केन्द्रों का जायजा लेते रहे।

पीईटी परीक्षा के अभ्यर्थियों का परीक्षा केन्द्र से मोबाइल व पर्स चोरी

लालगंज, प्रतापगढ़। मंगलवार को पीईटी की परीक्षा देने आये अभ्यर्थियों का मोबाइल व पर्स अज्ञात उचक्को ने उडा लिया। प्रयागराज जिले से आये आधा दर्जन अभ्यर्थियो ने घटना को लेकर कोतवाली पहुंचकर आक्रोश जताया। प्रयागराज जिले के डगरहा का पूरा, बरेठी निवासी रत्नेश सिंह, सुलेम सराय धूमनगंज थाना के रवि वर्मा, करछना के कुलदीप तथा रूकौनी कौंधियारा के अजय कुमार, मेवराबाद थाना कैण्ट के विश्वजीत सिंह ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि वह लोग सरस्वती विद्या मंदिर महाविद्यालय मे पीईटी की परीक्षा देने आये थे। परीक्षार्थियो का कहना है कि गेट पर उनका मोबाइल व पर्स जमा करा लिया गया। परीक्षा होने के बाद छात्र जब मोबाइल व पर्स की तलाश करने लगे तो वह नदारद मिला। परीक्षार्थियो ने कोतवाली पहुंचकर घटना के बाबत पुलिस को तहरीर सौपी। पीडित परीक्षार्थियो का कहना है कि पुलिस तहरीर को बदलने की बात कह रही है। दूर से आये परीक्षार्थियो का मोबाइल फोन तथा पर्स गायब होने पर आक्रोश भी देखा गया। पुलिस का कहना है, जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

शिक्षा जगत में कल्याण सिंह लाए थे क्रांतिः रामशंकर

उद्योग व्यापार मण्डल ने पूर्व मुख्यमंत्री को दी गई श्रद्धांजलि

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल की शोकाकुल बैठक पूर्व मुख्यमंत्री व राजस्थान के पूर्व राज्यपाल कल्याण सिंह के अकस्मात निधन पर जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी की अध्यक्षता में प्रातीय उपाध्यक्ष राम शंकर जायसवाल के प्रतिष्ठान बाबागंज पर संपन्न हुई। बैठक का संचालन जिला महामंत्री संजय सोनी ने किया।प्रांतीय उपाध्यक्ष राम शंकर जायसवाल ने कहा कि कल्याण जी ने शिक्षा जगत में क्रांति लाकर उत्तर प्रदेश के भविष्य को संवारने का काम किया था जिसके कारण हम उन्हें नमन करते हैं। जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी जी ने कहा कि उनके समय काल में उत्तर प्रदेश में व्यापारियों और आम जनता को सम्मानित न्याय सदैव मिला। अंत में सभी ने खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण कर प्रार्थना की गई। बैठक में लखन लाल बाबा, अश्विनी केशरवानी, राजेंद्र कुमार शर्मा, चंद्र प्रकाश पाल, रजत सक्सेना, सुरेश चंद केसरवानी, संजय जैन आदि लोग मौजूद रहे।

आपत्तियों एवं सुझावों का 25 अगस्त तक कराएं निस्तारण

प्रतापगढ़। उप जिला निर्वाचन अधिकारी शत्रोहन वैश्य ने बताया कि प्रतापगढ़ जिले की संसदीय/समस्त विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के अन्तर्गत आपत्तियों एवं सुझावों हेतु एन0आई0सी0 के डीईओ पोर्टल एवं सम्बन्धित निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी तथा जिला निर्वाचन कार्यालय प्रतापगढ़ के नोटिस बोर्ड पर मतेदय स्थलों की आलेख्य सूची चस्पा कराते हुये 24 अगस्त को आलेख्य प्रकाशन करा दिया गया है। उन्होने जनपद के जनसामान्य एवं समस्त मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों अनुरोध करते हुये कहा कि प्रकाशित मतदेय स्थलों की सूची में कोई आपत्ति एवं सुझाव हेतु उन्हें सम्बन्धित तहसील/निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के कार्यालय में एवं जिला निर्वाचन कार्यालय प्रतापगढ़ में 25 अगस्त तक उपलब्ध करा दें।

विद्यालय में चोरी, दी तहरीर

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली के लकुरी गांव मे सोमवार की रात अज्ञात चोरों ने ताला तोडकर विद्यालय मे लगे पंखे तथा एमडीएम के बर्तन एवं अन्य कीमती सामानो पर हाथ साफ कर दिया। मंगलवार की सुबह प्रधानाध्यापक व शिक्षक जब विद्यालय पहुंचे तो चोरी देखकर आवाक रह गये। प्रधानाध्यापक श्रीकांत पाण्डेय ने घटना को लेकर पुलिस को तहरीर दी है।

सर्पदंश से किशोरी की मौत, कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। सर्पदंश से किशोरी की मौत होने से कोहराम मच गया। उदयपुर थाना के पटेल नगर बाजार निवासी ओम प्रकाश पटेल की पुत्री विनीता 09 बीती सोमवार की रात अपनी छोटी बहन अंतिमा के साथ बरामदे मे सो रही थी। रात्रि लगभग तीन बजे तख्ते के नीचे छिपे सर्प ने विनीता को डस लिया। विनीता को परिजन अस्पताल ले गये। वहां चिकित्सको ने उसे मृत घोषित कर दिया। किशोरी की मौत से परिजनों में कोहराम मच गया।

गांजा के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

प्रतापगढ़। चौकी इंचार्ज एहसानुल हक मय टीम क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर अंतू थाना क्षेत्र के गौरा डांड ईंट भट्ठे के पास से गॉजा बेचने वाला अभियुक्त विनोद सिंह गौरा डाड़ अंतू को दो किलो गांजा के साथ गिरफ्तार किया। गिरफ्तार अभियुक्त पहले भी नौ किलो गांजे के साथ पकड़ा जा चुका है।

परिषदीय विद्यालयों में पुनः लौटी रौनक, कक्षाएं शुरू

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए पूरे 6 महीने के बाद एक बार फिर विद्यालयों में चहल पहल नजर आयी और बाकायदा कक्षाएं शुरू हुईं। स्थानीय अमर जनता इंटर कॉलेज में हाई स्कूल व इंटर मीडिएट की कक्षाओं के साथ आज से जूनियर की कक्षाएं भी शिफ्ट के अनुसार संचालित हुईं। प्रधानाचार्य विनय प्रताप सिंह ने बताया कि आज पहले दिन जूनियर की कक्षाओं में उपस्थिति सामान्य रही। निर्देशित कोविड 19 प्रोटोकाल का पूरी तरह से पालन करते हुए कक्षाओं का संचालन किया गया। मॉडल उच्च प्राथमिक विद्यालय कटरा गुलाब सिंह में भी आज बच्चों के कक्षा में प्रवेश करने के पूर्व प्रधानाध्यापक मुहम्मद फरहीम, पितामह यादव, अजीत प्रताप सिंह, श्रीमती आशा मिश्रा, मनोज कुमार के द्वारा बच्चों का थर्मल स्कैनिंग व हैंड सैनिटाइज किया गया। अधिक नामांकन होने के कारण कक्षा शिक्षण दो शिफ्ट में चलाया गया। नामांकित 290 छात्रों में से दोनों शिफ्ट में पहले दिन आज मात्र 160 बच्चे स्कूल आए थे। प्रथम शिफ्ट सुबह आठ बजे से 11 बजे तक व द्वितीय शिफ्ट में साढे ग़्यारह बजे से ढाई बजे तक शिक्षण कार्य संपन्न किया गया।

नया माल गोदाम रोड पर सुर्खी साइड पर कार्य शुरू

सांसद के पत्र लिखने पर जनता में जगी उम्मीद

प्रतापगढ़। नया माल गोदाम रोड़ से भंगवा जाने वाली रोड़ के सुर्खी साइड की दुर्दशा को सांसद ने संज्ञान लिया है। उन्होंने मण्डलीय रेल प्रबंधक को पत्र लिखा है। सांसद संगम लाल गुप्ता ने कहा कि जनता की समस्या का यथोचित समाधान निकालें, इस पर मंगलवार से सुखई साइड पर कार्य शुरु हो गया है। सांसद संगम ने कहा कि 32 गांवों को जाने वाला एक मात्र मार्ग सुर्खी साइड की वैकल्पिक रोड है। यद्यपि रेलवे की परिसीमा पर ओवरब्रिज निर्माण तक मार्ग को चालू रखना ही होगा। पत्र में उन्होंने कहा कि मार्ग के जगह-जगह गड्ढों और उसमें भरे पानी के दलदल से हो रहे हैं जिससे हादसे से जनता हलाकान है। इस दौरान सांसद ने दूरभाष से भी डीआरएम लखनऊ से बात की जिस पर डीएम ने तत्काल वैकल्पिक दुरुस्तीकरण का आश्वासन दिया। उधर मार्ग का दुरुस्तीकरण कार्य भी शुरु हो गया जिसका निरीक्षण सांसद अनुज दिनेश गुप्ता अध्यक्ष संगम यूथ फाउंडेशन ने किया। उनके साथ राकेश सैनी सहायक मंडल अभियंता निर्माण, निहाल उद्दीन सहायक मंडल अभियंता मेंटेनेंस, अवधेश पाल वरिष्ठ खंड अभियंता रेल पथ, पूर्व नगर अध्यक्ष संजय सिंह, सुरेंद्र तिवारी पूर्व प्रधान भगवा, दुर्गेश मौर्य सांसद प्रतिनिधि, अभिषेक पांडे उपस्थित रहे।

मामूली विवाद में किशोरी को पीटा

पट्टी, प्रतापगढ़। खेत में काम कर रही किशोरी की मामूली विवाद में आरोपियों ने पिटाई कर दिया। पीड़ित ने मामले में पुलिस से की गई नामजद शिकायत किया है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के असुढ़ी गांव की रहने वाली निक्की पुत्री राजेंद्र का आरोप है कि मंगलवार की सुबह वह अपने खेत में काम कर रही थी, इस दौरान गांव की एक महिला अपने पति के साथ खेत में पहुंची और उससे बात-विवाद करने लगी। आरोप है कि इसी विवाद के दौरान महिला ने उसका हाथ पकड़ कर मरोड़ दिया और उसे बुरी तरह से मारपीट कर घायल कर दिया। इस मारपीट में उसके हाथ में गंभीर चोटें आई हैं, घायल किशोरी अपनी बहनों के साथ कोतवाली आई और आरोपी के खिलाफ नामजद तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

विश्वनाथगंज विधायक ने दिया बयान

बीमा कंपनियों ने किसान फसल बीमा के पन्द्रह सौ करोड़ डकारे : डा0 वर्मा

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। दैवीय आपदा से बर्बाद हुई किसानों की फसलों की क्षतिपूर्ति के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही प्रधानमंत्री किसान फसल बीमा योजना का लाभ प्रभावित किसानों को देने के बजाय बीमा कंपनियां सुनियोजित तरीके से जमा धनराशि के करोड़ो रुपए स्वयं डकार लिया हैं।

फसल बीमा के तहत क्षतिपूर्ति न दिए जाने की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए विश्वनाथ गंज क्षेत्र के विधायक डॉक्टर आरके वर्मा ने जब संबंधित बीमा कंपनियों से बात किया तो पता चला कि अब तक किसान फसल बीमा के लिए नामित विभिन्न बीमा कंपनियों ने लगभग 15 सौ करोड़ का चूना किसानों को लगाया है।

फसल बीमा के लिए किसान प्रीमियम के रूप में निर्धारित धनराशि बीमा कंपनियों को जमा करता है, जिसमे प्रदेश और केंद्र सरकार भी अपने हिस्से का 2 प्रतिशत प्रीमियम जमा करती है लेकिन बीमा कंपनियां किसानों की खराब हुई फसल की क्षतिपूर्ति करने के बजाए जमा धनराशि में भारी खेल करती हैं। डॉक्टर वर्मा ने प्रधानमन्त्री किसान फसल बीमा के नाम पर विभिन्न बीमा कंपनियों के पास जमा धनराशि और अब तक किसानों द्वारा किए गए क्षतिपूर्ति के दावे तथा भुगतान की गयी धनराशि की जानकारी सरकार से मांगा है ।

डॉक्टर वर्मा का आरोप है कि अब तक प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में बड़े पैमाने पर घोटाला करते हुए विभिन्न बीमा कंपनियों ने लगभग पन्द्रह सौ करोड़ रुपये का चूना किसानों को लगाया है।

स्वामी करपात्री महाविद्यालय मे अभिविन्यास कार्यक्रम सम्पन्न

रानीगंज, प्रतापगढ़। मंगलवार को स्वामी करपात्रीजी महाराज राजकीय महाविद्यालय रानीगंज, प्रतापगढ़ में मिशन शक्ति अभियान के तृतीय चरण के अन्तर्गत बदलाव के अभिकर्ता का चयन व उनके कर्तव्य निर्वहन हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें परामर्शदात्री डॉ0 नीलिमा सिन्हा ने विस्तारपूर्वक दायित्व निर्वहन पर प्रकाश डाला। अभिविन्यास कार्यक्रम में डॉ0 एस0एन0यादव, डॉ0 अजय यादव, डॉ0 श्रद्धा सिन्हा ने भी प्रकाश डाला। अन्त में प्राचार्य डॉ0 विजयकुमार मिश्र ने छात्र/छात्राओं को सम्बोधित किया। अभिकर्ता के रूप में प्राध्यापक वर्ग से डॉ0 अजय कुमार यादव, डॉ0 श्रद्धा सिन्हा व छात्रा वर्ग से निकिता सिंह, अवन्तिका सिंह व शिवानी मिश्रा (बी0ए0-द्वितीय वर्ष) को नामित किया गया।

जिला पंचायत के चार सदस्यों को अध्यक्ष ने दिलाई शपथ

प्रतापगढ़। जिला पंचायत के चार निर्वाचित सदस्यों को मंगलवार को अध्यक्ष माधुरी पटेल ने शपथ दिलाई। पंचायत का चुनाव पिछले महीने हुआ था।

इसमें 57 सदस्य चुने गए थे। अध्यक्ष समेत बाकी सबने तो समारोह में शपथ ले ली थी, पर विजय यादव, लाल बहादुर, अमरावती देवी, क्षमा सिंह ने कुछ कारणों से शपथ नहीं ली थी। एएमए पुनीत वर्मा ने शपथ लेने के लिए इनको पत्र लिखा था। अब मंगलवार को पंचायत सभागार में इनको अध्यक्ष माधुरी पटेल ने पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर अपर मुख्य अधिकारी पुनीत वर्मा समेत पंचायत के अधिकारी मौजूद रहे।

सेंध लगाकर चोरों ने उड़ाए जेवरात व सामान

पट्टी, प्रतापगढ़। आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के भावापुर दुबेपट्टी गांव में चोरों ने एक घर में सेंध लगाकर घर में रखा हुआ नकदी व कीमती जेवरात उठा ले गए। सूचना पर पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के भावापुर दुबे पट्टी गांव की रहने वाले रामदास घर के बाहर छप्पर में सो रहे थे। रात दो बजे उसकी बहू प्रिया की आंख खुली तो उसने देखा कि दीवाल में सेंध लगाया गया है। शोर मचाने पर आसपास के लोग दौड़े तो देखा कि घर में रखा हुआ कीमती जेवरात, दो हजार नगदी व मोबाइल गायब है। पीड़ित ने घटना की सूचना डायल हंड्रेड को दिया। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

सड़क हादसे में घायल अधेड़ की इलाज के दौरान मौत

पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिये भेजा

पट्टी, प्रतापगढ़। तहसील क्षेत्र के आसपुर देवसरा थाना अंतर्गत बैजलपुर गांव के रहने वाले रतीराम तिवारी (45) सोमवार की रात करीब आठ बजे प्रतापगढ़ जिला मुख्यालय से अपना काम निपटा कर घर लौट रहे थे। इस दौरान पट्टी थाना क्षेत्र के सदहा पावर हाउस के समीप किसी अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दिया जिससे वह सड़क के किनारे गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। इस दौरान आसपास के लोगों ने उनके मोबाइल से घरवालों को घटना की सूचना दी। जानकारी होने पर परिजन घटनास्थल पर पहुंचे और घायल को इलाज के लिए जिला अस्पताल ले गए जहां पर इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मौत के बाद परिजन शव लेकर घर रात में ही चले गए थे। सुबह ग्राम प्रधान के साथ परिजन शव लेकर पट्टी कोतवाली आए जहां से पुलिस से पीएम कराए जाने की मांग की, जिस पर पट्टी कोतवाली के इंस्पेक्टर गणेश प्रसाद सिंह ने उन्हें बताया कि घटनास्थल पट्टी थाना क्षेत्र अंतर्गत आता है, जिस पर परिजन शव लेकर पट्टी थाने गए और वहां से पुलिस ने शव का पंचनामा कर पीएम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया है। वहीं घटना के बाद मृतक के घर पर कोहराम मचा हुआ है।

सड़क दुर्घटना में उपचार के दौरान मामा की मौत

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज लखनऊ नेशनल हाइवे पर सोमवार की शाम लगभग 6 बजे सड़क दुर्घटना में मामा-भांजा घायल हो गये जहां इलाज के दौरान मामा की मौत हो गई। मालूम हो कि कोतवाली डलमऊ रायबरेली के सड़क घाट निवासी रोहित कुमार शुक्ला पुत्र मुन्नूलाल मिश्रा (28) वर्षीय बाइक से अपने भांजे रितिक मिश्रा पुत्र गौरी शंकर मिश्रा (17) वर्षीय के साथ बहन के यहां दारागंज बड़ी कोठी प्रयागराज राखी बंधवाने जा रहे थे कि थाना क्षेत्र के आलापुर खोवा मंडी के पास पीछे से आ रही ट्रक ने साइड से टक्कर मार दिया जिससे दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की जानकारी मिलते ही एस आई सुरेंद्र सिंह अपने हम राही के साथ मौके पर पहुचे और दोनों घायलों को सीएचसी कालाकांकर ले गए जहां चिकित्सकों ने रायबरेली के लिए रिफर कर दिया। जहाँ उपचार के दौरान रोहित की मौत हो गई। मौत की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस ने ट्रक को कब्जे में ले लिया।

जनता का आशीर्वाद है सपा के साथ : संजय चौहान

भाजपा हटाओ प्रदेश बचाओं यात्रा का जगह-जगह हुआ स्वागत, कहा 2022 में यूपी में बनेगी सपा की सरकार

अखंड भारत संदेश

भदोही। यूपी के विधान सभा चुनाव की घोषणा में भले ही अभी कुछ महीनों की देरी है, लेकिन चुनाव की सरगर्मी अभी से ही दिखने लगी है। इसकी एक बानगी मंगलवार को जिले में दिखाई दी।

जहां पर भाजपा हटाओ प्रदेश बचाओं यात्रा पर निकले समाजवादी पार्टी के साथ जुड़ चुकी जनवादी सोसलिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा संजय सिंह चौहान का जिले की दक्षिणी सीमा से लेकर जगह-जगह सपा के लोगों द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। औराई में सपा की पूर्व विधायक मधुबाला पासी के नेतृत्व में फूल मालाओं से स्वागत किया गया। इस दौरान पूर्व विधायक जाहिद बेग, जिलाध्यक्ष विकास यादव सहित काफी संख्या में लोग मौजूद रहे। उन्होंने कार्यकर्ताओं में जोश भरा। कहा भाजपा के झूठ और अत्याचार से जनता ऊब चुकी है। जनता अब सपा के साथ है और अगली सरकार अखिलेश यादव के नेतृत्व में बनने जा रही है। संवरपुर में सभा कर भाजपा सरकार को जनविरोधी बताते हुए पूर्व की सपा सरकार की योजनाओ को गिनाया। अभयनपुर स्थित स्व. शिवकरण यादव के कालीन प्रतिष्ठान में प्रेस वार्ता कर भाजपा हटाओं प्रदेश बचाओं यात्रा का उद्देश्य बताया। कहा कि 16 अगस्त को बलिया से यात्रा निकाला है।

जो प्रदेश भ्रमण कर 2 सितंबर को लखनऊ में समापन होगा। यात्रा सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर निकाला जा रहा है। कहा कि जनवादी पार्टी सोसलिस्ट व सपा मिल कर 2022 विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज करेंगी। वार्ता में भाजपा सरकार में बैठे लोगों पर कटाक्ष करते कहा कि भाजपा 2022 चुनाव में आशीर्वाद मांग रही है। लेकिन समझ में नही आ रहा कि जनता कैसे आशीर्वाद देगी।

कोरोना में ऑक्सीजन के आभाव में कितने गरीब मरीज दम तोड़ दिये। जिला पंचायत चुनाव में कुर्सी के लिए महिलाओं के वस्त्र उतार कर रुसवा किया गया। मंहगाई ने सभी हदे पार कर दिया। कहा कि भाजपा सरकार के पूंजी पतियों से प्रेम प्रदेश की जनता समझ चूकी है। जनता सपा की सरकार बनाने के संकेत दे रही है। भाजपा सरकार के चुनाव में किये गये वादो को पूरा न करने को लेकर जनता नाराज है। इस दौरान ओमकार चौहान, संतोष चौहान, मो. आरिफ सिद्दीकी, शोभनाथ यादव, पन्ना लाल यादव, विनोद यादव, बिंदु सरोज, देवा जायसवाल, रवि शिवकरन यादव, श्यामधर यादव, नान्हक यादव, मुन्ना यादव, राजकुमार चौहान, त्रिभुवन चौहान, रामयज्ञ पाल, विनोद शुक्ला, सनवरुल हक, महेंद्र पासी, कल्लू सिंह, सीताराम यादव, डॉ कलाम बिंद, श्यामधर यादव प्रधान, संतोष यादव, काजू चौधरी, गुड्डू मिश्रा, शिशु सिंह, संजय सिंह, सूबेदार विश्वकर्मा, बैजनाथ यादव, चेयरमैन खमरिया नंद कुमार मौर्या, जितेंद्र यादव आदि रहे।

पीएमओ कार्यालय ने मामले का लिया संज्ञान

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। निलंबित सचिव नितिश वर्मा का फंड ट्रांसफर आर्डर से 45.33 लाख रुपये ट्रांसफर के मामले में शिव शक्ति ट्रेडर्स समेत पांच फर्मो पर भी शिकंजा कस गया है। वाणिज्यकर विभाग ने चारो फर्म का जीएसटी नंबर मांगा है। एडीओ अजय पांडेय के मामले में पीएमओ कार्यालय तक शिकातय पहुंची है। जिसको पीएमओ ने भी संज्ञान लेकर जांच का निर्देश दिया है। इससे विभागीय अधिकारियों में खलबली मच गई है।

विकास खंड डीघ में तैनात सहायक विकास अधिकारी पंचायत ने निलंबित सचिव के एफटीओ से 11 ग्राम पंचायतों में 45.33 लाख रूपये चहेती फर्मों के खाते में भेज दिया। अपने खास फर्म शिव शक्ति को एक मुश्त 33 लाख रूपये का भुगतान किया गया। यह फर्म एक रोजगार सेवक के भाई के नाम है। कौलापुर स्थित इसके कार्यालय पर ब्लॉक के सभी प्रधानों और सचिवों का जमावड़ा लगता था। चारो फर्मो के खिलाफ जांच के लिए मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह ने वाणिज्यकर विभाग को पत्र लिखा है। जिसमें जीएसटी नंबर न होने पर वाणिज्यकर विभाग ने उसकी मांग की है। सहायक आयुक्त वाणिज्यकर संजय कुमार सिंह ने बताया कि सीडीओ का पत्र आने के बाद जांच शुरू की गई, लेकिन जीएसटी नंबर न होने से फर्मों का लेखाजोखा नहीं मिल पा रहा है। इसलिए पत्र भेजकर शिवशक्ति ट्रेडर्स, यश इंटरप्राइजेज, यादव विल्डिंग मटेरियल, टीएस ईंट उद्योग का जीएसटी नंबर मांगा है। नंबर मिलने पर जांच आगे बढ़ेगी। वहीं दूसरी ओर सोनैचा गांव निवासी अधिवक्ता योगेश कुमार पांडेय ने प्रधानमंत्री कार्यालय पत्र भेजकर एडीओ डीघ के प्रकरण में निष्पक्ष कार्रवाई की मांग की। जिसमें आरोप लगाया कि विकास भवन के एक अधिकारी के संलिप्तता के कारण डीडीओ की जांच रिपोर्ट आने के बाद भी कार्रवाई नहीं हो रही है। उक्त शिकायत को पीएमओ ने संज्ञान लिया। प्रकरण में दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

ई-श्रम पंजीकरण की जागरूकता के लिए लगाया गया कैंप

नपा भदोही में कैंप लगाकर किया जाएगा मजदूरों का पंजीकरण

अखंड भारत संदेश

भदोही। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय भारत सरकार द्वारा ई-श्रम पंजीकरण के लिए मंगलवार को रेलवे स्टेशन के पास कैंप लगाया गया। कैंप लगाकर मजदूरों को पंजीकरण के लिए जागरूक किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में नगर पालिका परिषद अध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल मौजूद रहे।इस दौरान बताया गया है 25 अगस्त दिन बुधवार को समय 10 बजें से सायं 4 बजे तक नगर पालिका परिषद में विभाग द्वारा कैंप लगाया जाएगा। जिसमे असंगठित श्रमिको को जैसे छोटे सीमांत किसान, खेतिहर मजदूर, मछुआरों, पशुपालन में लगे लोगों तथा बीड़ी रोलिंग, लेबलिंग और पैकिंग, भवन निर्माण श्रमिक, चमड़े के कर्मचारी, बुनकर, बढ़ई, नमक कर्मचारी, ईट भट्ठों और खदानों में काम करने वाले मजदूर, सब्जी, फल बेचने वाले, समाचार पत्र विक्रेता, रिक्शा चालक,ऑटो चालक दूध बेचने वाले आदि लोगों का निःशुल्क पंजीकरण कराया जाएगा। इन कामों में लगे लोग आधार कार्ड, बैंक पासबुक, पास पोर्ट साइज के दो फोटो व अपना मोबाइल नंबर देकर पंजीकरण करा सकते हैं। इस मौके पर प्रिंस गुप्ता, हेमंत सोनकर, आशीष जायसवाल, कौशलेंद्र श्रीवास्तव, आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

फरियादियों की शिकायतों का अतिशीघ्र हो निस्तारण : डीएम

भदोही। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने आज कलेक्ट्रेट स्थित अपने कक्ष में जनता दर्शन में आये जन सामान्य की कोविड-19 की टेस्टिंग कराने के पश्चात सोशल डिस्टेंसिंग का अनुपालन कराते हुए जन सामान्य की समस्याओं/शिकायतों को गम्भीरता पूर्वक सुनकर उसका समय से निस्तारण हेतु सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया। जिलाधिकारी ने जनता दर्शन में प्राप्त प्रार्थना पत्रो को संबंधित अधिकारियों को निस्तारण हेतु प्रेषण करने के निर्देश उपस्थित अधिकारियों को दिये। उन्होंने निर्देशित किया कि संबंधित अधिकारी प्राप्त शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर करना सुनिश्चित करें। इसमें किसी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जायेगी।

एसपी संग जिलाधिकारी ने परीक्षा केंद्रों का किया निरीक्षण

कंट्रोल रूम में लगे सीसी कैमरे से की परीक्षा कक्षों की मॉनीटरिंग

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। जिले में आयोजित उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग प्रारम्भिक परीक्षा पीईटी केन्द्रों का जिलाधिकारी आर्यका अखौरी एवं पुलिस अधीक्षक रामबदन सिंह ने निरीक्षण कर जायजा लिया।अधिकारी द्वय ने पीईटी परीक्षा की प्रथम पाली में परीक्षा केन्द्र काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर, विभूति नारायण राजकीय इंटर कॉलेज ज्ञानपुर का निरीक्षण किया। इस दौरान जिलाधिकारी ने पीईटी परीक्षा केन्द्र के कंट्रोल रूम में जाकर सीसी कैमरा के द्वारा परीक्षा कक्षों की मॉनीटरिंग भी की। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने मुख्य बिन्दुओं पर जानकारी लेकर आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि पूरी परीक्षा नकल विहीन व शुचिता पूर्ण होनी चाहिए। परीक्षा कराए जाने में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। कहा कि पूरी परीक्षा निष्पक्षता के साथ होनी चाहिए। अराजक तत्व व नकल विहीन परीक्षा कराने में बाधा डालने वाले तत्वों पर कड़ी नजर रखी जाए और कमी पाए जाने पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाए। इस संबंध में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने परीक्षा केन्द्रों पर तैनात स्टैटिक मजिस्ट्रेट, सेक्टर मजिस्टेड्ट को एलर्ट रहकर शांतिपूर्ण ढ़ंग से परीक्षा सम्पन्न कराने के दिए निर्देश।

मतदान स्थलों के संभाजन हेतु हुई बैठक

अखंड भारत संदेश

भदोही। आगामी विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2022 के दृष्टिगत मतदान स्थलों के संभाजन हेतु अपर जिला निर्वाचन अधिकारी/अपर जिला मजिस्ट्रेट शैलेन्द्र कुमार मिश्रा, विधायक भदोही रवीन्द्र नाथ त्रिपाठी, विधायक औराई दीनानाथ भाष्कर की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक हुई। इस दौरान बताया गया कि भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों के अनुरूप मतदेय स्थलों के संभाजन 1200 मतदाताओं के आधार पर किए जाने का निर्देश है।मतदेय स्थलों की नई सूची में कोई सहायक मतदान स्थल नहीं रखा जाएगा। विशेष परिस्थितियों में अत्यधिक पुरानी व जर्जर भवन वाले मतदान स्थलों को ही मतदान क्षेत्र के अंतर्गत उपलब्ध स्थाई भवन में स्थानांतरित किया जा सकता है। किसी भी राजनीतिक दल या लेबर यूनियन के कार्यालय से 200 मीटर के अंदर कोई भी मतदान स्थल नहीं बनाया जाएगा। यह भी सुनिश्चित कर लिया जाएगा कि मतदेय स्थलों के संभाजनी के पश्चात मतदेय स्थलों के स्थान में अंतिम क्षणों में परिवर्तन न रह जाए। बैठक में राजनीतिक दलों से भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुरूप मतदेय स्थलों के संभाजन में सहयोग की अपेक्षा की गई। बैठक में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ अपर उप जिलाधिकारी ज्ञानप्रकाश, जिला सूचना अधिकारी प्रवीण मालवीय एवं अधिकारीगण एवं सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

मतदेय स्थलः 31 अगस्त तक दर्ज करायें आपत्ति

भदोही। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) शैलेन्द्र कुमार मिश्र ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जनपद में अवस्थित 392-भदोही, 393-ज्ञानपुर एवं 394-औराई (अ0जा0) विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के मतदेय स्थलों का आलेख्य प्रकाशन आज दिनांक 24 अगस्त को कर दिया गया है। सर्वसाधारण से अपील है कि मतदेय स्थल के संबंध में यदि कोई दावा/आपत्ति हो तो लिखित रूप से सम्बान्धित उप जिलाधिकारी/निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को विलम्बतम दिनांक 31 अगस्त 2021 तक अवश्य उपलब्ध करा दें। उक्त आलेख्य प्रकाशित मतदेय स्थल सूची जिला निर्वाचन कार्यालय एवं समस्त तहसीलों में निःशुल्क निरीक्षण हेतु एक सप्ताह तक उपलब्ध रहेगी।

पूर्व मुख्यमंत्री को दी गई श्रद्धांजलि

अखंड भारत संदेश

भदोही। प्रदेश सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री एवं राजस्थान के राज्यपाल कल्याण सिंह के निधन पर मंगलवार को नगर पालिका परिषद में शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अंत में दो मिनट का मौन रख गतात्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। इस मौके पर पालिकाध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल, सभासद करुणा शंकर दुबे, मुन्नीलाल यादव, मुगीस कलाम, प्रिंस गुप्ता, अवर अभियंता सिविल दिनेश सिंह, अवर अभियंता जलकर प्रदीप यादव व मुख्य लिपिक पुल्लू यादव आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

इसी क्रम में भाजपा जिला कार्यालय पर पूर्व मुख्यमंत्री स्व. कल्याण सिंह जी शोक सभा आयोजित की गई। इस शोक सभा में भारतीय जनता पार्टी के जिले के सभी सम्मानित पदाधिकारी नेता व कार्यकर्ता गण उपस्थित रहे। इसकी अध्यक्षता जिले के भाजपा जिला अध्यक्ष विनय श्रीवास्तव द्वारा की गई। उक्त कार्यक्रम में सभी नेताओं ने और कार्यकर्ताओं ने कल्याण सिंह जी के विषय में अपने अपने शब्दों में वर्णन किया साथ ही 2 मिनट का मौन रखकर सभी ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। इसी पंक्ति में विनय श्रीवास्तव जी ने उनके जीवनी पर प्रकाश डाला तो, वही वरिष्ठ भाजपा नेता राहुल चतुर्वेदी ने कल्याण सिंह जी के द्वारा किए गए कार्यों का गुणगान करते हुए कहा कि श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर की आधारशिला रखने वाले कल्याण सिंह जी ही थे। उन्होंने लाखो दबावों के बाद भी कारसेवकों पर गोलीबारी नही करवाई, ऐसे महान नेता सदी में कभी कभी जन्मलेते है।, उनके जीवन को याद कर सभी की आंखे नम हो गयी।

खुले स्कूल, स्वयंसेवी संस्था ने बच्चों में बांटा मास्क

अखंड भारत संदेश

भदोही। शासनादेश के मुताबिक मंगलवार को कक्षा 6 से 8 तक के विद्यालयों को चार माह बाद खोला गया। जिसमें प्रथम दिन ज्ञानपुर विकासखंड के गडेरियापुर में केएसआरजे पब्लिक स्कूल में बच्चों में, स्वयंसेवी संस्था माय होम इंडिया के यूनिट भदोही द्वारा कोविड-19 के गाइडलाइन के बारे में बच्चों को जागरूक करने के साथ ही उनमें मास्क का वितरण किया गया। छात्रों ने मास्क पाकर जहां हर्ष व्यक्त किया। वहीं विद्यालय प्रशासन द्वारा संस्था का आभार प्रकट किया गया। बताया जाता है कि कोरोना संक्रमण काल के शुरुआत से ही, स्वयंसेवी संस्था द्वारा लगातार कार्य किया जा रहा है। शुरुआत में सैंपलिंग का कार्य किया जा रहा है था जो अभी भी जारी है। अनेकों गांव में कैंप लगाकर सैंपलिंग का कार्य कराया गया। वैक्सीनेशन में भी बढ़-चढ़कर के संस्था के कार्यकर्ता सहयोग कर रहे हैं। मास्क वितरण के दौरान प्रबंधक पीयूष कुमार, प्रधानाचार्य हितेंद्र कुमार, शिक्षक शिवलाल मौर्य, विजय यादव सहित स्वयंसेवी संस्था के कार्यकर्ता आदि मौजूद रहे।

संस्कृत संस्कारों की भाषा है : डा. माया

संस्कृत को घर-घर पहुंचाना है, भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाना है:जटाशंकर

पूर्व माध्यमिक विद्यालय महराजगंज औराई में आयोजित हुआ संस्कृत सप्ताह

अखंड भारत संदेश

घोसिया/भदोही। औराई क्षेत्र अन्तर्गत पूर्व माध्यमिक विद्यालय महराजगंज औराई में संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसमें सेवानिवृत्त प्राध्यापक जटाशंकर मिश्र की अध्यक्षता में कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा निबंध, श्लोकवाचन, संभाषण, चित्रकला तथा संस्कृत गीत प्रस्तुत किया गया। संस्कृत प्रतिदिन के जीवनोपयोगी सामग्री की लघु प्रदर्शिनी लगाई गयी जो सभी के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। बच्चों सहित शिक्षकों अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक प्रदर्शिनी को देखा। संस्कृत के नये नये शब्दों की जानकारी प्राप्त किया गया।

इस अवसर पर संस्कृत भारती काशी प्रांत की भदोही प्रचार प्रमुख डा. माया त्रिपाठी ने विस्तार पूर्वक संस्कृत भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा संस्कृत संस्कारों की भाषा है, गर्भाधान से लेकर मृत्युपरांत मानवीय मूल्यों से युक्त पूरे जीवन का आदर्श इसी भाषा द्वारा संभव है। कहा कि संस्कृत सेवा भारत माता की सेवा है। हम सभी को मिल-जुल कर संस्कृत की सेवा के लिए आगे बढ़ना होगा, तभी हम पुनः विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त कर पायेंगे। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाध्यापक विनोद चन्द्र द्विवेदी ने कहा कि संस्कृत में ही हमारा ज्ञान विज्ञान समाहित है, अतः इसे हमारे भावी कर्णधार अर्थात बच्चे हीं व्यवहारिक जीवन में उपयोग कर समृद्ध भारत का निर्माण करेंगे। वरिष्ठ अध्यापिका अनीता पाण्डेय, चन्द्रशेखर तिवारी, रामचन्द्र चतुर्वेदी, अंशु, विनीता, प्रभाकर गिरि, रमेश ने कार्यक्रम में अपने आशीर्वचनों से बच्चों का उत्साहवर्धन किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विद्वान जटाशंकर मिश्रा ने कहा कि संस्कृत को घर-घर पहुंचाना है, भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाना है।

सम्पादकीय

फिर निशाने पर भारतीय

अगर वाकई ऐसा है तो इस मामले में विदेश मंत्रालय को दखल देना चाहिए। उसे ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि ओसीआई कार्ड बनवाने में लोगों को कोई परेशानी न हो। इसके साथ उसे कुछ और बातों पर ध्यान देना होगा। दक्षिण अफ्रीका में पिछले महीने हिंसा और लूटपाट का शिकार हुआ भारतीय समुदाय एक बार फिर खुद को उन्हीं परिस्थितियों से घिरता महसूस कर रहा है। पूर्व राष्ट्रपति जैकब जुमा की गिरफ्तारी को लेकर वहां के दो प्रांतों- क्वाजुलु नटाल और गौतेंग- में हुई हिंसा में कम से कम 330 लोग मारे गए थे, जिनमें भारतीय भी थे। तब लूटपाट में भारतीयों के होटलों, दुकानों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भी निशाना बनाया गया था। यही वजह है कि हिंसा का वह दौर थमने के करीब एक महीने बाद जब दोबारा हिंसा भड़कने के आसार बनते दिखाई दे रहे हैं तो साउथ अफ्रीका में रहने वाले 13 लाख भारतीय समुदाय के लोगों में डर और बेचैनी है। असल में, पिछले कुछ दिनों से वहां भारतीय समुदाय के लोगों को वॉट्सऐप संदेशों और विडियो के जरिए धमकाया जा रहा है। उनसे देश छोड़ने को कहा जा रहा है। नतीजतन, ओवरसीज सिटिजंस ऑफ इंडिया (ओसीआई) कार्ड के लिए आवेदन करने वालों की संख्या अचानक काफी बढ़ गई है, लेकिन इसमें भी दिक्कत आ रही है। वहां जो भारतीय रह रहे हैं, उनमें से ज्यादातर के पूर्वजों को 150 साल पहले अंग्रेज अपने खेतों में मजदूरी कराने ले गए थे। उस यात्रा के दस्तावेज अब शायद ही उनके पास हों। आरोप है कि ऐसी सूरत में ओसीआई कार्ड को लेकर दूतावास से बहुत मदद नहीं मिल रही।

अगर वाकई ऐसा है तो इस मामले में विदेश मंत्रालय को दखल देना चाहिए। उसे ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि ओसीआई कार्ड बनवाने में लोगों को कोई परेशानी न हो। इसके साथ उसे कुछ और बातों पर ध्यान देना होगा। पिछले महीने जूमा की गिरफ्तारी के बाद हिंसा को रोकने के लिए पहले तो दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने समय रहते सेना को तैनात नहीं किया। दूसरी बात यह है कि हिंसा प्रभावित लोगों ने तब पुलिस और सेना पर सहयोग नहीं देने का भी आरोप लगाया था। अब अगर फिर से भारतीयों को हिंसा की धमकी दी जा रही है तो विदेश मंत्रालय पहल करके यह सुनिश्चित कर सकता है कि पिछली बार जैसी गलतियां न दोहराई जाएं। साउथ अफ्रीका सरकार ने पिछली बार यह स्पष्टीकरण दिया था कि हिंसा और लूटपाट की घटनाओं के पीछे अपराधी मानसिकता है, नस्लवादी सोच नहीं।

शायद यह बात ठीक हो, लेकिन अगर विभिन्न समुदायों के बीच दरार हिंसा तक पहुंच गई है तो इसके लिए इनके बीच की दूरियां मिटानी होंगी। इसमें सरकार और सिविल सोसाइटी की बड़ी भूमिका हो सकती है। इस संदर्भ में डरबन में रहने वाली महात्मा गांधी की पौत्री इला गांधी की पहल सराहनीय है। वह सभी समुदायों को साथ लेकर अमन की कोशिश कर रही हैं। लंबी अवधि में इस दरार को खत्म करने के लिए दक्षिण अफ्रीका की सरकार को अपने यहां की सामाजिक और आर्थिक गैर-बराबरी में कमी लाने की कोशिश करनी होगी।

दक्षिण चीन सागर में चीन को रोकना होगा

रंजीत कुमार

यह महज संयोग नहीं कि जब भारतीय नौसेना के चार सबसे ताकतवर युद्धपोत दक्षिण चीन सागर के मुहाने पर दस्तक दे रहे थे, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई में संयुक्त राष्ट्र के प्रभावशाली सदस्यों ने एक स्वर से चीन को आगाह किया कि वह अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानूनों का पालन करे। इन दिनों दक्षिण चीन सागर में विनाशकारी मिसाइलों से लैस चार बड़े भारतीय युद्धपोत विचरण कर रहे हैं, जिनकी योजना अगले दो महीनों में दक्षिण पूर्वी एशिया के तटीय देशों वियतनाम, फिलीपींस, सिंगापुर और इंडोनेशिया के साथ साझा नौसैनिक युद्धाभ्यास करने की है। इसके बाद ये पोत पश्चिमी प्रशांत में जाकर अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ साझा मालाबार नौसैनिक युद्धाभ्यास भी करेंगे। चीनी की समुद्री सीमा के करीब भारतीय नौसैना अन्य देशों के साथ इस तरह अपना शक्ति प्रदर्शन पिछले कई सालों से कर रही है। दक्षिण चीन सागर में सैनिक या व्यापारिक पोतों की खुली आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए ही भारत हिंद-प्रशांत इलाके की अन्य बड़ी नौसैनिक ताकतों के साथ खड़े होकर चीन को ललकार रहा है, लेकिन चीन की भी हेकड़ी बढ़ती जा रही है। नतीजतन, दक्षिण चीन सागर में तनाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। दक्षिण चीन सागर का चीन पर नामकरण उसी तरह किया गया है, जिस तरह भारत के निकट के सागरीय इलाके को हिंद महासागर या इंडियन ओशन कहा जाता है। जिस तरह इंडियन ओशन भारत का नहीं है, उसी तरह दक्षिण चीन सागर भी चीन का नहीं है लेकिन चीन ने इस इलाके में एक काल्पनिक नाइन-डैश लाइन खींचकर उसके अंदर आने वाले सभी समुद्री इलाकों पर अपना दावा ठोक दिया है। इस इलाके में विदेशी पोतों के विचरण करने पर फिलहाल तो चीन केवल एतराज ही करता है, लेकिन यदि वह अपना प्रभुत्व जमाने में कामयाब हो गया तो भविष्य में इधर से किसी पोत के गुजरने पर रोक-टोक भी कर सकता है। भारत सहित दुनिया की बड़ी नौसैनिक ताकतों ने चीन के इन दावों को नजरअंदाज किया है। वे अक्सर युद्धपोत वहां भेजकर चीन को आगाह करते रहते हैं कि यह अंतरराष्ट्रीय समुद्री इलाका है, जहां संयुक्त राष्ट्र की समुद्री कानून संधि (अनक्लास) के तहत सभी विदेशी पोतों को खुली आवाजाही की छूट है। यही जताने के लिए पिछले 2 अगस्त को जर्मनी ने दो दशक बाद पहली बार अपना एक फ्रिगेट दक्षिण चीन सागर के इलाके में तैनात किया। इसके पहले ब्रिटेन ने अपना नया विमानवाहक पोत एलिजाबेथ दक्षिण चीन सागर के इलाके में भेज कर चीन को चिढ़ाया था। अमेरिका ने भी पिछले महीने अपने विमानवाहक पोतों का विशाल बेड़ा वहां भेजा था। जापान, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया के युद्धपोत भी इस इलाके में भेजे जाते रहे हैं।

इन विदेशी पोतों के जवाब में चीन ने अगस्त के दूसरे सप्ताह में अपने कई युद्धपोतों को उतारकर एक बड़ा नौसैनिक अभ्यास किया। ध्यान रहे, पूर्वी चीन सागर में भी चीन ने जापान के साथ द्वीपों के स्वामित्व को लेकर विवाद छेड़ा हुआ है। ठीक इन्हीं दिनों जब भारतीय युद्धपोतों ने दक्षिण चीन सागर में प्रवेश किया तो चीन ने अप्रत्यक्ष चेतावनी भरे लहजे में उम्मीद जताई कि कोई देश शांति भंग करने की कार्रवाई नहीं करेगा। साफ है कि इस इलाके को लेकर चीन और अन्य क्षेत्रीय व बड़ी ताकतों के बीच जोर आजमाइश तेज होने लगी है। यदि दक्षिण चीन सागर के इलाके पर चीन के स्वामित्व के दावे को आज खारिज नहीं किया गया तो बाद में वह न केवल भारत बल्कि सभी विदेशी पोतों की आवाजाही को नियंत्रित कर सकता है। इस इलाके का अंतरराष्ट्रीय आवागमन के लिए खुला रहना इसलिए भी अहम है क्योंकि व्यापारिक पोतों के जरिए भारत का आधे से अधिक आयात-निर्यात इसी रास्ते से होता है। यदि दक्षिण चीन सागर के इलाके पर चीन के अधिकार के दावे को आज गैरकानूनी नहीं ठहराया गया तो वह बाद में इस इलाके से सैनिक पोतों की आवाजाही को पूरी तरह रोकने का अधिकार हासिल कर सकता है और व्यापारिक पोतों पर टैक्स लगाने का अधिकार भी ले सकता है। भारत के लिए विशेष चिंता की बात इसलिए है क्योंकि तनाव की स्थिति में चीन भारत के इस मार्ग से होने वाले आधे से अधिक व्यापार पर रोक लगा कर उसकी अर्थव्यवस्था का भट्ठा बैठा सकता है।दक्षिण चीन सागर जैसे समृद्ध इलाके पर चीन की ललचाई निगाह इसलिए पड़ी है कि यह दुनिया का सबसे व्यस्त व्यापारिक मार्ग है, जहां से दुनिया के व्यापार का पांचवां हिस्सा गुजरता है। 36 लाख वर्ग किलोमीटर में फैले इस इलाके में 900 ट्रिलियन घन फीट प्राकृतिक गैस और सात अरब बैरल खनिज तेल है। इसके अलावा इस इलाके से दुनिया का कुल 12 प्रतिशत मछली व्यापार होता है। इस विशाल प्राकृतिक संपदा पर एकाधिकार जमाने के लिए ही चीन ने वियतनाम, फिलीपींस, इंडोनेशिया, ब्रुनेई और ताइवान के साथ प्रादेशिक इलाकाई विवाद छेड़ रखा है और इस इलाके में कृत्रिम द्वीपों का निर्माण कर अपने समुद्री इलाके का कानूनी विस्तार करने की रणनीति अपना रहा है।दक्षिण चीन सागर और पूर्वी चीन सागर में चीन की इस दादागीरी को निरस्त करने के मकसद से भारत ने अन्य ताकतवर देशों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की मौजूदा अध्यक्षता अवधि में समुद्री सुरक्षा पर विशेष बैठक का आयोजन किया। जिस तरह चीन के दोस्त रूस ने भी इस बैठक में पारित साझा प्रस्ताव में भारतीय मसौदे का समर्थन किया, उससे चीन को समझ लेना चाहिए कि उसकी विस्तारवादी नीतियों से उसके साथी देश भी चिंतित हैं। इससे दुनिया में तनाव का माहौल पैदा होने लगा है, जिससे चीन की छवि एक दुष्ट राष्ट्र जैसी बनती जा रही है।

एक रामभक्त का दूसरे को अभूतपूर्व सम्मान

गिरीश पांडेय

दिग्गज भाजपा नेता, राजस्थान के पूर्व राज्यपाल और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जो रिश्ता निभाया है, वह खुद में अकल्पनीय और अनुकरणीय है। स्मृतिशेष पूर्व मुख्यमंत्री के गंभीर रूप से बीमार पड़ने से लेकर उनके अंतिम सांस लेने तक बेहतर से बेहतर इलाज कराने की तत्परता। अति व्यस्ततम दिनचर्या में भी समय-समय पर उनके पास खुद पहुंचकर हाल जानने की व्यग्रता और लाख प्रयास के बाद भी कल्याण सिंह का जीवन न बचा पाने पर उनकी अंतिम विदाई को इतिहास के पन्नों में दर्ज कराने की पहल। यह सब जब भी कल्याण सिंह का स्मरण दिलाएगा, उनके प्रति सीएम योगी के ये मनोभाव आप ही याद आ जाएंगे।पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के बीमार कुछ होने पर उन्हें करीब डेढ़ महीने पूर्व लखनऊ के राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया। 4 जुलाई को उनकी स्थिति गंभीर होने की जानकारी मिलते ही उसी दिन पूर्वाह्न मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उनका हालचाल लेने वहां पहुंच गए। उन्होंने डॉक्टरों से पूर्व मुख्यमंत्री के स्वास्थ्य के बारे में बातचीत की और बेहतर के लिए मुख्यमंत्री की पहल पर कल्याण सिंह को उसी दिन शाम तक एसजीपीजीआई के क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग में शिफ्ट किया गया। तब से लेकर उनके स्मृति शेष होने तक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इलाज कर रहे विशेषज्ञों से नियमित उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेते रहे। नियमित अन्तराल पर वह उनका हालचाल लेने पीजीआई जाते रहे।ॉक्टरों को निर्देशित करते रहे कि इलाज में किसी प्रकार की कमी नहीं आनी चाहिए। कल्याण सिंह के स्वास्थ्य लाभ को लेकर सीएम योगी इतने संवेदनशील रहे कि शुक्रवार को जब उन्हें पता चला कि पूर्व मुख्यमंत्री की तबियत अचानक अधिक बिगड़ गई है तो दिल्ली में पार्टी नेतृत्व से मुलाकात के बाद लखनऊ लौटते ही वह एयरपोर्ट से सीधे पीजीआई ही गए। शनिवार को दोपहर बाद अपने सभी कार्यक्रमों को निरस्त कर वह कल्याण सिंह का हाल जानने पीजीआई गए और निधन की सूचना मिलते ही फौरन अस्पताल पहुंचे। कल्याण सिंह के बीमार होने पर उनके लिए जितना मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया, वह अकल्पनीय है। खुद कल्याण सिंह ने भी कभी ऐसा नहीं सोचा होगा। लेकिन सच यही है। लोग इसे स्वीकार भी कर रहे हैं। कह रहे हैं कि रस्मअदायगी के इस दौर में भी कुछ लोग अपने जैसे होते हैं। कभी-कभी तो उनसे भी बढ़कर।कल्याण सिंह से सीएम योगी का दिली जुड़ाव सिर्फ उनके इलाज तक ही सीमित नहीं रहा। उनके गोलोकवासी होने पर उनकी अंतिम विदाई की कमान योगी ने खुद संभाल रखी है। स्मृतिशेष सिंह की यशकीर्ति को प्रतिष्ठित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कैबिनेट में सहयोगी मंत्रियों की अलग अलग ड्यूटी लगाई है तो पूरी व्यवस्था की बागडोर खुद अपने हाथों में रखी है। शनिवार रात कल्याण सिंह के पार्थिव शरीर के साथ वह उनके आवास पहुंचे। यहां उन्होंने कैबिनेट मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य को व्यवस्था देखने को लगाया। रविवार को कल्याण सिंह का पार्थिव शरीर पहले विधानभवन और फिर पार्टी कार्यालय पर अंतिम प्रणाम को रखा गया। सीएम योगी ने विधानभवन पर कैबिनेट मंत्रीद्वय सुरेश खन्ना और सिद्धार्थनाथ सिंह तथा प्रदेश कार्यालय पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह को जिम्मेदारी दी थी। कल्याण सिंह का अंतिम संस्कार अलीगढ़ में सोमवार को होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को ही वहाँ पहुंच गए है और अंतिम संस्कार से जुड़ी सभी तैयारियां अपनी देखरेख में करा रहे हैं। अलीगढ़ में उन्होंने स्वर्गीय सिंह की अंतिम विदाई की तैयारियों में कैबिनेट मंत्री सुरेश सिंह राणा को लगाया तो अतरौली (कल्याण सिंह का गांव) में अशोक कटारिया को।

पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह और वर्तमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के इस रिश्ते के पीछे शायद भगवान श्रीराम की मर्जी रही हो। बीमार पड़ने पर इलाज से लेकर दिवंगत होने पर ऐतिहासिक अंतिम विदाई तक, 'राम काजु' के एक सेवक ने दूसरे को अभूतपूर्व सम्मान दिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जिस गोरक्षपीठ (गोरखपुर) के पीठाधीश्वर है उसकी तीन पीढ़ियां (ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ, ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ और मुख्यमंत्री के रूप में मौजूदा पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ) राम मंदिर आंदोलन से जुड़ी रहीं। यकीनन पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय कल्याण सिंह, राम मंदिर आंदोलन के अग्रणी नेताओं में थे। मंदिर के लिए सत्ता छोड़ने में उन्होंने एक क्षण भी नहीं लगाया। राम मंदिर आंदोलन इस जुड़ाव की एक स्वाभाविक वजह है।राम मंदिर आंदोलन जब शीर्ष पर था तो अयोध्या से पास होने और इससे पीठ के जुड़ाव, इस आंदोलन के अगुआ परमहंस दास, अशोक सिंघल आदि से बड़े महाराज (ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ) के आत्मीय रिश्ते के कारण गोरखनाथ मंदिर इस आंदोलन का केंद्र बन गया था। मंदिर आंदोलन पीठ की इस केंद्रीय भूमिका के नाते के राम के नाम पर सत्ता कुर्बान करने वाले कल्याण सिंह का खास लगाव था। वह बड़े महाराज ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ का बहुत सम्मान करते थे। यही वजह है कि जब भी गोरखपुर जाते थे,बड़े महाराज से मिलने जरूर जाते थे। हर मुलाकात के केंद्र में राम मंदिर ही होता था। इस मुद्दे पर दोनों में लंबी चर्चा होती थी। दोनों का एक ही सपना था, उनके जीते जी अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हो। कल्याण सिंह इस मामले में खुश किस्मत रहे कि उनके जीते जी ही मंदिर का निर्माण शुरू हो गया। राम मंदिर निर्माण को लेकर उनका अटूट विश्वास था। इन्हीं रिश्तों के नाते योगीजी ने उनके इलाज और अंतिम संस्कार में उनके अपनों जैसी दिलचस्पी ली।

अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे बाद नया गठबंधन

डॉ. हनुमंत यादव

गजनी में लिथियम का दुनिया का सबसे बड़ा भंडार है। चूंकि विश्व बैंक, आई.एम.एफ एवं अन्य संस्थानों से अफगानिस्तान को मदद मिलना संभव नहीं है, इसलिए तालिबान कर्ज लेने की बजाय खनिजों के खनन व प्रसंस्करण का कार्य अपने चीनी व पाकिस्तानी मित्रों की कंपनियों को मिलने वाले राजस्व से सुरक्षा व प्रशासन संभाले। इस नए घटनाक्रम को साकार होते एक साल से अधिक समय लग सकता है। तालिबान द्वारा 15 अगस्त अपरान्ह अफगानिस्तान पर कब्जे करने के 24 घंटे के अन्दर पाकिस्तान और चीन द्वारा जिस तरह से मान्यता देकर नैतिक समर्थन दिया गया वह भारत के राजनैतिक हितों को सबसे अधिक नुकसान पहुंचाने वाला है। तालिबान के रूप में पाकिस्तान को एक राजनैतिक समर्थक मिल गया है जो भारत के लिए खतरनाक साबित होगा। तालिबान आतंकी संगठन के रूप में घोषित है, जब तक वह दुनिया में अपने व्यवहार से आतंकी संगठन की परिधि से बाहर नहीं आ जाता, उसके साथ व्यापारिक संपर्क बनाए रखना किसी भी देश के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। भारत के लिए चिंता की सबसे बड़ी बात यह है कि भारत ने अफगानिस्तान से राजनैतिक संबंध मजबूत करने के लिए आर्थिक विकास परियोजनाओं में लगभग 22,500 करोड़ रुपए का पूंजी निवेश किया हुआ है और करोड़ों रुपये की व्यापारिक परियोजनाओं में भागीदारी है। जहां तक अफगानिस्तान में रहने वाले भारतीयों का सवाल है वे सभी जितनी जल्दी हो सके अफगानिस्तान छोड़कर भारत अपने घर पर आ जाना चाहते हैं। भारत द्वारा वर्ष 2011 में अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के लिए एक रणनीतिक साझेदारी समझौता किया गया था। इस समझौते के तहत अफगानिस्तान में भारत द्वारा पूंजी निवेश को प्रोत्साहित करते हुए कई क्षेत्रों में क्षमता निर्माण के लिए बुनियादी ढांचे और संस्थानों में शिक्षा व तकनीकी सहायता को बहाल करने में मदद करने के लिए भारतीय समर्थन को अधिनियमित किया गया था। भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने नवंबर 2020 में जिनेवा में अफगानिस्तान सम्मेलन में कहा था कि भारत द्वारा अफगानिस्तान में 400 से अधिक परियोजनाएं चलाई जा रही हैं, इन परियोजनाओं के कारण अफगानिस्तान का कोई भी हिस्सा अछूता नहीं रह गया है। 2011 के बाद में भारत द्वारा कुछ बड़ी प्रतिष्ठित परियोजनाएं जिनका पूरी हो चुकने के बाद उद्घाटन भी हो चुका है सबसे पहले मैं उनकी चर्चा करना चाहूंगा।

भारत ने काबुल में 90 मिलियन डॉलर की लागत से भव्य अफगान संसद भवन का निर्माण करवाया। इस भवन का उद्घाटन 2015 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया था। संसद भवन के एक भवन का एक ब्लॉक भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी के नाम पर रखा गया है। 2016 में ही अफगान-भारत मैत्री बांध के नाम से विख्यात 42 मैगावाट हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट सलमा डैम परियोजना का उद्घाटन हुआ, यह डैम जलविद्युत और सिंचाई परियोजनाओं से जुड़ा हुआ है। 2016 में ही अफगानिस्तान के राष्ट्रपति और भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आगा खान ट्रस्ट द्वारा पुनर्निर्मित स्टॉर पैलेस का उद्घाटन किया। भारत ने बदरखान, कंधार, खोस्त, कुनार और नूरिस्तान जैसे बहुत से शहरों में अस्पतालों का निर्माण करवाया। ट्रांसपोर्टेशन के लिए करीब 600 से ज्यादा छोटी बड़ी बसें और 300 से ज्यादा सैन्य वाहन समेत सैकड़ों एम्बुलेंस भी अफगानिस्तान को उपलब्ध करवाए। इसके अलावा अफगान राष्ट्रीय वाहक एरियाना को अपना परिचालन प्रारंभ करने के लिए एअर इंडिया से 3 विमान उपलब्ध करवाए गए थे। अफगानिस्तान में भारत के बार्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन की ओर से 147 मिलियन डॉलर का 200 किलोमीटर लंबा जरांज देलाराम राजमार्ग का निर्माण कराया जा रहा है। यह ईरान सीमा के करीब से गुजरता है। दूसरा, भारत द्वारा पुल.ए.खुमरी में 220 केवीए का पावर.इंफ्रा प्रोजेक्ट राजधानी काबुल में बिजली की आपूर्ति बढ़ाने के लिए प्रारंभ किया गया है। तीसरा, वर्ष 2020 में महत्वपूर्ण परियोजना काबुल जिले में शतूत बाघ निर्माण की है जो काबुल के 20 लाख निवासियों को संरक्षित पेयजल उपलब्ध करवाएगा। भारत अफगानिस्तान के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2019-20 में 1.3 बिलियन डॉलर पार कर गया था। भारत से लगभग 90 करोड़ डॉलर का निर्यात अफगानिस्तान को होता है, जबकि अफगानिस्तान चाह कर भी 50 करोड़ डॉलर से अधिक का निर्यात नहीं कर पाता है। अफगानिस्तान से भारत को मुख्य रूप से ताजे और सूखे मेवे निर्यात हो पाते हैं। अफगानिस्तान से अमेरिकी फौज के वापस होते ही पाकिस्तान को तालिबान के कब्जे के बारे में पूर्वानुमान हो चुका था और उसी समय पाकिस्तान ने तय कर लिया था कि तालिबान द्वारा अफगानिस्तान पर कब्जे की घोषणा होते ही उसे तालिबान सरकार को मान्यता दे देनी होगी। यही कारण है कि पाकिस्तान के मित्र चीन ने भी नई सरकार को मान्यता देने में विलंब नहीं किया। जहां तक भारत की कूटनीति का सवाल है, मैं समझता हूं कि भारत से एक बड़ी कूटनीतिक भूल हुई है, जब अमरीकी सेना के ट्रूप्स वापसी की घोषणा हुई थी, भारत को उस समय तालिबान के मुकाबले अफगानिस्तानी सेना की कमजोरी समझते अफगानिस्तानी राष्ट्रपति को भारतीय सेना का महत्व समझाना था। यह भी मौखिक प्रस्ताव देना था कि अफगानिस्तानी राष्ट्रपति द्वारा सुरक्षा के लिए सैनिक मदद का अनुरोध करने पर भारत उनके प्रस्ताव को स्वीकार करके पर्याप्त मात्रा में सैनिक बल उपलब्ध कराने को तैयार है।

देखा जाए तो अफगानिस्तान के राष्ट्रपति को अमेरिकी सेना की वापसी की जानकारी होते ही अपनी ओर से देश की सुरक्षा के लिए भारत से सैनिक बल का अनुरोध करना चाहिए था। सच पूंछा जाए तो अफगानिस्तान का लोकतंत्र और अफगानिस्तानी नागरिकों की सुरक्षा का एकमात्र मार्ग वहां भारतीय सेना की मौजूदगी से ही संभव था। पाकिस्तान के मित्र चीन की नजर अफगानिस्तान के 3,000 अरब डॉलर से अधिक मूल्य खनिज भंडार पर बहुत पहले से रही है। पिछले सप्ताह तालिबान द्वारा अफगानिस्तान पर कब्जे पर चीन को तालिबान का मित्र होने के नाते इन दुलर्भ कीमती खनिजों के खनन का बहुत सुन्दर अवसर प्रदान किया है। अमेरिकी भूगर्भ सर्वेक्षण के अनुसार, मध्य अफगानिस्तान, बाघलान, खुन्दुज, लोगार, खोस्तसद, गजनी एवं अन्य पर्वतीय क्षेत्रों में अरबों रुपए के खनिज के अमूल्य भंडार हैं। अफगानिस्तान में 60 मिलियन मीट्रिक टन तांबा, 22 बिलियन टन लौह अयस्क, 1.4 मिलियन मीट्रिक टन दुर्लभ खनिज जैसे कि लैंटम तथा सेरियम, नियोडिमियम और अल्युमिनियम, सोना, चांदी, जस्ता, पारा, लिथियम का भंडार है। गजनी में लिथियम का दुनिया का सबसे बड़ा भंडार है। चूंकि विश्व बैंक, आई.एम.एफ एवं अन्य संस्थानों से अफगानिस्तान को मदद मिलना संभव नहीं है, इसलिए तालिबान कर्ज लेने की बजाय खनिजों के खनन व प्रसंस्करण का कार्य अपने चीनी व पाकिस्तानी मित्रों की कंपनियों को मिलने वाले राजस्व से सुरक्षा व प्रशासन संभाले। इस नए घटनाक्रम को साकार होते एक साल से अधिक समय लग सकता है।

अफगानिस्तान के हालात देखकर समझ आ गया होगा कि मोदी ने ऐं लाकर कितना सही फैसला किया था

दरअसल नागरिकता का मुद्दा एक बार फिर से सुर्खियों में इसलिए आया है क्योंकि केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सीएए कानून की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद वहां बसे हिंदुओं और सिखों के युद्धग्रस्त देश छोड़ने की स्थितियों का हवाला दिया है। भारत के पड़ोसी देश अफगानिस्तान में जिस तरह के हालात हैं उसको देखते हुए नागरिकता संशोधन कानून को लागू किया जाना बेहद आवश्यक हो गया है। संसद के दोनों सदनों से पारित इस कानून के नियम चूँकि अभी तक नहीं बने हैं इसलिए सरकार को इस काम में तेजी लाने की जरूरत है। वैसे तो नागरिकता संशोधन कानून यानि सीएए पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से गैर-मुस्लिम शरणार्थियों को उनके मूल देश में धार्मिक उत्पीड़न का शिकार होने के आधार पर नागरिकता प्रदान करने का प्रावधान करता है। लेकिन मोदी सरकार ने इस साल 17 अगस्त को घोषणा की थी कि वह सभी धर्मों के उन अफगान नागरिकों को आपातकालीन ई-वीजा जारी करेगी जो अफगानिस्तान में मौजूदा स्थिति को देखते हुए भारत आना चाहते हैं। हम आपको याद दिला दें कि मोदी सरकार ने जब नागरिकता संशोधन कानून पारित कराया था तब जमकर हंगामा हुआ था और इस कानून के विरोधियों ने देशभर में भ्रम फैलाते हुए दंगे-फसाद और विरोध प्रदर्शन कराये थे लेकिन इस कानून की पैरवी करते हुए स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि आजादी के बाद से स्वतंत्र भारत ने पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान के हिंदुओं, सिखों और अन्य अल्पसंख्यकों से ये वादा किया था कि अगर उनको जरूरत होगी तो वो भारत आ सकते हैं। यही इच्छा गांधी जी की थी और यही 1950 में नेहरू-लियाकत समझौते की भी थी। दरअसल नागरिकता का मुद्दा एक बार फिर से सुर्खियों में इसलिए आया है क्योंकि केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सीएए कानून की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद वहां बसे हिंदुओं और सिखों के युद्धग्रस्त देश छोड़ने की स्थितियों का हवाला दिया है। यही नहीं अल्पसंख्यक मामलों के केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने भी सीएए विरोधियों को आड़े हाथ लेते हुए कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शी नीतियों का ही परिणाम है कि आज अफगानिस्तान से प्रताड़ित होकर आ रहे लोगों को सीएए कानून का लाभ मिलेगा। अफगानिस्तान के हालात तो टीवी समाचार चैनलों और सोशल मीडिया के माध्यम से सबके सामने हैं ही साथ ही पाकिस्तान में भी अल्पसंख्यकों पर जिस तरह अत्याचार बढ़ा है और वहां उनके धर्मस्थलों को नुकसान पहुँचाने की घटनाएं जिस तरह बढ़ी हैं उससे परेशान होकर भारत आने वालों की मदद भी यही नागरिकता कानून ही करेगा।

- नीरज कुमार दुबे

कॉमन रूमः पानी बचाने से जीवन में आएगी खुशहाली

हरीश रावत

हेमवती नंदन बहुगुणा और पर्यावरणविद सुंदर लाल बहुगुणा अक्सर कहते थे, 'पेड़ों के कटने से पहाड़ों की चट्टानें खिसक जाती हैं, मिट्टी बहकर नीचे चली जाती है, जल स्रोत्र सूख जाते हैं और जड़ी-बूटियां नष्ट हो जाती हैं। पेड़ों के कटने से ही बारिश में कमी आ रही है, जिसका खेती पर बुरा असर हो रहा है। पहाड़ को खुशहाल बनाना है तो जल और जंगल को खुशहाल करना होगा। इस सिलसिले में 'राष्ट्रीय जल नीति 2012' की याद आती है, जो आज भी प्रभावी है। इसके तहत जल संसाधनों की सुरक्षा, संरक्षण, वृद्धि, प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता और अंतर-राज्य, अंतर-क्षेत्रीय जल बंटवारे और क्लाइमेट चेंज जैसे सवाल आते हैं। पानी पर राज्यों के तनाव को देखते हुए जल नीति पर सहमति बनाना एवरेस्ट चढ़ने के समान दुरूह कार्य था। कावेरी जल विवाद, पंजाब-हरियाणा-दिल्ली, राजस्थान के बीच जल विवाद, इंद्रा सागर डैम को लेकर आंध्र प्रदेश, ओडिशा और छत्तीसगढ़ के बीच विवाद, केन-बेतवा को लेकर मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश में विवाद इसके उदाहरण हैं। प्रत्येक राज्य अपने जल अधिकारों को लेकर चौकन्ना रहता है। वहीं पाकिस्तान, चीन, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान की दिलचस्पी भी हमारी जल नीति में है। इन देशों के साथ भी हमारे पानी के सवाल उलझे हुए हैं।भारत में दुनिया की 18 प्रतिशत आबादी रहती है। हमारे पास दुनिया के उपयोग योग्य जल का केवल 4 प्रतिशत हिस्सा है। हमारे पास दुनिया का केवल 2.4 प्रतिशत भू-भाग है, जहां जंगल, पहाड़ से लेकर सभी मानवीय क्रियाएं होती हैं। चुनौती बहुत बड़ी है। 4 प्रतिशत जल और 2.4 प्रतिशत भूमि के बल पर हमें 18 प्रतिशत आबादी की भोजन, आवास, विकास कार्य, वस्त्र, पेयजल, खेती, मल सफाई और पर्यावरणीय जरूरतों को पूरा करना है। इस दिशा में राज्यों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत में कुल बारिश का 80 प्रतिशत हिस्सा मॉनसून के 4 महीनों में बरसता है। दुनिया में भारत ही एकमात्र देश है, जहां बरसाती पानी का 90 प्रतिशत हिस्सा हर जगह से निकलकर नदियों के माध्यम से समुद्र में चला जाता है। ऐसे में यह जरूरी है कि भारत मॉनसूनी बारिश का 50 प्रतिशत हिस्सा भूगर्भीय जलाशयों, जल समेटों और तालाबों में इकट्ठा करे, साथ ही बरसाती नदियों के जल को गैर-बरसाती नदियों में डाले। देश के कुछ भाग अत्यधिक मॉनसून वर्षा वाले हैं, जैसे नॉर्थ-ईस्ट और बीच हिमालय का क्षेत्र। यहां के मॉनसूनी जल को गैर-मॉनसूनी क्षेत्रों में पहुंचाना एक बड़ा राष्ट्रीय कार्य है। बाढ़ और सूखा, दोनों के यही जवाब हैं। देश के लिए जरूरी है कि हम वर्षा जल संचय का एक व्यापक राष्ट्रीय कार्यक्रम तैयार करें। देश के प्रख्यात वैज्ञानिक कस्तूरीरंगन ने हाल ही में जल उपलब्धता और वितरण पर चिंताजनक रिपोर्ट प्रस्तुत की है। नीति आयोग की रिपोर्ट में बताया गया है कि देश के 60 प्रतिशत लोग जल की कमी से जूझ रहे हैं। हर साल लगभग 2 लाख लोग जल के अभाव में मर जाते हैं। जल की गुणवत्ता के क्षेत्र में दुनिया के 122 देशों के सर्वेक्षण में हम 120वें स्थान पर हैं। देश में उपलब्ध 70 प्रतिशत जल दूषित हो चुका है और यह लगातार बढ़ ही रहा है। निरंतर घटता भूजल स्तर कई राज्यों की खेती आधारित व्यवस्था को ध्वस्त कर देगा। पंजाब के कई क्षेत्रों में यह संकट दिखने लगा है। वर्ष 2030 तक जल की मांग दो गुना हो जाएगी, उस स्थिति के मुकाबले की रणनीति तो बन रही है, मगर जमीन पर ऐसा कुछ होते हुए दिखाई नहीं दे रहा है। एक सन्नाटा पसरा हुआ है। कभी-कभार कुछ इलाकों से आने वाले पेयजल संकट के समाचार इस सन्नाटे को तोड़ते हैं। अच्छी बात है कि जंगलों में चाल-खाल बनाने का 2015 में शुरू हुआ अभियान अभी भी चल रहा है। मगर उत्तराखंड का कल्याण खुशहाली की प्रतीक जल बूंदों के संग्रहण में है। वॉटर हार्वेस्टिंग के नारे को जन अभियान में बदलने में जल बोनस आकर्षक और महत्वपूर्ण कारक बन सकता है। हर गांव, हर घर खुद इस अभियान का हिस्सा बन सकते हैं। पेयजल संकट का भी समाधान इस तरह से संभव है।

लीड्स में 2-0 की अजेय लीड लेने उतरेगी विराट कोहली

इंग्लैंड की नजरें वापसी करने पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। कप्तान विराट कोहली लंबे समय से चली आ रही अपनी खराब फॉर्म से पार पाकर इंग्लैंड के खिलाफ बुधवार से यहां लीड्स के हैडिंग्ले स्टेडियम में शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट क्रिकेट मैच में बड़ा स्कोर बनाने के साथ भारत को पांच मैचों की सीरीज में 2-0 की अजेय लीड दिलाने की कोशिश करेंगे। कोहली ने अपना आखिरी इंटरनेशनल शतक नवंबर 2019 में लगाया था। वह वर्तमान सीरीज में दो अवसरों पर 40 रन के पार पहुंचे लेकिन बड़ा स्कोर बनाने में नाकाम रहे। उनसे हालांकि हमेशा बड़े स्कोर की उम्मीद की जाती है। उन्होंने पहले दो टेस्ट मैचों में ऑफ स्टंप से बाहर जाती गेंदों पर अपने विकेट गंवाए। ऐसे में उनसे हेंडिंग्ले में इस तरह की गेंदों के सामने बेहतर तकनीकी के साथ बल्लेबाजी करने की उम्मीद की जा रही है। चेतेश्वर पुजारा और

अजिंक्य रहाणे की फॉर्म भी भारत के लिए चिंता का विषय है। इन दोनों ने हालांकि लार्ड्स टेस्ट के चौथे दिन लगभग 50 ओवर तक बल्लेबाजी करके फॉर्म में वापसी के संकेत दिए हैं। इससे मैच पांचवें दिन तक खिंच गया जिसके बाद तेज गेंदबाजों ने भारत को जीत दिलाई और सीरीज में 1-0 से आगे किया। सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा और केएल राहुल का प्रदर्शन भारत के लिए बल्लेबाजी विभाग में सकारात्मक पहलू रहा है। इन दोनों ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अपने संयम और तकनीक का अच्छा नमूना पेश करके भारत को अच्छी शुरुआत दिलाई। चोटिल मयंक अग्रवाल की जगह टीम में लिए गए राहुल प्रत्येक अगली पारी में अधिक आत्मविश्वास से भरे हुए दिखे और लगता है कि वह इस बात को लेकर अब सुनिश्चित हैं कि उन्हें कौन सी गेंद खेलनी है और कौन सी छोड़नी है जो कि इंग्लैंड की मुश्किल परिस्थितियों में महत्वपूर्ण होता है। रोहित भी बहुत अच्छी लय में दिख रहे हैं और उन्हें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि उन्हें अपना पसंदीदा पुल शॉट कब खेलना है क्योंकि सीरीज में दो अवसरों पर वह यह शॉट खेलकर आउट हुए। ऋषभ पंत अपने नैसर्गिक अंदाज में बल्लेबाजी कर रहे हैं जबकि रविंद्र जडेजा ने भी सातवें नंबर पर बहुत अच्छी भूमिका निभाई है। यह कहा जा सकता है कि वह टीम में बाएं हाथ के स्पिनर के बजाय बल्लेबाज की भूमिका में अधिक खेल रहे हैं।हैडिंग्ले में परिस्थितियां तेज गेंदबाजों के अनुकूल रहने की संभावना है और भारत चार तेज गेंदबाजों के साथ उतर सकता है। ऐसे में रविचंद्रन अश्विन के लिए अंतिम एकादश में फिर से जगह नहीं बन पाएगी। शार्दुल ठाकुर फिट हो गए हैं लेकिन लगता नहीं कि कोहली अपने तेज गेंदबाजी आक्रमण में किसी तरह का बदलाव करेंगे।

भारतः विराट कोहली (कप्तान), रोहित शर्मा, चेतेश्वर पुजारा, मयंक अग्रवाल, अजिंक्य रहाणे, हनुमा विहारी, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), आर अश्विन, रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल, जसप्रीत बुमराह, इशांत शर्मा, मोहम्मद शमी, मोहम्मद सिराज, उमेश यादव, केएल राहुल, ऋद्धिमान साहा, अभिमन्यु ईश्वरन, पृथ्वी सॉव, सूर्यकुमार यादव।

इंग्लैंडः जो रूट (कप्तान), मोइन अली, जेम्स एंडरसन, जोनाथन बेयरस्टो, रोरी बर्न्स, जोस बटलर (विकेटकीपर), सैम कुरेन, हसीब हमीद, डैन लॉरेंस, साकिब महमूद, डाविड मलान, क्रेग ओवरटन, ओली पोप, ओली रॉबिन्सन। मैच भारतीय समयानुसार दोपहर बाद तीन बजकर 30 मिनट पर शुरू होगा

तीसरे टेस्ट में क्या रविचंद्रन अश्विन को प्लेइंग में मिलेगा मौका, विराट कोहली ने दिया जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली ने मंगलवार को कहा कि पिछले मैच में सफलता हासिल करने वाली टीम के संयोजन को बदलने का कोई कारण नहीं है, लेकिन अगर पिच स्पिनरों के अनुकूल हुई तो अनुभवी रविचंद्रन अश्विन को अंतिम एकादश में रहे हैं और ऐसा कयास लगा जा रहा है कि पुजारा की जगह सूर्यकमार यादव को टेस्ट में डेब्यू करने का मौका मिल सकता है। पुजारा और अजिंक्य रहाणे लंबे समय से खराब फॉर्म में चल रहे थे, लेकिन लॉर्ड्स टेस्ट की दूसरी पारी में दोनों ने फॉर्म में वापसी के संकेत दिए हैं, तो क्या ऐसे में टीम

शामिल किया जा सकता है। ऑफ स्पिनर अश्विन को अंतिम एकादश में जगह नहीं देने पर हो रही बहस के बीच कोहली ने साफ कर दिया कि वह बुधवार से शुरू हो रहे मैच के लिए विनिंग प्लेइंग इलेवन में कोई बदलाव करने पर विचार नहीं कर रहे हैं। भारतीय टीम में चेतेश्वर पुजारा अपने खराब फॉर्म से जूझ मैनेजमेंट इन दोनों को या फिर दोनों में से किसी एक को ड्रॉप करने के बारे में विचार करेगा यह बड़ा सवाल बना हुआ है। सूर्यकुमार ने अपनी शानदार बल्लेबाजी से लिमिटेड ओवर क्रिकेट में तो जगह मजबूत कर ली है, लेकिन अभी तक उन्हें टेस्ट क्रिकेट खेलने का मौका नहीं मिला है।

भारत की खतरनाक बॉलिंग अटैक से डरा टी20 का यह नंबर-1 बल्लेबाज, कहा- उनके गेंदबाज हर कंडिशंस में जीत सकते हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। शानदार लय में चल रही भारतीय गेंदबाजी से प्रभावित इंग्लैंड के विस्फोटक बल्लेबाज डेविड मलान ने मंगलवार को कहा कि शानदार नेतृत्व के साथ इस दौरे पर आई टीम के पास हर कंडिशंस में टेस्ट मैच जीतने की क्षमता है। पांच मैचों की सीरीज में दोनों टीमें बुधवार से यहां शुरू हो रहे तीसरे टेस्ट मैच में भिड़ेंगी। भारत लॉर्ड्स में खेले गए दूसरे टेस्ट को 151 रन से जीतकर सीरीज में 1-0 से आगे है। तीसरे टेस्ट में टीम इंडिया के पास सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त हासिल करने का मौका होगा। वहीं, इंग्लैंड की टीम इस मैच से सीरीज में वापसी करना चाहेगी। इंग्लैंड की टीम इस मैच में कई बदलावों के साथ उतर सकती है। लॉर्ड्स में पांच विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज मार्कवुड चोट के कारण बाहर हो गए हैं तो सलामी बल्लेबाज डॉम सिबली को भी प्लेइंग इलेवन से बाहर कर दिया गया है। वहीं, डेविड मलान के आने से इंग्लैंड की बल्लेबाजी की

कमजोरी दूर होगी। मलान ने मैच पूर्वसंध्या पर संवाददाता सम्मेलन में कहा, मुझे लगता है कि उनकी (भारत) टीम का नेतृत्व शानदार तरीके से किया गया है। मेरा मानना है कि विराट (कोहली) जिस तरह से अपने काम को करते हैं उसमें जज्बा दिखता है और आप जानते हैं कि वह बहुत से लोगों का ध्यान आकर्षित करने में सफल रहते हैं। उनकी सिर्फ बल्लेबाजी नहीं बल्कि गेंदबाजी में भी काफी गहराई है। उनके पास ऐसे गेंदबाज हैं जो हर परिस्थिति में टेस्ट क्रिकेट जीत सकते हैं। उनकी टीम में काफी विकल्प है और वे कड़े टक्कर देने वाले गेंदबाज हैं। 33 साल मलान ने 2018 में बर्मिंघम में भारत के खिलाफ टेस्ट मैच खेला है। उन्होंने 2017 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ डेब्यू करने के बाद 15 टेस्ट में 724 रन बनाए हैं। तीसरे क्रम पर बल्लेबाजी करने की चुनौतियों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, यह वास्तव में कुछ ऐसा है जो मैंने अपने टेस्ट करियर में बहुत ज्यादा नहीं किया है। मैंने ऐसा 25-30 बार किया होगा। मैं कोशिश करता हूं और उसी तरह खेलता हूं, जिसके लिए जाना जाता हूं।

ऑस्ट्रेलिया टूर के लिए भारतीय महिला टीम का ऐलान, 2 खिलाड़ी ने तीनों फार्मेट में बनाई जगह

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने आगामी ऑस्ट्रेलिया दौरे पर होने वाले एकमात्र टेस्ट, वनडे और टी20 सीरीज के लिए भारतीय महिला क्रिकेट टीम की घोषणा कर दी है। भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया दौरे पर एक टेस्ट के अलावा तीन वनडे और इतने ही मैचों की टी20 सीरीज खेलेगी। बीसीसीआई की ऑल इंडिया सीनियर वुमेंस सिलेक्शन कमेटी ने मंगलवार को टीम का चयन किया। दौरे के लिए स्नेह राणा और शेफाली वर्मा मात्र ऐसी खिलाड़ी हैं, जिन्हें तीनों फॉर्मेट की टीमों में शामिल किया गया है। शेफाली ने इंग्लैंड दौरे पर टेस्ट में डेब्यू किया था। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर भारतीय महिला टीम पर्थ में एकमात्र डे-नाइट टेस्ट खेलेगी, जोकि भारतीय महिला क्रिकेट टीम के इतिहास का पहला डे-नाइट टेस्ट मैच होगा।

ऑस्ट्रेलिया दौरे पर भारतीय महिला टीम 19 सितंबर से तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी। इसके बाद टीम को एकमात्र टेस्ट मैच 30 सितंबर से पर्थ में खेलना है। टेस्ट के बाद भारतीय टीम सात अक्टूबर से तीन मैचों की टी20 सीरीज के लिए मैदान पर उतरेगी। वनडे मुकाबले सिडनी के ओवल में और मेलबर्न में खेले जाएंगे। वहीं, तीनों टी20 मैच नॉर्थ सिडनी के ओवल मैदान पर होंगे।एकमात्र टेस्ट और वनडे सीरीज के लिए भारतीय महिला टीमः मिताली राज (कप्तान), हरमनप्रीत कौर (उप-कप्तान), स्मृति मंधाना, शैफाली वर्मा, पूनम राउत, जेमिमा रोड्रिग्स, दीप्ति शर्मा, स्नेह राणा, यास्तिका भाटिया, तानिया भाटिया (विकेटकीपर), शिखा पांडे, झूलन गोस्वामी, मेघना सिंह, पूजा वस्त्राकर, राजेश्वरी गायकवाड़, पूनम यादव, ऋचा घोष, एकता बिष्ट। टी20 सीरीज के लिए भारत की महिला टीमः हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), शैफाली वर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, दीप्ति शर्मा, स्नेह राणा, यास्तिका भाटिया, शिखा पांडे, मेघना सिंह, पूजा वस्त्राकर, राजेश्वरी गायकवाड़, पूनम यादव, ऋचा घोष (विकेटकीपर), हरलीन देओल, अरुंधति रेड्डी, राधा यादव, रेणुका सिंह ठाकुर।

तीसरे टेस्ट से पहले विराट कोहली ने कहा- गेंदबाज आंख से आंख मिलाकर खेलेगा और बल्लेबाजों को आउट करेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय कप्तान विराट कोहली अपने तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज की सफलता से हैरान नहीं हैं। कोहली का कहना है कि इस तेज गेंदबाज का आत्मविश्वास ऐसे लेवल पर पहुंच गया है, जहां उनका मानना है कि वह खेल में किसी भी समय किसी भी बल्लेबाज को आउट करके पवेलियन भेज सकता है। मोहम्मद शमी, जसप्रीत बुमराह और ईशांत शर्मा की मौजूदगी वाली तेज गेंदबाजी चौकड़ी के सबसे युवा सदस्य हैदराबाद के 27 साल के सिराज ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले दो टेस्ट में 11 विकेट चटकाए हैं। उनकी सटीक लाइन और लेंथ तथा गेंद पर नियंत्रण ने इंग्लैंड टीम के बल्लेबाजों को लगातार परेशान किया है। सिराज ने लार्ड्स में खेले गए दूसरे टेस्ट के दौरान आठ विकेट चटकाए, जिससे भारत ने 151 रन से मैच जीता।

कोहली ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया दौरा सिराज के आत्मविश्वास को नए स्तर पर ले गया। कोहली ने तीसरे टेस्ट की पूर्वसंध्या पर आनलाइन प्रेस कांफ्रेंस में कहा, मैं बिलकुल भी हैरान नहीं हूं (उनकी सफलता से) क्योंकि मैंने उन्हें करीब से देखा है। वे ऐसा खिलाड़ी है, जिसके पास स्किल्स हमेशा से था। आपको इस स्किल्स का साथ देने के लिए आत्मविश्वास की जरूरत थी, ऑस्ट्रेलिया सीरीज में उन्होंने यह आत्मविश्वास दिया। वह जब मैदान पर उतरता है जो उसे पता है कि वह कभी भी किसी भी बल्लेबाज को आउट कर सकता है और अपने खेल पर उसका विश्वास नए स्तर पर पहुंच गया है जिसके कारण वह जो कर रहा है उसका नतीजा दिख रहा है। कोहली ने कहा कि सिराज के आत्मविश्वास ने उन्हें आक्रामक बना दिया है। उन्होंने कहा, उन्हें अपने रंग में रंगा देखकर मैं बेहद खुश हूं। वह ऐसा गेंदबाज बनेगा जो आंख से आंख मिलाकर खेलेगा और खिलाड़ियों को आउट करने की कोशिश करेगा और जो डरेगा नहीं, वह पीछे नहीं हटेगा। कोहली ने सलामी बल्लेबाजों रोहित शर्मा और लोकेश राहुल की भी तारीफ की और उम्मीद जताई कि उनकी अच्छी फॉर्म जारी रहेगी। रोहित ने दो टेस्ट की चार पारियों में अब तक 36, 12, 83 और 21 रन बनाए हैं जबकि राहुल ने 84, 26, 129 और पांच रन का योगदान दिया है, जिससे भारत अच्छी शुरुआत हासिल करने में सफल रहा है। कोहली ने कहा, जब आप विदेशी सरजमीं पर खेलते हो तो सलामी जोड़ी का संयोजन सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक होता है। इसलिए लोकेश राहुल और रोहित शर्मा ने जिस तरह का प्रदर्शन किया है वह शानदार है और हमें उम्मीद है कि वे इसी तरह खेलना जारी रखेंगे। हमें लाड्र्स में जिस तरह का विकेट मिला, हमने उससे अलग तरह के विकेट की उम्मीद की थी। जिस तरह की पिच थी उसे देखकर हम हैरान थे। ईमानदारी से कहूं तो मैंने इसकी उम्मीद नहीं की थी और मैंने सोचा था कि अधिक घास होगी।यह पूछने पर कि क्या अपनी गलतियों के कारण विरोधी कप्तान जो रूट दबाव में थे, विशेषकर तब जब वह भारत के पुछल्ले बल्लेबाजों शमी और बुमराह को दूसरी पारी में आउट नहीं कर पाए। कोहली ने इस मुद्दे पर रूट को सपोर्ट किया। उन्होंने कहा, मुझे नहीं पता कि किसी व्यक्ति की मानसिकता क्या है किसी भी चरण में आप योजना को लेकर गलती कर सकते हो, इसका मतलब यह नहीं कि आप दबाव में हो।

फ्लाइट में कोविड-19 केस निकलने के बाद ऑलराउंडर कार्लोस ब्रेथवेट हुए सेल्फ आइसोलेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। वेस्टइंडीज के धुरंधर ऑलराउंडर कार्लोस ब्रेथवेट का कैरेबियाई प्रीमियर लीग (सीपीएल) में जमैका तालावाज के लिए शुरुआती मैचों में खेलना मुश्किल लग रहा है क्योंकि ब्रेथवेट यूके से सेंट किट्स एंड नेविस आ रहे थे और उस फ्लाइट में कोविड-19 का मामला सामने आने के बाद उन्होंने खुद को आइसोलेट कर लिया है। द हंड्रेड टूर्नामेंट में मैनचेस्टर ओरिजनल्स की कप्तानी करने के बाद ब्रेथवेट वेस्टइंडीज लौट रहे थे, जहां उन्हें सीपीएल में जमैका तालावाज के लिए खेलना था। फ्लाइट में पसैंजर के कोविड-19 पॉजिटिव पाए जाने के बाद ब्रेथवेट को खुद को आइसोलेट करने के लिए कहा गया है। ब्रेथवेट उस समय चर्चा में आए थे जब उन्होंने भारत में 2016 में खेले गए टी-20 वर्ल्ड के फाइनल मैच में इंग्लैंड के स्टार ऑलराउंडर बेन स्टोक्स के एक ही ओवर में लगातार 4 छक्के जड़कर अपनी टीम को टी-20 वर्ल्ड चैंपियन बनाया था। ईएसपीएनक्रिकइंफो की रिपोर्ट के अनुसार, ब्रेथवेट ने कहा, जहां तक मुझे पता है कि मेरा टेस्ट निगेटिव आया था। हमें क्वारंटीन में रहने को कहा गया। मुझे अब तक नहीं पता कि कब तक क्वारंटीन में रहना है। मुझे बस कहा गया कि लगातार क्वारंटीन में रहना होगा और शुरुआत में आस-पास पैदल चलने की अनुमति थी, वो अब नहीं है। तो दुर्भाग्यवश मैं उतना ही अंधेरे में हूं, जितना की आप हैं।

ब्रेथवेट ने आगे दावा करते हुए कहा कि क्वारंटीन को लेकर उन्हें अब तक कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है। यह पूछे जाने पर कि टूर्नामेंट के पहले मैच में जमैका तालावाज की ओर से खेलने के लिए वह उपलब्ध रहेंगे तो इस पर उन्होंने कहा, पक्का नहीं है। मुझे आधिकारिक रूप से जानकारी नहीं मिली है कि पहला दिन कब है और कितने दिन आइसोलेशन में रहना है। तो हां मैं अपने कमरे में रस्सी कूद रहा हूं और शारीरिक रूप से फिट रहने के लिए अन्य एक्सरसाइज कर रहा हूं।ब्रेथवेट का हाल ही में बिग बैश लीग (बीबीएल) की टीम सिडनी सिक्सर्स के साथ एक और सीजन के लिए साइन हुआ है। सिडनी सिक्सर्स ने कंफर्म करते हुए कहा है कि ब्रैथवेट एक और सीजन के लिए फ्रेंचाइजी से जुड़े हैं। ऑलराउंडर ब्रैथवेट ने पिछले सीजन में सिक्सर्स की खिताबी जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जहां उन्होंने सीजन में 16 मैचों में 16 विकेट लिए थे। ब्रैथवेट का बीबीएल में सिडनी सिक्सर्स के साथ यह तीसरा साल होगा। वह इससे पहले सीजन सात में भी सिडनी सिक्सर्स के लिए चार मैच खेल चुके हैं।

क्या चेतेश्वर पुजारा की होगी छुट्टी या एसकेवाई को मिलेगा डेब्यू का मौका

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का तीसरा टेस्ट बुधवार से लीड्स में शुरू होने जा रहा है। भारत ने लॉर्ड्स में खेले गए दूसरे टेस्ट में 151 रनों से मैच जीतकर सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली थी। दोनों टीमों के बीच बर्मिंघम में खेला गया पहला टेस्ट ड्रॉ रहा था। तीसरे टेस्ट में टीम इंडिया के पास सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त हासिल करने का मौका होगा। वहीं, इंग्लैंड की टीम इस मैच से सीरीज में वापसी करना चाहेगी। इंग्लैंड की टीम इस मैच में कई बदलावों के साथ उतर सकती है। लॉर्ड्स में पांच विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज मार्कवुड चोट के कारण बाहर हो गए हैं तो सलामी बल्लेबाज डॉम सिबली को भी प्लेइंग इलेवन से बाहर कर दिया गया है। वहीं, डेविड मलान के आने से इंग्लैंड की बल्लेबाजी की कमजोरी दूर होगी। मलान ने अपना आखिरी टेस्ट तीन साल पहले खेला था लेकिन उनके पास प्रथम श्रेणी क्रिकेट का अच्छा अनुभव है। बाएं हाथ का यह बल्लेबाज तीसरे नंबर पर खेलेगा और ऐसे में हसीब हमीद को रोरी बर्न्स के साथ पारी का आगाज करना पड़ सकता है। इंग्लैंड के बल्लेबाजों को रन बनाने का तरीका ढूंढकर कप्तान जो रूट का साथ देना होगा। अभी तक इंग्लैंड की

तरफ से रूट ने ही अधिकतर रन बनाएं हैं। अपनी अतिरिक्त उछाल से भारतीय बल्लेबाजों को परेशानी में डालने वाले मार्क वुड चोटिल हैं और ऐसे में सादिक महमूद को टेस्ट क्रिकेट में डेब्यू का मौका मिल सकता है। पाकिस्तानी मूल के तेज गेंदबाज साकिब ने इंग्लैंड के लिए अबतक 7 वनडे और 9 टी20 मैच खेले हैं। उन्हें इंग्लैंड के लिए टेस्ट डेब्यू करने का मौका नहीं मिला है।

रूट ने मैच से पहले कंफर्म किया कि वुड को छोड़कर फिटनेस का कोई मसला नहीं है और मुख्य तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन अच्छी स्थिति में हैं। रूट ने इसके साथ ही संकेत दिए कि खिलाड़ी आपसी बहस में नहीं उलझेंगे क्योंकि लाड्र्स में दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने एक दूसरे पर छींटाकशी की लेकिन इसका अधिक फायदा भारत को मिला। दूसरी तरफ, भारतीय टीम में चेतेश्वर पुजारा अपने खराब फॉर्म से जूझ रहे हैं और ऐसा कयास लगा जा रहा है कि पुजारा की जगह सूर्यकमार यादव को टेस्ट में डेब्यू करने का मौका मिल सकता है। पुजारा और अजिंक्य रहाणे लंबे समय से खराब फॉर्म में चल रहे थे, लेकिन लॉर्ड्स टेस्ट की दूसरी पारी में दोनों ने फॉर्म में वापसी के संकेत दिए हैं, तो क्या ऐसे में टीम मैनेजमेंट इन दोनों को या फिर दोनों में से किसी एक को ड्रॉप करने के बारे में विचार करेगा यह बड़ा सवाल बना हुआ है। सूर्यकुमार ने अपनी शानदार बल्लेबाजी से लिमिटेड ओवर क्रिकेट में तो जगह मजबूत कर ली है, लेकिन अभी तक उन्हें टेस्ट क्रिकेट खेलने का मौका नहीं मिला है। कुछ पूर्व क्रिकेटरों का मानना है कि सूर्यकुमार यादव को लीड्स में प्लेइंग इलेवन में पुजारा या रहाणे की जगह मौका दिया जाना चाहिए। यहां सूर्यकुमार यादव के लिए सबसे बड़ी मुश्किल यह होगी कि उन्हें इंग्लैंड की पिचों पर खेलने का अनुभव नहीं है।

केएल राहुलः लॉर्ड्स टेस्ट में शतक लगाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में बोर्ड पर अपना नाम शामिल करने के बाद, राहुल इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट में उतरने के लिए उत्साहित होंगे। वह अच्छी

भारतः विराट कोहली (कप्तान), रोहित शर्मा, चेतेश्वर पुजारा, मयंक अग्रवाल, अजिंक्य रहाणे, हनुमा विहारी, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), आर अश्विन, रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल, जसप्रीत बुमराह, ईशांत शर्मा, मोहम्मद शमी, मोहम्मद सिराज, उमेश यादव, केएल राहुल, ऋद्धिमान साहा, अभिमन्यु ईश्वरन, पृथ्वी सॉव, सूर्यकुमार यादव।

इंग्लैंडः जो रूट (कप्तान), मोइन अली, जेम्स एंडरसन, जोनाथन बेयरस्टो, रोरी बर्न्स, जोस बटलर (विकेटकीपर), सैम कुरेन, हसीब हमीद, डैन लॉरेंस, साकिब महमूद, डाविड मलान, क्रेग ओवरटन, ओली पोप, ओली रॉबिन्सन। मैच भारतीय समयानुसार दोपहर बाद तीन बजकर 30 मिनट पर शुरू होगा।

फॉर्म में है और उससे पिछले दो मैचों की तरह अच्छी शुरुआत मिलने की उम्मीद है। चोटिल मयंक अग्रवाल की जगह टीम में लिए गए राहुल प्रत्येक अगली पारी में अधिक आत्मविश्वास से भरे हुए दिखे और लगता है कि वह इस बात को लेकर अब सुनिश्चित हैं कि उन्हें कौन सी गेंद खेलनी है और कौन सी छोड़नी है जो कि इंग्लैंड की मुश्किल परिस्थितियों में महत्वपूर्ण होता है। रोहित भी बहुत अच्छी लय में दिख रहे हैं और उन्हें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि उन्हें अपना पसंदीदा पुल शॉट कब खेलना है क्योंकि सीरीज में दो अवसरों पर वह यह शॉट खेलकर आउट हुए। ऋषभ पंत अपने नैसर्गिक अंदाज में बल्लेबाजी कर रहे हैं जबकि रविंद्र जडेजा ने भी सातवें नंबर पर बहुत अच्छी भूमिका निभाई है। यह कहा जा सकता है कि वह टीम में बाएं हाथ के स्पिनर के बजाय बल्लेबाज की भूमिका में अधिक खेल रहे हैं। हैडिंग्ले में परिस्थितियां तेज गेंदबाजों के अनुकूल रहने की संभावना है और भारत चार तेज गेंदबाजों के साथ उतर सकता है। ऐसे में रविचंद्रन अश्विन का एक बार फिर से प्लेइंग इलेवन में जगह नहीं बन पाएगी। शार्दुल ठाकुर फिट हो गए हैं लेकिन लगता नहीं कि कोहली अपने तेज गेंदबाजी आक्रमण में किसी तरह का बदलाव करेंगे।

महंगे पेट्रोल-डीजल से जल्द मिलने वाली है राहत, केंद्रीय मंत्री ने बताया कब से घटेंगे दाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेट्रोल-डीजल के बढ़ते दामों को लेकर बेहद संवेदनशील है। आने वाले समय में आम लोगों को तेल के दामों में महंगाई से कुछ राहत मिलेगी। केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस हरदीप सिंह पुरी ने मंगलवार को यह बात कही। एक प्रेस कांफ्रेंस के दौरान केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें धीरे-धीरे नीचे आ रही हैं और स्थिर हो रही हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले महीनो में इसका असर तेल के दामों पर पड़ेगा और इसमें कमी आएगी। केंद्रीय मंत्री पुरी ने इस दौरान सरकार द्वारा तेल के दामों पर अधिक एक्साइज ड्यूटी लगाने के फैसले का बचाव किया। उन्होंने कहा कि ठीक है सरकार प्रति लीटर 32 रुपए एक्साइज ड्यूटी वसूल करती है, लेकिन इससे मिले पैसे का इस्तेमाल विभिन्न लोक कल्याणकारी योजनाओं में किया जाता है। उन्होंने कहा कि सरकार अपनी अन्य जिम्मेदारियों को लेकर भी बहुत संवेदनशील है। पुरी ने कहा कि कोरोना के बाद 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन उपलब्ध कराया गया। फ्री वैक्सीन दी गई और अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गईं। इस सबका पैसा कहां से आया। ऐसे में तस्वीर को पूरी तरह से देखने की जरूरत है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि केंद्रीय सरकार द्वारा लगाई गई एक्साइज ड्यूटी वही है जो अप्रैल 2010 में लगाई गई थी। उन्होंने कहा कि जब अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमत 19 डॉलर 60 सेंट प्रति लीटर थी तब भी 32 रुपए प्रति लीटर के हिसाब से ही एक्साइज ड्यूटी लगाई गई थी। जब जबकि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें 75 डॉलर प्रति लीटर तक पहुंच चुकी हैं तब भी इसी दर से एक्साइज ड्यूटी लगाई गई है। पुरी ने कहा कि भारत में तेल की कीमतें अंतर्राष्ट्रीय मार्केट के हिसाब से तय होती हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के अलावा राज्य सरकारें भी वैट लगाती हैं।

अब ओपन स्कूल से भी मिल सकेगी ऑनलाइन शिक्षा : धर्मेंद्र प्रधान

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत मंगलवार को वर्चुअल ओपन स्कूलिंग प्लेटफार्म की शुरुआत की है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग (एआइओएस) के तत्वावधान में संचालित होने वाले इस ऑनलाइन प्लेटफार्म का लाभ उन बच्चों को मिलेगा जो विभिन्न कारणों से स्कूल नहीं जा पाते। इसके साथ ही नैसर्गिक चुनौतियों का सामना कर रहे दिव्यांग बच्चों के लिए प्रिया सुगम्यता नाम की एक ई-कॉमिक पुस्तिका लांच की गई है जो सरल, आकर्षक और इंटरएक्टिव तरीके से सुगम्यता का पाठ पढ़ाएगी। स्कूली शिक्षा विभाग की तरफ से आयोजित एक वर्चुअल कार्यक्रम में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और केंद्रीय सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री वीरेंद्र कुमार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की बीते एक साल की उपलब्धियों पर एक पुस्तिका के साथ साथ चार पहलों को लांच किया। इनमें निपुण भारत बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान से संबंधित समस्त सामग्री की उपलब्धता दीक्षा पोर्टल पर और ऑल्टरनेटिव एकेडमिक कलेंडर ऑफ एनसीईआरटी भी शामिल हैं।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि शिक्षा अंकगणित या डिग्री प्राप्त करने की व्यवस्था नहीं है। चरित्र निर्माण के जरिए राष्ट्र निर्माण हो इसका उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि देश में आज भी करीब 17 करोड़ बच्चे ऐसे हैं जो सामाजिक, आर्थिक समेत कई वजहों से पारंपरिक तरीके से स्कूली शिक्षा हासिल नहीं कर पा रहे हैं। स्कूली शिक्षा विभाग ऐसे बच्चों के लिए नया मंच लेकर आया है। इसका नाम है वर्चुअल स्कूल। अब सभी बच्चे इस व्यवस्था से शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। शिक्षा मंत्री ने कहा कि जब ये बच्चे एटीएम से पैसे निकाल सकते हैं, मोबाइल पर प्री पेड वाउचर भर सकते हैं, विभिन्न प्रकार के डिजिटल भुगतान कर सकते हैं तो फिर वे ओपन वर्चुअल माध्यम से शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं। प्रधान ने शिक्षा मंत्रालय के इस प्रयास को प्रधानमंत्री की ओर से उन वंचित विद्यार्थियों को समर्पित किया जो सामाजिक चुनौतियों के दबाव में कहीं न कहीं

पीछे रह गए हैं।

इसके अतिरिक्त शिक्षा मंत्रालय ने एक और अहम कदम उठाते हुए दिव्यांग बच्चों के लिए इंटरएक्टिव एक्टिविटी के जरिए सुगम्यता को समझाने वाली एक ई-कॉमिक पुस्तिका 'प्रिया सुगम्यता' को भी जारी किया। इसका विमोचन करते हुए प्रधान ने कहा कि आबादी की एक बड़ी संख्या करीब छह फीसद बच्चों की कुछ न कुछ नैसर्गिक चुनौतियां हैं। लेकिन अब सरकार और समाज ने मिलकर इस चुनौती को स्वीकार किया है। ऐसे दिव्यांग बच्चों, दृश्टि, वाक शक्ति या सुनने की शक्ति न रखने वाले बच्चों के लिए सरकार ई-कॉमिक के रूप में हम एक पुस्तिका लेकर आए हैं। प्रिया सुगम्यता नाम की यह पुस्तिका आज की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इसी से सबका विकास होगा, सबका विश्वास बड़ेगा। श्री प्रधान ने कहा कि हमारी सरकार, हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की यही नीति है। इस अवसर उपस्थित सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री वीरेंद्र कुमार ने कहा कि शिक्षा मंत्रालय स्कूल पाठ्यक्रम में सुगम्यता से संबंधित सामग्री को शामिल करने के साथ साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा शास्त्र विकसित करने के संबंध में शिक्षा क्षेत्र के लिए सुगम्यता से संबंधित कंटेंट भी तैयार कर रहा है। भारत सरकार ने इस विषय की गंभीरता का प्रारंभ से ही समझा है इसलिए प्रिया सुगम्यता शीर्षक की इस ईकामिक पुस्तिका बनाने का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह देखते हुए कि सुगम्यता का मार्ग कठिन, और जटिल है इस ई-कॉमिक पुस्तिका को इंटरएक्टिव बनाने पर जोर दिया गया है।

प्रिया सुगम्यता सरल, छोटे और रोचक तरीकों से बड़ी और महत्वपूर्ण चीजों के बारे में सीखने का प्रयास है। व्हील चेयर का विभिन्न स्थानों पर इस्तेमाल, रैंप का उपयोग आदि सुगम्यताओं की मूल बातों को इस ई कॉमिक में आसान फारमेट में समझाया गया है। इसमें पूर्ण सुगम्यता सुनिश्चित करने के लिए इसमें सुगम्यता सुविधाओं जैसे टेक्स्ट टू स्पीच, फांट साइज, साइन लैंग्वेज आदि प्रदान किये गये हैं जिससे कोई व्यक्ति इसे पढ़ सकता है बल्कि सुन भी सकता है। इस ई कामिक बुक को क्यूआर कोड से भी एक्सेस किया जा सकता है। इस पुस्तिका के प्रत्येक दृश्य को ऑडियो डिस्क्रिप्शन के माध्यम से भी समझाया गया है। शिक्षा मंत्री ने कहा कि प्रत्येक सरकार नीति बनाती है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है उसे जमीन पर हकीकत बनाना। यानी उसका पूर्ण रूप से अमल में लाना। यही सबसे बड़ी चुनौती है। हमारी सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को स्वीकार करने के बाद बीते एक साल में उस पर अमल के लिए क्या कदम उठाए, उसे एक डाक्यूमेंट के रूप में रखा है। निपुण भारत मिशन लांच करते हुए मंत्रालय ने पहली से तीसरी कक्षा के बच्चों के लिए निपुण भारत बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान के लिए आवश्यक सामग्री को सरकार न दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध कराया है। इन बच्चों की बुनियादी साक्षरता मजबूत हो और शिक्षकों में यह गुण आए उस दिशा में सरकार क्या करने वाली है उसका एक मसौदा शिक्षा मंत्रालय ने सार्वजनिक तौर पर रखा है।

पंजाबः अमरिंदर सिंह के खिलाफ फिर शुरू हुई बगावत, कांग्रेस आलाकमान से मिलेंगे चार मंत्री

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के चार कैबिनेट मंत्रियों और कांग्रेस के कई विधायकों ने मंगलवार को पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह के खिलाफ बगावत का झंडा बुलंद करते हुए कहा कि उन्हें सिंह पर विश्वास नहीं है क्योंकि उन्होंने 2017 के विधानसभा चुनावों से पहले किए गए वादों को पूरा नहीं किया है। चार मंत्रियों तृप्त राजिंदर सिंह बाजवा, सुखबिंदर सिंह सरकारिया, सुखजिंदर सिंह रंधावा और चरणजीत सिंह चन्नी और लगभग 24 विधायकों ने मंगलवार को यहां बाजवा के आवास पर मुलाकात की। बाजवा ने कहा कि वे कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से मुलाकात करने और राज्य की राजनीतिक स्थिति से उन्हें अवगत कराने के लिए समय मांगेंगे। उन्होंने कहा कि कड़े कदम उठाने की जरूरत है और अगर मुख्यमंत्री को बदलने की जरूरत है, तो यह किया जाना चाहिए। बैठक के बाद, चन्नी ने मीडिया से कहा कि पार्टी के कई विधायक और मंत्री मंगलवार को

यहां एकत्रित हुए और उन वादों को लेकर चिंता व्यक्त की, जिन्हें पूरा नहीं किया गया है।

इन वादों में 2015 में धार्मिक ग्रंथ की बेअदबी के मामलों में न्याय में देरी, मादक पदार्थ रैकेट में शामिल बड़े लोगों को पकड़ना और बिजली खरीद समझौतों को रद्द करना शामिल है। उन्होंने कहा कि बाजवा, सरकारिया, रंधावा और पंजाब कांग्रेस महासचिव परगट सिंह पार्टी आलाकमान से मुलाकात करेंगे। ये पांचों अमरिंदर सिंह के विरोधी माने जाते हैं। यह बैठक पंजाब कांग्रेस प्रमुख नवजोत सिंह सिद्धू के दो सलाहकारों द्वारा कश्मीर और पाकिस्तान जैसे संवेदनशील मुद्दों पर विवादास्पद टिप्पणी करने के लिए की गई कड़ी आलोचना के बीच हुई। हालांकि, सिद्धू बैठक में मौजूद नहीं थे।

चन्नी ने कहा कि कई विधायक 2017 के विधानसभा चुनावों से पहले कांग्रेस द्वारा किए गए उन वादों को लेकर चिंतित हैं जिन्हें अभी तक पूरा नहीं किया गया है। चन्नी ने कहा, हमारे मुद्दे हल नहीं हो रहे हैं। हमें अब विश्वास नहीं है कि इन मुद्दों का समाधान किया जायेगा। उन्होंने कहा कि कोटकपूरा पुलिस गोलीबारी की घटना में एसआईटी द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल और शिरोमणि अकाली दल (शिअद) प्रमुख सुखबीर सिंह बादल से पूछताछ के बाद कुछ नहीं हुआ। चन्नी ने कहा, आज स्थिति ऐसी है कि मुख्यमंत्री (अमरिंदर सिंह) के साथ हमारे मुद्दों का समाधान नहीं हो रहा है और इसलिए हम पार्टी आलाकमान से मिलने जा रहे हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या मुख्यमंत्री को हटाने का प्रयास किया जा रहा है, बाजवा ने कहा कि यह प्रयास नहीं बल्कि लोगों की मांग है। मुख्यमंत्री के नए चेहरे पर एक सवाल के जवाब में बाजवा ने कहा कि फैसला पार्टी आलाकमान द्वारा लिया जाएगा। उन्होंने दावा किया कि पंजाब में एक धारणा बन गई है कि अमरिंदर सिंह और शिरोमणि अकाली दल की एक-दूसरे के साथ मिलीभगत है और इसने कांग्रेस की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाई है। कैबिनेट में संभावित फेरबदल के सवाल पर रंधावा ने कहा कि उन्हें किसी पद का लालच नहीं हैं और केवल चुनाव से पहले लोगों से किए गए वादों को पूरा करना चाहते हैं।

स्किन-टू-स्किन केसः ...तब तो दस्ताना पहनकर लड़कियों को छेड़ने वालों को नहीं मिलेगी सजा, एससी में बोले अटॉर्नी जनरल

नई दिल्ली (एजेंसी)। अटॉर्नी जनरल केके वेणुगोपाल ने मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट से बंबई हाईकोर्ट के उस विवादास्पद फैसले को पलटने का आग्रह किया, जिसमें कहा गया था कि आरोपी और बच्चा, दोनों के बीच सीधा त्वचा से त्वचा संपर्क नहीं हुआ है तो पॉक्सो के तहत यौन उत्पीड़न का अपराध नहीं होगा। जस्टिस यूयू ललित और जस्टिस अजय रस्तोगी की पीठ के समक्ष इस फैसले को एक खतरनाक और अपमानजनक मिसाल बताते हुए, अटॉर्नी जनरल ने कहा कि फैसले का मतलब यह होगा कि एक व्यक्ति जो सर्जिकल दस्ताने पहनकर एक बच्चे का यौन शोषण करता है, उसे बरी कर दिया जाएगा।

उच्च न्यायालय (नागपुर पीठ) ने एक आरोपी को यह कहते हुए बरी कर दिया था कि एक नाबालिग लड़की के स्तनों को उसके कपड़ों के ऊपर से टटोलने पर पोक्सो की धारा 8 के तहत यौन उत्पीड़न का

अपराध नहीं होगा। यह मानते हुए कि धारा 8 पोक्सो के तहत अपराध को आकर्षित करने के लिए त्वचा से त्वचा संपर्क होना चाहिए, उच्च न्यायालय ने माना कि विचाराधीन कृत्य केवल धारा 354 आईपीसी के तहत छेड़छाड़ के एक कमतर अपराध के समान होगी। केंद्र सरकार की अपील पर इस फैसले के संचालन पर कोर्ट ने रोक लगा दी थी। पीठ ने कहा कि नोटिस के बावजूद आरोपी के लिए कोई प्रतिनिधित्व पेश नहीं हुआ। कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट लीगल सर्विस कमेटी से कहा कि अभियुक्तों के लिए एडवोकेट-आन-रिकॉर्ड के साथ दो वरिष्ठ अधिवक्ता उपलब्ध करवाए। मामलों की अंतिम सुनवाई 14 सितंबर को होगी।

सिद्धू के सलाहकारों के बयान पर नड्डा ने सोनिया को घेरा, कहा- कश्मीर-पाक पर आपकी भी वही सोच

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कश्मीर और पाकिस्तान के संबंध में पंजाब के कांग्रेस नेताओं द्वारा दिए गए विवादित बयानों के लिए उन्हें आड़े हाथों लिया है। इसके साथ ही भाजपा अध्यक्ष ने कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व से इस मामले में अपना रुख स्पष्ट करने को कहा । नड्डा ने कहा कि यदि कांग्रेस ऐसा नहीं करती है तो उसकी चुप्पी को कांग्रेस नेताओं के बयान का समर्थन माना जाएगा। नड्डा ने एक ट्वीट में कहा कि पंजाब कांग्रेस के उन नेताओं का ताजा बयान जिन्हें राज्य के शीर्ष नेतृत्व के साथ ही दिल्ली में पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का संरक्षण है, निंदनीय है। वह लगातार गैर जिम्मेदाराना बयान दे रहे हैं और यह राष्ट्रीय सुरक्षा पर गहरा असर डालने वाला है। उल्लेखनीय है कि पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू के सलाहकार मालविंदर सिंह माली ने कथित तौर पर दावा किया था। कि कश्मीर, कश्मीरी लोगों का देश है जबकि उनके एक अन्य सलाहकार प्यारे लाल गर्ग ने पाकिस्तान की आलोचना करने के लिए पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह की निंदा की है।

तालिबान नेता मुल्ला बरादर से काबुल में मिले सीआईए डायरेक्टर, गुपचुप डील करने में जुटा यूएस

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए के डायरेक्टर विलियम जे बर्न्स ने 23 अगस्त को तालिबान ने वरिष्ठ नेता मुल्ला गनी बरादर से अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में मुलाकात की है। अमेरिकी अधिकारियों ने नाम न छापने की शर्त पर वॉशिंगटन पोस्ट को इस बात की जानकारी दी है। ऐसे वक्त में जब अमेरिका, अफगानिस्तान से लोगों को निकाल रहा है और अमेरिकी राष्ट्रपति ने इस रेस्क्यू मिशन को सबसे बड़ा और सबसे कठिन बताया है। ऐसे में टॉप अमेरिकी जासूस को काबुल भेजने के फैसले को लेकर कई तरह की बातें की जा रही है। अमेरिका ने 31 अगस्त तक अफगानिस्तान से पूरी तरह से निकलने की बात की थी। लेकिन अमेरिका अब डेडलाइन को मिस करता हुआ दिख रहा है। कई यूरोपीय देशों ने भी अमेरिका से अपने देशों के नागरिक को अफगानिस्तान से निकालने की अपील की है। ब्रिटेन और फ्रांस जैसे देशों ने कहा है कि उन्हें लोगों को अफगानिस्तान से बाहर निकालने के लिए और समय की ज़रूरत है। लेकिन तालिबान 31

अगस्त की तारीख की जिद पर अड़ा हुआ है। तालिबान ने कहा है कि अमेरिका अगर 31 अगस्त के डेडलाइन को पार करता है तो इसके परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। ऐसे में कई एक्सपर्ट्स और एनालिस्ट्स बता रहे हैं कि बर्न्स 31 अगस्त की डेडलाइन और तालिबान सरकार के गठन को लेकर बातचीत करने को बरादर के पास पहुंचे हैं।

यह दिलचस्प है कि मुल्ला गनी बरादर को अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए और पाकिस्तान ने साल 2010 में एक ऑपरेशन में गिरफ्तार किया था। इसके बाद बरादर 8 साल तक पाकिस्तान की जेल में रहे। 2018 में अमेरिकी दबाव के बाद पाकिस्तान ने उसे रिहा कर दिया। फिर बरादर को कतर स्थानांतरित कर दिया गया जहां बरादर दोहा में तालिबान के राजनीतिक कार्यालय के प्रमुख नियुक्त किए गए।

यूएनएचआरसी में भारत ने कहा-

उम्मीद है कि अफगानिस्तान की स्थिति पड़ोसियों के लिए चुनौती नहीं बनेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने मंगलवार को कहा कि अफगानिस्तान की मौजूदा स्थिति उसके लिए गंभीर चिंता का विषय है और उसे उम्मीद है कि यह पड़ोसियों के लिए चुनौती नहीं बनेगी। भारत ने यह भी कहा कि लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकवादी समूह द्वारा अपनी गतिविधियों के लिए देश की भूमि का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। अफगानिस्तान की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी) के एक विशेष सत्र को संबोधित करते हुए भारतीय राजदूत इंद्र मणि पांडेय

ने कहा कि अफगानिस्तान में एक ठगंभीरठ मानवीय संकट उभर कर सामने आ रहा है। हर कोई अफगान लोगों के मौलिक अधिकारों के बढ़ते उल्लंघन को लेकर चिंतित है।उन्होंने कहा कि भारत को उम्मीद है कि वहां की स्थिति जल्द ही स्थिर होगी और संबंधित पक्ष मानवीय और सुरक्षा मुद्दों का समाधान निकालेंगे। उन्होंने कहा, ठहमें यह भी उम्मीद है कि एक समावेशी और व्यापक आधार वाली व्यवस्था होगी जो अफगान समाज के सभी तबकों का प्रतिनिधित्व करती है। अफगान महिलाओं की आवाज, अफगान बच्चों की आकांक्षाओं और अल्पसंख्यकों के अधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि व्यापक आधार वाले प्रतिनिधित्व से व्यवस्था को अधिक स्वीकार्यता और वैधता हासिल करने में सहायता मिलेगी।जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि पांडेय ने कहा कि अफगानिस्तान में स्थिरता से क्षेत्र की शांति और सुरक्षा जुड़ी है।

तालिबान ने चेताया- अफगानों को बाहर ले जाना बंद करे अमेरिका

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद अमेरिका लगातार अपने अधिकारियों और नागरिकों को संकटग्रस्त देश से निकालने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन चला रहा है। काबुल पर कब्जे के बाद से ही शहर में भगदड़ जैसी स्थिति बन चुकी है। लोग देश से बाहर निकलने के लिए काबुल एयरपोर्ट की तरफ भाग रहे हैं, जो कि फिलहाल अमेरिकी सैनिकों के कंट्रोल में है। इस क्रम में अफगानिस्तान के कई नागरिक भी अमेरिका के लिए उड़ान भर रहे हैं, जो कि तालिबान को पसंद नहीं आया है। आतंकी संगठन के द्वारा अमेरिका चेतावनी जारी की गई है। टोलोन्यूज के मुताबिक, तालिबान के प्रवक्ता जबीहुल्ला मुजाहिद का कहना है कि अमेरिका को अफगानिस्तान के नागरिकों को देश छोड़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। उनका यह भी कहना है कि तालिबान पंजशीर में शांति से समस्या का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

अमेरिका के 31 अगस्त तक अफगानिस्तान छोड़ने की संभावना बेहद कम है। तालिबान ने अमेरिका को तय समयसीमा में अफगानिस्तान छोड़ने का अल्टीमेटम दिया है। इस पर अमेरिका की खुफिया समिति के अध्यक्ष एडम शिफ ने कहा, 31 अगस्त तक अफगानिस्तान से पूरी तरह वापसी की कम संभावना है। अभी भी विशेष आप्रवासी वीजा आवेदक वाले अमेरिकियों सुरक्षित निकालने की आवश्यकता है। अन्य लोगों में अफगान प्रेस के सदस्य, नागरिक समाज के नेता, महिला नेता है। मेरे लिए यह कल्पना करना मुश्किल है कि यह सब महीने के अंत पूरा किया जा सकता है। शिफ ने कहा, हजारों अमेरिकी नागरिक, अफगान दुभाषिये और उनके परिवार हैं को अभी भी काबुल से निकाला जाना बाकी है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) जेक सुलिवान ने कहा, अमेरिका राजनीतिक एवं सुरक्षा माध्यमों से प्रतिदिन तालिबान से बात कर रहा है। हम अमेरिकी नागरिकों, अन्य देशों के नागरिकों को हवाईअड्डे तक सुरक्षित पहुंचाना सुनिश्चित करने सहित सभी पहलुओं पर तालिबान के साथ विचार-विमर्श कर रहे हैं। एक सवाल के जवाब में एनएसए ने कहा, अमेरिका तालिबान पर भरोसा नहीं करता है।

कंफ्यूजन में गई दानिश की जान, अफगान मेजर जनरल ने फोटो जर्नलिस्ट की मौत पर किया यह दावा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबान से लड़ाई को कवर करते हुए रॉयटर्स के फोटोजर्नलिस्ट दानिश सिद्दिकी की मौत हो गई थी। उनकी मौत को लेकर अलग-अलग अनुमान लगाए जा चुके हैं। अब एक नए दावे में कहा गया है कि लड़ाई से पीछे हटने के दौरान हुए कंफ्यूजन में दानिश सिद्दिकी की मौत हुई। रॉयटर्स ने एक टॉप अफगान अफसर के हवाले से यह दावा किया है। मेजर जनरल हबीतुल्लाह अलीजाई अफगानिस्तान की स्पेशल ऑपरेशन कोर के कमांडर थे।

उनके नेतृत्व में ही स्पिन बोल्डक में मिशन को अंजाम दिया जा रहा था। मेजर अलीजाई ने रॉयटर्स को बताया कि जबर्दस्त

फायरिंग के बीच स्पिन बोल्डक से उनके सैनिक वापस लौट रहे थे। इस दौरान दानिश सिद्दिकी और दो अन्य कमांडो पीछे रह गए। सभी को लग रहा था कि यह दोनों वापस लौटती फौज के साथ हैं। इसी कंफ्यूजन ने दानिश की जान ले ली। चार अन्य सिपाहियों ने भी मेजर जनरल हबीतुल्लाह के दावे से सहमति जताई है।

मेजर जनरल हबीतुल्लाह ने बताया कि जब फौज वापस लौट रही थी तो दानिश और उनके साथ के कमांडो हमले का शिकार हुए। पहले इनके वाहन पर रॉकेट से हमला हुआ। इस हमले में दानिश घायल हो गए और उन्हें नजदीकी मस्जिद में इलाज के लिए ले जाया गया। लेकिन यहां पर उनकी हत्या कर दी गई। गौरतलब है कि 13 जुलाई को हुए एक हमले में दानिश बाल-बाल बच गए थे। लेकिन वह फिर भी पीछे नहीं हटे और युद्ध कवर करते रहे। गौरतलब है कि दानिश की मौत कैसे हुए यह अभी भी पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो सका है। पहले यह कहा गया कि दानिश की मौत क्रॉस फायरिंग में हुई थी।

अखंड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं. UPHIN 2001/9025